फिटकड़ी गुण विधान

क० गणपतिसिंह वर्मा

फिटकड़ी गुण विधान

क० गणपतिसिंह वर्मा

रसायन फार्मेसी
देहली–११०००६

सम्पादक—
क० गणपतिसिंह वर्मा
आयुर्वेद वाचस्पति

□

संकलनकर्ता—
हकीम मौ० अब्दुल्ला

□

प्रकाशक—
रसायन फार्मेसी
३, दरियागंज, देहली-११०००६

□

छठी परिवर्द्धित आवृत्ति : १९७३

□

मूल्य : ३-००

□

मुद्रक—
स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस,
९१-नया बांस, देहली-११०००६

दो शब्द

समस्त संसार का पालन करने वाले उस विश्वम्भर ने दुनिया में किसी वस्तु को भी व्यर्थ उत्पन्न नहीं किया। उसी लीलामय भगवान की पैदा की हुई वस्तुओं से "फिटकड़ी" भी एक है। चिरकाल से मुझे एक ऐसी पुस्तक लिखने का शौक था, जिससे जनसाधारण तक भी लाभ उठा सकें। यद्यपि इस विषय पर और भी बीसियों पुस्तकें मिलेंगी, किन्तु उनसे सर्वसाधारण लाभान्वित नहीं हो सकते। कारण कस्तूरी, मोती, अम्बर आदि मूल्यवान औषधियों का खरीदना तो धनाढ्य अमीरों का काम है, निर्धन, गरीब को क्या हासिल। ग्रामीण लोगों को तो आवश्यकता के समय सनाय मिलना भी कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव हो जाता है। फिर ऐसी औषधियां चाहे शत प्रतिशत ही सफल क्यों न हों किन्तु वह किस काम की। "हथियार वह जो समय पर चले" ऐसी आवश्यकताओं को दृष्टिगोचर रखते हुए मैंने इस पुस्तक की रचना की है। जिसमें नख से शिखा तक प्रायः होने वाले सभी रोगों की सफल चिकित्सा केवल फिटकड़ी से ही करना बताया है तथा भस्मानुरागियों और कौतुक करने वालों के लिए भी पर्याप्त लिखा गया है। इनमें से बहुत से प्रयोग तो हमारे अनुभूत हैं, और कुछेक बड़ी कठिनता से प्राप्त किये हुए हैं। सारांश पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है।

रोगों के चिन्ह ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिनको देखकर प्रत्येक वैद्य और अवैद्य भी तत्काल रोग का निदान करके उचिय नुस्खा तजवीज कर सकता है। पथ्य, भोजन भी प्रत्येक रोग के पृथक २ लिख दिये हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह पुस्तक हर समय प्रत्येक मनुष्य के लिए प्रत्येक रोग में काम आने वाली, अनाड़ियों को वैद्य बनाने वाली, हकीमों की फीस और पंसारियों की सभ्य लूट से बचाने वाली है।

जब किसी रोग का निदान या चिकित्सा करने की आवश्यकता हो तभी इस पुस्तक के पृष्ठों को खोलकर देखलें। मानों वैद्य और पंसारी बिना किसी फीस के आपके घर में रखे हुए हैं। अन्त में हमारा बल पूर्वक अनुरोध है कि 'फिटकड़ी' की एक शीशी और हमारी यह पुस्तक प्रत्येक घर में हर समय विद्यमान रखें। आशा है कि पाठक लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल बनायेंगे।

विनीत—
लेखक

विषय अनुक्रमणिका

फिटकड़ी के विभिन्न नाम

संस्कृत--स्फटिका, शुभ्रा, सौराष्ट्री । हिन्दी--फिटकरी, फिटकड़ी । बंगला--फिटकिरी । मराठी--तुरटी । गुजराती--फाटकी । अंग्रेजी--Alum (एलम) । लेटिन--Argilla vitriolutum (अर्जीला विट्रिओल्यूम)

फिटकड़ी का ज्ञान भारत वर्ष में बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है । उन दिनों में यह पानी साफ करने के लिये तथा कपड़े छापने के रंग को पक्का करने के लिये काम में ली जाती थी । यूरोप के अन्दर पहले सीरिया और स्मर्ना में इसके कारखाने खुले । इन कारखानों के खुलने से पहले पंजाब में फिटकड़ी बहुत बड़े परिमाण में तैयार होती थी । सुश्रुत संहिता, अमर कोष और रसार्णव ग्रन्थों में फिटकड़ी का नाम सौराष्ट्री और सुराष्ट्रजा लिखा हुआ है इससे मालूम होता है कि पंजाब में बनने से पहले यह वस्तु सौराष्ट्र में (कच्छ काठियावाड़) ईसा की पांचवी शताब्दी या उससे भी पहले बनती थी ।

फिटकड़ी की उत्पत्ति

फिटकरी एक प्रकार की खनिज मिट्टी से तैयार होती है । इस मिट्टी को देशी भाषा में रोल और अंग्रेजी भाषा में एलम सेल (Alum Shale) कहते हैं । इस मिट्टी में लगभग ७½ प्रतिशत गंधक, एल्युमिना, सिकता और कोयले के समान द्रव्य रहते हैं । इस मिट्टी को भट्टी में जलाया जाता है । एक फुट का थर झाऊ कि लकड़ी के टुकड़ों का बिछाया जाता है और उसके ऊपर एक फुट का थर रोल मिट्टी का बिछाया जाता है । इस प्रकार १५ थर झाऊ की लकड़ी के और १५ थर रोल मिट्टी के क्रमशः चुनकर ३० फुट ऊंचा टीला (टिब्बा) बनाया जाता है । उस टीले के ऊपर पहले जली हुई और १ वर्ष तक खुली पड़ी हुई मिट्टी बिछाकर जमा दी जाती है जिससे उस थर के अन्दर का गन्धक उड़ने न पावे । उसके पश्चात उसमें आग लगा दी जाती है । तैयार होने के बाद फिटकड़ी के अन्दर बची हुई गन्दगी को निकालने के लिये बड़े बड़े चार हौजों में क्रमशः एक के बाद एक में धोया जाता है तब स्वच्छ रंग की फिटकड़ी तैयार होती है ।

घिसें और उसी के समभाग फिटकड़ी सफेद की डली घिसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप सा बनालें। फिर उसे अंगुली पर लगाकर जिस ओर पीड़ा हो उस तरफ की आंख में डालदें और कुछ कनपटी पर लेप करदें। ईश्वर की कृपा से एक ही बार में आराम हो जायगा। तनिक विचार तो कीजिए-एक कठिनतम कष्ट-दायक रोग के लिए कितना सरल योग है। जिस दिन दवा का इस्तेमाल किया जावे उस दिन रोगी को ताजा जलेवियां अवश्य खिलायें और कुछ खाने को न दें। परमेश्वर न करे यदि पीड़ा फिर हो जावे तो यही क्रिया फिर करें।

प्रतिश्याय

नजला जुकाम—यदि मस्तिष्क का मल नासिका द्वारा बहे तो जुकाम और अन्दर सीने में गिरे तो नजला कहलाता है। नजला और जुकाम को लोग साधारण रोग समझते हैं और इनकी चिकित्सा की ओर ध्यान नहीं देते हालांकि हकीमों के कथनानुसार यह बीमारी समस्त रोगों की जननी है। इसके बिगड़ जाने से अनेक घातक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। कई लोगों को नजला, जुकाम की शिकायत सदैव ही बनी रहती है, उनके लिए यह प्रयोग विशेषतः अत्यन्त लाभदायक और अनेक बार का अनुभूत है। तैयार रखें। इससे नैत्यिक रोग वालों को एक ही सप्ताह में और नवीन रोग वालों को दो-तीन मात्रा से ही पूर्ण लाभ हो जाता है।

३—अक्सीर नजला, जुकाम

फिटकड़ी सफेद १२ ग्राम को एक दिन मदार के दूध में और एक दिन धतूरे के पत्तों के रस में खरल करके टिकिया बनालें। फिर शराव सम्पुट करके ८ किलो उपलों की आंच दे लें। शीतल होने पर टिकिया निकालकर सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—एक रत्ती हलवे या मक्खन में लपेट कर खिलावें।

नोट—(१) यह दवा तृतीयक ज्वर तथा पुरानी खांसी के लिए भी लाभदायक है। (२) इसकी रंगत सफेद होती है। यदि आक के दूध की न्यूनाधिकता से भस्म काले रंग की बने तो एक आंच उसी प्रकार और देलें, सफेद हो जागगी।

अपथ्य—खटाई और शीतल वस्तुओं से परहेज रखें।

भोजन—गेहूं की रोटी और मूंग की दाल।

अनुभव—हमने कई बार देखा है कि कुछेक लोगों के जुकाम को

केवल एक मात्रा से ही आराम हो जाता है । लोग इस योग की बहुत प्रशंसा करते हैं । वास्तव में अत्यन्त ही प्रभावक योग है ।

४–दिमाग की कमजोरी

मष्तिष्क की दुर्बलता से और भी अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, यथा शिरःशूल, चक्कर आना, पीनस, पागलपन आदि । यह आवश्यक है कि मस्तिष्क को बलवान बनाये रखा जाय । निम्न लिखित योग इसके लिए अत्यन्त ही गुणकारी सिद्ध हुआ है । इसके अतिरिक्त पुरुषों के प्रमेह और स्त्रियों के प्रदर में भी लाभदायक है ।

योग—शुक्ति २४ ग्राम, फिटकडी सफेद १२ ग्राम, कंमलगट्टा १२ ग्राम ।

विधि—सीपी (शुक्ति) को दरदरा कूटलें, कि छोटे २ दाने से बन जावें । फिर मिट्टी के कूजे में १२ ग्राम बिछाकर उस पर शेष दवाइयों को रखदें और उनके ऊपर, अवशेष १२ ग्राम शुक्ति डालकर बिछा दें और कूजे के मुंह पर कपरोटी करके सुखालें । फिर ६ किलो उपलों की अग्नि में फूंक लें । शीतल होने पर निकालकर सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें ।

मात्रा—१ ग्राम शहद में मिलाकर चटायें और ऊपर से दूध पिला दिया करें ।

५–उन्माद

यह रोग वास्तव में हृदय का है परन्तु दिमाग भी चूंकि हृदय के आधीन होता है इसलिए इसका बोझ अपने ऊपर ले लेता है ।

चिन्ह—इस रोग में कोई तो अपने आप को बादशाह समझने लगता है और कोई इतना डरता है कि उसे प्रत्येक वस्तु से भय लगता है । यहां तक कि कई पागल कहा करते हैं कि मैं कहीं जमीन में न धंस जाऊं, कहीं मुझ पर आस्मान न गिर पड़े इत्यादि २ । इसकी वास्तविक चिकित्सा तो रोगी सामने हो तभी की जा सकती है, तथापि यदि रोगी ३—४ वर्ष से बीमार हो और उसे रात भर जरा भी नींद न आती हो तो ऐसे पागलों के लिए हम नीचे एक सरल चुटकला निवेदन करते हैं, जिससे प्रायः ही रोगियों को आराम हो जाया करता है । यह प्रयोग सरल होने के अतिरिक्त तत्कालीन प्रभावक भी है, क्योंकि जो रोगी चिरकाल से नहीं सोया वह इस दवा के प्रभाव से ३—४ दिन में ही सोने लग जाता है और धीरे-धीरे उसका रोग निर्मूल हो जाता है ।

योग—फिटकड़ी सफेद सूक्ष्म पीसकर रखें और ३—३ ग्राम की ७

पुड़ियां बनालें। प्रतिदिन प्रातःकाल एक पुड़िया २५० ग्राम गाय के दही में मिला-कर पिलादें और १ घंटा बाद १२० ग्राम मक्खन अवश्य खिलादें। इसी प्रकार सात दिन में सातों पुड़ियां खिलादें और दही तथा मक्खन नियमानुसार प्रतिदिन सेवन कराते रहें। अवश्य आराम होगा।

अपथ्य—लहसुन, प्याज, बैंगन, परिश्रम और एकान्तवास।

भोजन—हल्का शीघ्र पचने वाला, खीर, मूंग की दाल, फुलका, हरी तरकारियां आदि।

६–वहम (भ्रम)

यह रोग भी पागलपन का एक अंग है। वहम (भ्रम) दूर करने के लिये भुनी हुई फिटकड़ी एक ग्राम प्रातः एक ग्राम सायंकाल गरम दूध के साथ सेवन करायें और बातों-बातों में उसके वहम को दूर करने का प्रयत्न करें।

७–स्मृति भ्रंश

यह वह रोग है जिसमें रोगी को बात याद नहीं रहती बल्कि तत्क्षण ही भूल जाता है। यह रोग प्रायः मस्तिष्क की दुर्बलता से उत्पन्न होता है या दिमाग में कफजनित आर्द्रता उत्पन्न होकर भी हो जाता है, इसके लिए भी फिटकड़ी उत्तम वस्तु है।

योग—१५ ग्राम फिटकड़ी को दस घण्टे ब्राह्मी के रस में घोटकर टिकिया बनालें और सूखने पर शराव सम्पुट करके दस किलो उपलों की अग्नि दे लें।

मात्रा—दो रत्ती प्रातः सायं दूध से खिलाया करें।

८–चुटकला

केवल भुनी हुई फिटकड़ी १ ग्राम प्रातः-सायं दूध से खिलानो भी मुफीद है।

सरसाम

सरसाम का अर्थ है, शिर का वरम। इसमें दिमाग के परदे या दिमाग को शोथ होकर रोगी को मूर्छा हो जाती है। यह सन्निपात का भेद हैं। जिसकी विवेचना करने का यहां स्थान नहीं है। केवल दो उत्तमोत्तम योग लिख दिये जाते हैं जो कि इस रोग के लिए निश्चित किये गये हैं।

९–अक्सीर सरसाम (फकीरी योग)

योग—फिटकड़ी ३० ग्राम, सांठी चावल ३० ग्राम, बीरबहुटी २५० ग्राम।

विधि—प्रथम फिटकड़ी और चावलों को बारीक कूटकर एक बड़ी बोतल में डालें और उसके ऊपर बीरबहुटी डालकर धूप में रख दें। जब खुश्क हो जावें तब उनको निकालकर फिटकड़ी ४२ ग्राम, साठी चावल ४२ ग्राम सूक्ष्म पीसकर और मिलादें। बस दवा तैयार है। मात्रा डेढ ग्राम खांड में मिलाकर खिलावें और बच्चे को उसकी आयु भेद से न्यून मात्रा दें। यह दवा मोतीझरा, शीतला, खसरा आदि रोगों में अत्यधिक गुणकारी सिद्ध हुई है। विशेषकर जबकि दाने अन्दर चले गये हों।

१०–प्रयोग नं० २

सन्निपात के लिए यह प्रयोग भी अजीब लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसमें से थोड़ी दवा लेकर नस्य की भांति सुंघावें। ईश्वर ने चाहा तो तुरन्त होश आ जावेगा। यह वर्किया हरताल है, जो पुस्तक के अन्त में भस्मों के प्रकरण में लिखी गई है, वहां देखलें।

नेत्र रोग

फिटकड़ी नेत्र रोगों के लिये प्रसिद्ध वस्तु है । जिन-जिन रोगों में फिटकडी गुणकारी है वह रोग चिकित्सा सहित निम्नलिखित हैं ।

नेत्राभिष्यन्द

आंखें दुखना—इसके चिन्हों से सभी परिचित हैं, अतः इसके कुछ विशेषातिविशेष योग लिखते हैं । इनमें से कुछेक तो ऐसे प्रभावोत्पादक हैं कि हथेली पर सरसों ऊग आने की उक्ति को चरितार्थ करते हैं ।

फिटकड़ी के मिश्रण

यद्यपि अकेली फिटकड़ी ही अनन्त रोगों के लिए अत्यधिक लाभकारी है तथापि यदि इसमें कुछेक अन्य औषधियां सम्मिलित करली जावें तो बस ! सोने पर सुहागा है । हम यहां वह अनुभूत योग लिखते हैं, जो दुःखती आंखों के लिए अतीव गुणकारी है । फिर फिटकड़ी के अमिश्रित योग निवेदन करेंगे ।

११—काली गोलियाँ

यह गोलियां देहली के प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी दवाखाना, हमदर्द दवाखाना में 'हब्बेस्याह चश्म' के नाम से बिकती हैं । स्व० हकीम अजमलखां के चिकित्सालय में भी यही गोलियां बरती जाती थीं । अत्यन्त गुणकारी गोलियां हैं ।

योग—रसोंत ५४ ग्राम, फिटकड़ी भुनी ३० ग्राम, अफीम १४ ग्राम, नीम के पत्ते ५, केशर विशुद्ध ४ रत्ती । सबको गुलाब जल में खरल करके गोलियां बनालें और आवश्यकता के समय पोस्त के पानी में घिसकर आंखों के पपोटों पर दिन में तीन बार प्रातः और सायंकाल लगाया करें । दरद, टीस और लाली को तत्काल बन्द कर देगी ।

१२ वर्तिका

यह वही वर्तिका है जिसे प्रायः हमारे नेत्र चिकित्सक हकीम इस्तेमाल

किया करते हैं और किसी को बताया नहीं करते, वह आज हम मुफ्त भेंट कर रहे हैं। इससे पीड़ा में तुरन्त चैन पड़ जाता है तथा इसके अतिरिक्त और भी अनेक रोगों के लिए लाभदायक है।

योग—फिटकड़ी भुनी ४२ ग्राम, हल्दी सूक्ष्म पिसी हुई ७ ग्राम, अफीम ५ ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों को २५० ग्राम कागजी नींबूओं के रस में मिलाकर लोहे की कढाई में डालें और मन्द-मन्द अग्नि पर पकावें। जब द्रव्य खूब गाढा हो जाय तो नीचे उतार लें और शीतल होने पर लम्बी-लम्बी बत्तियां बनालें और आवश्यकता के समय पानी में घिसकर कुछ आंखों में लगावें तथा कुछ ऊपर लेप करदें।

१३—आश्चर्यजनक दवा

फिटकड़ी भुनी हुई ६ ग्राम, अफीम ६ ग्राम बारीक करके लोहे की कडछी में डालकर कोयलों की आग पर रखें और उस पर तत्काल ही नीम के पत्तों का रस इतना डालें कि दवाइयां उसमें डूब जायें (अनुमानतः १ औंस से कम न हों)। जब जोश आने लगे तो बांस की लकड़ी से चलाते रहें, जब गाढ़ा हो जावे तब उतार कर चीनी के पात्र में सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय शलाका द्वारा नेत्रों में लगाकर रोगी को हवा के रुख चलावें तथा रोगी को कहदें कि आंखें बन्द न करे। यदि हवा न चलती हो तो पंखे से हवा करें। आप देखेंगे कि इसके दो दो-तीन वार लगाने से ही बिगड़ी हुई आंखे भी ठीक हो जावेंगी

१४—सरल लेप

फिटकड़ी भुनी हुई दो ग्रेन, अफीम एक ग्रेन, नीम के पत्ते नग ५ पीसकर थोड़ा सा पानी मिलाकर रात्रि के समय नेत्रों पर लेप करें। प्रातःकाल तक आंखें स्वस्थ हो जावेंगी।

१५—नेत्र दीपक अर्क

यह अर्क यद्यपि देशी दवाइयों से बनता है तथापि कास्टिक लोशन (Castic Lotion) और जिंकलोशन (Zinc Lotion) आदि से किसी प्रकार भी कम नहीं, बल्कि उत्तम है।

प्रयोग—फिटकड़ी ८ ग्रेन, नीलाथोथा २ ग्रेन, गुलाबजल या वर्षा के ५० मि० ली० जल में घोलकर शीशी में डाल रखें और आवश्यकता के समय

२-२ बून्दें नेत्रों में डाला करें। नेत्र पीड़ा, धुन्ध आदि को दूर करने वाली दवा है।

पित्तजनित नेत्र पीड़ा

इससे पूर्व जो प्रयोग लिखे गये हैं वे भी पित्तजनित नेत्राभिष्यन्द आदि के लिए लाभदायक हैं, तथापि हम यहां अन्य कुछेक ऐसे प्रयोग भी लिख देते हैं जो गरमी से दुखती हुई आंखों के लिए विशेष लाभदायक हैं।

१६–पोटली

यह पोटली आंखों की समस्त व्याधियों के लिए, जो गर्मी के कारण से उत्पन्न होती हों–अत्यन्त लाभदायक है और नेत्रों की लाली के लिये भी लाभप्रद है।

योग—इमली के पत्ते लेकर खरल में पीसकर उसमें थोड़ी सी फिटकड़ी और अफीम मिलाकर नियमानुसार पोटली बनालें। फिर एक प्याले मे थोड़ा सा पानी डालकर उसमें पोटली डुवा-डुवा कर आंखों पर फिराते रहें। यदि कोई पानी की बूंद आंख में चली जाय तो कोई हानि नहीं अपितु लाभ ही होता है।

१७-एक और योग– फिटकड़ी भुनी हुई एक ग्राम, अफीम दो ग्रेन दोनों को सूक्ष्म पीसकर ४ ग्राम घृतकुमारी के गूदे में मिलाकर पोटली बनालें और आंखों पर फिरावें।

१८–अमिश्रित योग

फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर और मलाई में मिलाकर नेत्रों पर बांधें ईश्वर ने चाहा तो अवश्य आराम होगा।

१९--द्वितीय योग—फिटकड़ी ३ ग्राम लेकर २४ ग्राम विशुद्ध मधु में खूब मिलायें और दुखती हुई आंखों में २—२ सलाई डाला करें।

२०–नेत्राभिष्यन्द का आश्चर्यजनक योग

दुखती हुई आंखों को किसी प्रकार भी आराम न आता हो तो तनिक इस योग को बनाकर इस्तेमाल करायें अवश्य ही आराम होगा।

योग—फिटकड़ी सफेद ६ ग्राम को एक लोहे की कड़छी में डालकर आग पर रखें। जब फिटकड़ी पिघल जाये तब घृत कुमारी का थोड़ा-थोड़ा रस डालते जायें। जब रस सूख जाये तब और डाल दिया करें। इसी प्रकार पूरा

३६ ग्राम रस प्रविष्ट करदें। फिर उतार कर सूक्ष्म पीसलें और आवश्यकता के समय नेत्रों में डाला करें।

२१–चमत्कारी योग

पाठक वृन्द ! मैंने इस निम्नलिखित योग से उत्तम तत्कालीन प्रभावक और कोई योग नहीं देखा । यदि इसे करामात या चमत्कार कहदें तो अतिशयोक्ति नहीं। ईश्वर की कृपा से एक घण्टा में ही नेत्रों की पीड़ा और लालिमा आदि दूर होकर आराम आ जाता है।

मैंने इस योग की फीस विज्ञापन में १००-०० रखी थी किन्तु आज आपको मुफ्त भेंट किया जा रहा है। यह मेरे औषधालय का दर्प्य योग है, जिससे हजारों रोगी स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं। मैं इसको बिना मूल्य लिए ही वितीर्ण करता हूं। आप भी इसे तैयार करके मुफ्त वांटें और पुण्य के भागी बनें।

योग—फिटकड़ी कच्ची ३ ग्राम, विशुद्ध रसौंत, मिश्री १८-१८ ग्राम, अफीम १० ग्रेन, नीलाथोथा ६ ग्रेन।

विधि—रसौत और नीलाथोथा को ३० ग्राम गुलाबजल में हल करें और अन्य औषधियों को पृथक पीसकर इसी रसौत वाले पानी में मिलादें। फिर मलमल के साफ कपड़े से छानकर शीशी में सुरक्षित रखें।

प्रयोग बिधि - आवश्यकता के समय पिचकारी (Droper) द्वारा दो दो बून्द नेत्रों में डालें। डालते ही तत्क्षण नेत्रों से पानी बहना आरम्भ होगा, १० मिनट के बाद फिर डालें, अब पहले की अपेक्षा पानी कम निकलेगा। इसी प्रकार दस दस मिनट के अन्तर से डालते जावें । ४–५ बार डालना पर्याप्त है। पीड़ा, लाली दूर होकर लाभ होगा।

एक लाभदायक बात

यदि आप ऐसे गांव में रहते हैं जहां पिचकारी नहीं मिल सकतीं तो फिर इस दवा को तैयार करने के दो तरीके हैं। प्रथम तो यह कि गुलाब जल ३० ग्राम की अपेक्षा ६ ग्राम डालकर किसी खुले मुख की पेचदार शीशी में रखें और सलाई से थोड़ा थोड़ा २ आंखों में डाला करें, इससे सरलता हो जावेगी।

द्वितीय ३० ग्राम की अपेक्षा ६० ग्राम गुलाब जल या पानी में मिलालें ताकि हानिरहित हो जाये। अब इसको किसी शीशी में डालकर रख छोडें और आवश्यकता के समय शीशी से ही ३-४ बून्दें आंखों में डालें।

इस योग के सम्बन्ध में हमारे पास बेशुमार प्रमाण पत्र आये हैं और सबका एक स्वर से यही निर्णय है कि इससे बढकर और कोई लाभदायक योग नहीं देखा गया।

अमिश्रित योग

दुखती हुई आंखों के उत्तमोत्तम मिश्रित योग तो अंकित किये जा चुके हैं। यदि आपको अमिश्रित अर्थात एक हीं औषधि के इस्तेमाल करने का शौक है, या आप ऐसे स्थान पर हैं, जहां आप ऊपरोक्त मिश्रित योग तैयार नहीं कर सकते तो निम्नलिखित योगों से काम लें। ईश्वर ने चाहा तो यह भी समय पर पूरा काम देंगे। वास्तव में फिटकड़ी अकेली भी अत्यन्त लाभदायक वस्तु है।

२२–देशी जिंकलोशन

हमारे भारतीय भाईयों को अंग्रेजी फैशन ने ऐसा मतवाला और निर्बुद्धि किया है कि अपने देश की चाल ढाल, भाषा और वेश भूषा आदि को बिल्कुल ही पसन्द नहीं करते। जहां हमारी एक पैसे की देशी चीज काम देदे वहां विलायती चीज पर एक रुपया खर्च कर देना अपनी शान समझते हैं। इस लिए कवि ने क्या अच्छा कहा है :—

हिन्द की फैयाजियों का, क्यों न हो आलम में शोर।
दे दिये जापान को, दो साल में सतरह करोड़॥

कहने का तात्पर्य यह है कि फिटकड़ी से जिंकलोशन का काम लिया जा सकता है, बशर्ते कि कोई विचार पूर्वक देखे। इसको कई तरीकों से तैयार किया जाता है।

प्रथम—फिटकड़ी भुनी हुई को सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और जब देशी जिंकलोशन बनाना इच्छित हो तब इसमें से एक ग्राम लेकर १२० ग्राम गुलाब जल या वर्षा के जल में मिलाकर शीशी में दृढ कार्क लगाकर रखें, बस दवा तैयार है। दिन में २-३ बार नेत्रों में डाला करें। पीडा और लाली के लिए लाभदायक है।

(२३) द्वितीय योग—फिटकड़ी कच्ची १ ग्रेन, १२ ग्राम गुलाब जल या वर्षा जल में मिलादें, तत्काल धुल जावेगी। प्रातः सायं दो दो तीन तीन बून्द डाला करें।

(२४) तृतीय योग—फिटकड़ी भुनी हुई को सूक्ष्म पीसलें और उसमें से १ ग्राम लेकर २४ ग्राम विशुद्ध मधु में खूब मिलायें और दुखती हुई आंखों में दो दो सलाई डाला करें।

(२५) चतुर्थ योग—फिटकड़ी सफेद को सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और दुखती हुई आंखों में ३–३ सलाई डालें, तत्काल चैन पड़ जायेगा। देखिये! कितना सरल योग है।

नोट—शेष प्रयोग जो नेत्राभिष्यन्द के लिए लाभदायक हैं, वे बालकों के रोगों के प्रकरण में लिखे जायेंगे। इसके अतिरिक्त प्रयोग नं० ३२ और ३३ भी लाभदायक हैं।

फुल्ली व जाला

नेत्र बिन्दु पर सफेद चिन्ह पड़ जाने को फोला और हल्की हल्की बादल की भांति सफैदी को जाला कहते हैं। बालक का फोला तो सरलता से काटा जा सकता है, किन्तु युवकों और वृद्धों का कठिनता से कटता है। निम्नोक्त प्रयोगों से फोला बहुत जल्दी दूर हो जाता है, बल्कि साधारण धुन्ध व जाला के लिये भी गुणकारी है।

२६–अक्सीर फोला सत्व

फिटकड़ी, सेंधा नमक, शोरा प्रत्येक २५–२५ ग्राम पीसकर दो प्यालों रखकर में सत्व उड़ालें। सत्व उड़ाने की विधि यह है कि एसे २ प्याले लें जिनमें पानी न लगा हो और उन दोनों के मुख मिल जावें। मुख पर कपरोंटी करके सुखालें और फिर चूल्हे पर रखकर नीचे मन्द मन्द अग्नि जलावें तथा ऊपर वाले प्याले पर खद्दर का मोटा कपड़ा ३–४ तह करके भिगोकर रखदें, जब सूख जाये तब फिर भिगो दिया करें। दो घन्टे आंच मन्द रखें फिर अधिक करते जावें। ५–६ घण्टे की आंच से सत्व उड़कर ऊपर प्याले में जा लगेगा। शीतल होने पर प्याले खोल कर सत्व को ऊपर से उतार कर, पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। कार्क मजबूत लगावें। आवश्यकता के समय नेत्रों में डाला करें। तेज अवश्य है किन्तु गुणों में बड़ा उम्दा है। सफेदी फूलकर ऊपर आ जाती है और कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो जाता है।

(जिससे बड़े फोले को भी आराम हो गया)

२७–द्वितीय योग—यह प्रयोग इस रोग के लिये अति प्रभावक सिद्ध हुआ है। इससे बड़े २ फोले, जो कि बहुत उभरे हुये होते हैं वह भी सरलता पूर्वक कट जाते हैं। आपने इससे पहिले अनेक प्रयोग बनाये होंगे, किन्तु ऐसा प्रयोग नहीं मिला होगा। इस प्रयोग को हमने अपनी प्रसिद्ध रचना "अनुभूत योग चिन्तामणी" में भी प्रकाशित किया है।

योग—फिटकड़ी सफेद, नौसादर, सोहागा, नीलाथोथा। चारों

दवाइयों को समभाग लेकर सूक्ष्म पीसकर दो कोरे प्यालों में (जिसे पानी न लगा हो) डालकर उपरोक्त विधि से फरांस की लकडी जलाकर सत्व उडालें और शीतल होने पर पीसकर शीशी में रखें, रात्रि को दो-दो सलाई नेत्रों में लगाया करें।

नोट—यह सत्व हमारे यहां बना बनाया हर समय तैयार मिलता है।

२८—नेत्र अक्सीर ताम्र भस्म

फिटकड़ी सफेद और समुद्र झाग समभाग लेकर खरल करें और फिर दो आतशी शीशीयों में भर तेजाब निकालने की विधि से तैल निकालें। विधि यह है कि दवा वाली शीशी के नीचे कोयले जलादें, दूसरी शीशी में तेल निकल आवेगा।

अब ताम्बे का चूर्ण एक चीनी के प्याले में डालकर उसके ऊपर फिटकड़ी वाला तेल इतना डालें कि बुरादा खूब अच्छी तरह तर हो जाये, फिर उसे ढक कर रखदें। पांच दिन में ताम्बा पड़ा २ ही भस्म बन जायगा। इसे पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और रात्रि के समय सहन हो सके ऐसी एक या दो सलाई डाला करें।

लाभ—जाला, फोला, धुन्ध, यहां तक कि प्रारंभिक मोतियाबिन्द में भी लाभदायक है।

नोट—आतशी शीशी को प्रथम कपरोटी करके सुखालें ताकि टूटे नहीं।

सरल प्रयोग

उपरोक्त प्रयोग फोले को दूर करने के लिए अत्युत्तम है किन्तु तनिक परिश्रम से बनते हैं। जो महाशय परिश्रम से घबराते हों या समय न मिलता हो तो वह निम्नलिखित प्रयोगों से काम लें।

(२९) चुटकला नं० १—फिटकड़ी सफेद, नौशादर, मिश्री समभाग लेकर बारीक पीसकर संभाल रखें और दो तीन सलाई आंखों में डाला करें। फोला और जाले के लिये मुफीद और लाभदायक दवा है।

(३०) चुटकला नं २—आवश्यकतानुसार फिटकड़ी लेकर स्त्री के दूध में तीन घंटा तक खरल करके बिलकुल सूख जाने पर शीशी में सुरक्षित रखें। यह भी फोले के लिये लाभकरी है।

(३१) चुटकला नं ३—एक ग्राम फिटकड़ी, ६ ग्राम उत्तम शहद के साथ खरल में सूक्ष्म पीसकर शीशी में संभालकर रखें और दिन में दो बार

इस्तेमाल किया करें । फोले को बहुत जल्द दूर करनेवाली दवा है। इसके अतिरिक्त योग नं० ४६, ४८, ५१, ५३, फोले को दूर करने में अकसीर हैं।

नेत्र स्राव

यदि नेत्रों से जल बहता रहता हो और किसी चीज पर दृष्टि न जमती हो तो निम्नलिखित औषधियों का इस्तेमाल करायें।

३२–सफेद चुटकी

नेत्रस्राव और नेत्राभिष्यन्द के लिए अत्युत्तम दवा

योग—लाल फिटकड़ी आवश्यकतानुसार लेकर उससे द्विगुण घृत मिलाकर अग्नि पर रखो, जब सफेद खील हो जाये तब घृत में से निकाललो और खूब दहकते हुए कोयलों में डाल दो। थोड़ी देर में बिलकुल काली कोयला सी बन जायेगी। उसको इसी प्रकार कोयलों में पड़ी रहने दो ताकि वह धूंवा और चिकनाहट आदि से रहित हो जाये। जब खूब अच्छी तरह से सफेद हो चुके तब उसे निकालकर राख साफ करके पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय इसमें से आधी रत्ती दवा चुटकी से नेत्रों में प्रातः सायं डाला करें। तीन चार बार के इस्तेमाल से आराम हो जायगा।

३३–पानी रोकने की बत्तियां

यह बतियां अनेक नेत्र रोगों में लाभदायक सिद्ध होती हैं, विशेषकर नेत्रस्राव के लिए अत्युत्तम हैं।

योग—फिटकड़ी सफेद आवश्यकतानुसार लेकर ऊपर से खट्टे अनार का इतना रस डालें कि वह डूब जाय, फिर नरम आंच दें ताकि रस प्रविष्ट होकर गोलियां बांधने योग्य बन जावे। बस जल्दी से निकालकर लम्बी २ बत्तियां बनालें।

विधि—बत्ती को पानी में घिसकर सलाई से लगावें। इसके अतिरिक्त योग नं० ४५, ४६, ४७, भी गुणकारी हैं।

३४–एलम लोशन

पाठकवृन्द ! यह वही लोशन है जिससे शफाखानों में रोगियों की आंखें धुलाई जाती हैं, क्योंकि इससे नेत्रों को तनिक भी हानि नहीं पहुंचती, बल्कि यदि आंखों में मैल आता हो तो वह भी तीन चार बार धोने से बन्द हो जाता है। दुखती आंखों को इस लोशन से अवश्य धोना चाहियें। लोशन बनाने

की विधि साधारण है, अर्थात् एक रत्ती कच्ची फिटकड़ी को २४ ग्राम पानी में घोललें, लोशन बन गया ।

कुकरे

यदि यह रोग बालकों को हो जावे तो 'रोहे' और बड़ों को हो तो 'कुकरे' के नाम से पुकारते हैं ।

चिन्ह—प्रायः आंखों की ऊपरी पलक में कभी दोनों पलकों के भीतरी भाग में छोटी २ गुलाबी रंग की फुन्सियां हो जाती हैं और शोथ हो जाता है । नेत्र लाल हो जाते हैं । पानी निकलता रहता है । यह रोग प्रायः बच्चों को अधिक होता है । हम यहां वही योग लिखते हैं जो बालकों के अतिरिक्त बड़ी आयु वालों के लिए भी लाभदायक सिद्ध होता है । शेष योग बालरोग प्रकरण में देखिए ।

(३५) प्रथम योग--सुहागा, फिटकड़ी प्रत्येक ६ ग्राम, शोरा ३ ग्राम सूक्ष्म पीसकर रखें और पलकों को उलटकर चुटकी से कुकरों पर डालें, किन्तु चुटकी एक रत्ती से अधिक न हो । बालकों के लिए इससे भी कम । बाद में आखें शीतल जल से धो डालें । रोहे टूट जायेंगे और आराम हो जायेगा । दवा तेज बहुत है ।

(३६) द्वितीय योग--फिटकड़ी, नीलाथोथा, कलमी शोरा प्रत्येक ३० ग्राम मिलाकर और सूक्ष्म पीसकर लोहे के बर्तन में डालकर अग्नि पर रखें । जब सब औषधियां पिघल जावें तब उसमें २ ग्राम कपूर मिलाकर सांचे में डालकर लम्बी २ बत्तियां बनालें । यह दवा कुकरों के लिए विशेष कर हित-कारी है । जब कुकरे पुराने हो गये हों तो पलकों को उलट कर इस दवा की बत्ती को कुकरों पर फेर दें । बहुत उम्दा योग है । यदि इस बत्ती में से ४ ग्रेन दवा ३० ग्राम गुलाब जल में घोलकर लोशन बनालें तो दुखती आंखों के लिये अत्युत्तम है ।

इसके अतिरिक्त

प्रयोग नं० ४६, ५०, ५३, ५४ भी अत्यन्त लाभदायक है । बनाकर परीक्षा कर देखें ।

३७—परबाल

आंखों में पलकों के नीचे बाल उत्पन्न हो जाने को पडबाल कहते हैं । इसके लिये भी योग नं० ३५ बहुत फायदा करता है । बालों को उखाड कर दवा को घिसने से अवश्य लाभ होगा ।

३८—परबालहर अंजन

आंख के अन्दर एक प्रकार का बाल ऊगता है, जिसको आंख का परबाल कहते हैं। इस रोग में ५० ग्राम फिटकरी लेकर मिट्टी के साफ बरतन में डालकर आंच पर रखें। जब फिटकरी पिघलकर पानी जैसी हो जाये तब उसमें बढिया सोना गेरु १५ ग्राम बारीक पीसकर मिलादें और लकडी की कलम से घोलकर एक जान करके आग पर से उतार लें और खरल में डालकर पीसलें फिर कपड़छान करके पुन: खरल में एक घंटा घुटाई करके शीशी में भरलें।

आंखों की पलकों के अन्दर जो बाल ऊगे हों उनको नोचने (चिमटी) से सावधानी से उखाडकर फिर एक मास तक प्रात: सायं इस परबालहर अंजन को लगाते रहने से फिर परबाल नहीं ऊगते। नेत्र स्वच्छ हो जाते हैं। यह एक चमत्कारिक औषधि है और इसका प्रयोग कभी व्यर्थ नहीं जाता।

३९—आंख में कोल

फुलाई हुई फिटकड़ी, फुलाया हुआ नीलाथोथा, कलमी शोरा प्रत्येक २०-२० ग्राम और कपूर ५ ग्राम लेकर सबको जुदा जुदा खरल करके कपड़-छान करलें। फिर गाय का स्वच्छ घृत २०० ग्राम, अरण्डी के तैल का निकाला हुआ काजल ८० ग्राम तथा ऊपरोक्त कपड छान दवा मिलाकर खूब खरल करें फिर डिबिया में भरकर रखलें। इस काजल को एक दिन छोड़कर एक दिन लगाते रहने से आंख में कील नहीं होने पाती और यदि हो गई हो तो उसका सब पानी झर झर कर निकल जाता है तथा दृष्टि का तेज बढ़ता है।

४०—नेत्र पीड़ा

नीबू के रस के साथ फुलाई हुई फिटकड़ी का लेप करने से आंख की पीड़ा मिटती है। इसी प्रकार चार ग्रेन फिटकड़ी को ३० ग्राम गुलाब जल में मिलाकर उसकी कुछ बूंदे आंखों में डालने से आंख की लाली और कीचड़ आने में लाभ होता है।

रतौंधा

इस रोग में रोगी को रात में नजर नहीं आता। प्राय: शीत वस्तुओं के अधिक सेवन से यह रोग अधिक होता है, इसलिये ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा शीत ऋतु में यह रोग अधिक होता है। निम्नलिखित योग इस रोग के लिए अधिक लाभदायक है।

४१–सरल चुटकला

इस योग से एक ही दिन में आराम हो जाता है। फिटकड़ी भुनी, तम्बाकू की नस्य समभाग मिलाकर सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और रात्रि को सोते समय दो तीन सलाई नेत्रों में डाला करें। बहुत ही गुणकारी है।

(४२) दूसरा चुटकला––फिटकड़ी भुनी व नोशादर समभाग पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और सोते समय आंखों में दो दो सलाई डाला करें। बहुत ही लाभकारी है।

बाह्यनी पलक

इस रोग में पलकों के किनारे शोथ युक्त होकर जख्मी हो जाते हैं। आंखें भद्दी मालूम होने लगती हैं। निम्नलिखित प्रयोग से यह रोग मिटकर पुनः बाल ऊग आते हैं। अद्वितीय योग है।

४३–विशेष योग

योग––फिटकड़ी २५ ग्राम, मक्खन १२० ग्राम। दोनों को लोहे के तवे पर डालें। जब जलकर फिटकड़ी की खील हो जाय तब उसमें ३ ग्राम अफीम भी डाल दें और तवे को नीचे उतार कर कांसी के बर्तन में दो घंटा खरल करें ताकि एक जान हो जावें, जितना बारीक किया जायगा उतना ही लाभदायक होगा। इसे प्रातः सायं सलाई से लगाते रहें। अत्यन्त लाभदायक दवा है। इससे फोला, जाला, धुंद आदि रोग भी दूर हो जाते हैं।

गोहांजनी

इसके नाम व चिन्ह से सब परिचित हैं अतः विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं। यह रोग आंखों से अधिक काम लेना, रक्त दोष, बदहजमी, जलवायु के दोष आदि से उत्पन्न होता है।

(४४) प्रथम योग––फिटकड़ी को घृतकुमारी के रस में घोटकर ऊपर लगादें, या इस दवा में डोरा भिगोकर दूसरी ओर के पांव के अंगूठे पर बांधें।

(४५) द्वितीय योग—फिटकड़ी कच्ची, पुरानी भीत से निकला हुआ कोयला समभाग पानी में घिसकर गुहांजनी पर दिन में तीन बार लगाया करें। अनेक बार का अनुभूत है।

४६–आंख पर चोट लगना

यदि आंख पर चोट लगे और जब पीड़ा तथा उष्मा कम हो जाये, शोथ

और नीला चिन्ह शेष रहे तब इसमें फिटकड़ी की पुल्टिस बहुत ही प्रभावक सिद्ध होती है। विधि यह है कि फिटकड़ी २ ग्राम का सूक्ष्म पिसा हुआ चूर्ण लेकर एक अण्डे की सफेदी के साथ खूब खरल करें, यहां तक कि खूब ही गाढ़ी हो जाये, फिर उस को मलमल या बारीक कपड़े के दो टुकड़ों के मध्य में रखकर आंख पर कुछ घण्टे बांध रखने से शोथ और पीड़ा दोनों दूर हो जाते हैं।

फिटकड़ी से बनने वाले सुरमे

फिटकड़ी द्वारा अनेक सुरमे तैयार होते हैं और लोग उनको बहुत महगे भाव से बेचते है। इनमें एक सुरमा ऐसा भी है जो ३) का १० ग्राम बिक रहा है।

४७—नेत्र रोगों के लिये सुरमा नं० १

यह सुरमा बहुत से नेत्र रोगों के लिए लाभदायक है। एक महाशय यही सुरमा बनाया करते थे और मूल्य लेकर दे जाते थे। इसी सुरमे के कारण वह काफी प्रसिद्ध हो चुके थे। योग यह है—

फिटकड़ी भुनी ४० ग्राम, लौंग टोपीदार १० ग्राम दोनों को अति सूक्ष्म पीसकर तैयार रखें। बस तैयार है। रात्रि के समय इस्तेमाल करें।

४८—ज्योतिवर्धक अंजन

इसे सुरमों का सम्राट कहें तो अत्युक्ति नहीं। इससे धुन्ध, जाला, दृष्टिमांद्य आदि रोग गिनती के दिनों में दूर होकर दृष्टि तेज हो जाती है। सुरमें का योग यह है—

फिटकड़ी भुनी हुई २५ ग्राम खरल में डालकर निम्नोक्त बूटियों के रसों में खरल करें। भतल, सिरस, नीम, महन्दी, घृतकुमारी, जीरा सफ़ेद, मुण्डी बूटी, इन्द्राणी लाल पुष्पवाली।

नोट—प्रत्येक बूटी का रस न्यूनातिन्यून ६० ग्राम होना चाहिये। यदि हरी बूटी हो तो कूटकर कपड़े में से उसका रस निकाल लें और यदि सूखी हो तो बूटी को उससे चार गुणे पानी में रात्रि को भिगो दें और प्रातः मलकर कपड़े में से छानलें, घोटते समय थोड़ा-थोड़ा करके रस डालें और जब तक डाला हुआ रस सूख न जावे तब तक दूसरा रस न डालें।

४९—नेत्र हितकारी सुरमा

फिटकड़ी २५ ग्राम, गौ दुग्ध १० ग्राम। दोनों को लोहे के तवे पर

रखकर नीचे आग जलायें। थोड़ी देर के बाद स्वयंमेव ही उसमें आग लग जायगी, जब खूब जलकर काला हो जाये और चिकनाहट सर्वथा मिट जावे तब आग बन्द करदें और शीतल होने पर खरल में डालकर सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखें। नेत्रों की समस्त बीमारियों के लिये लाभकारी है। नेत्रस्राव, दृष्टिमांद्य आदि के लिए बहुत गुण करने वाला सरल योग है।

५०—अक्सीर सुरमा सफेद

यह सुरमा भी नेत्रों के प्रत्येक रोग को दूर करने के लिए अत्यन्त लाभदायक है। विशेषकर फूला, जाला, धुन्ध, कुक्करे आदि रोगों में तो बहुत ही गुण करता है और सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि अत्यन्त सरलता से तैयार हो जाता है। सस्ता भी खूब है। योग की औषधियां सर्वत्र मिल जाती हैं। हमने भी इसे खूब आजमाया है।

योग—फिटकड़ी सफेद, कलमी शोरा, सौंठ, सुरमा सफेद चारों औषधियां समभाग लेकर अत्यन्त बारीक पीसकर सूक्ष्म सुरमा बनालें और प्रातः-सायं दोनो समय नेत्रों में लगाया करें।

५१—नेत्रों की लालिमा का अकसीर सुरमा

नेत्रों की लालिमा और उस फोले के लिये जो प्रायः नेत्राभिष्यन्द में हो जाया करता है—यह सुरमा बहुत ही लाभदायक है और इसकी रंगत भी अत्यन्त हृदयग्राही होती है।

योग—फिटकड़ी भुनी हुई तीन ग्राम को मंहदी और जीरा सफेद २५ २५ ग्राम के स्वरस में खरल करके शीशी में सुरक्षित रखें। स्वरस इस प्रकार बनायें कि दोनों बूटियां २५-२५ ग्राम लेकर १२० ग्राम पानी में भिगोदें। बारह घण्टे बाद मलकर छानलें। सुनहरी रंग का स्वरस प्राप्त होगा। इसको थोड़ा थोड़ा डालकर सारे स्वरस को घोटते घोटते सुखालें। बस दवा तैयार है।

५२—नूरानी सलाइयां

आपने प्रायः ही रेलों में भिन्न-भिन्न रंगों की सलाइयां बिकते हुये देखी होंगी जिन्हें जैंटिलमैन लोग चीख-चीख कर बेचा करते हैं और सलाई के ५० पैसे बसूल कर लेते हैं। तनिक आप इन महाशयों से योग पूछकर देखें तो बड़ी प्रसन्नता पूर्वक कहेंगे कि लिखलो किन्तु योग में बीसियों मूल्यवान वस्तुओं के नाम लिखाकर एक छोटा सा निघंटु बना दंगे किन्तु वास्तविक योग कदापि न बतायेंगे। असल योग निम्नलिखित है—

योग—फिटकड़ी की एक डली लेकर लोहे की कड़छी में रखकर

पिघलायें। जब पानी हो जावे तब उसमें से चम्मच भरकर किसी मिट्टी के साफ बर्तन के पैंदे पर डालें और हाथ से रगड़कर सलाइयां बनालें। यदि रंगत बदलना अभीष्ट हो तो हल्दी सूक्ष्म पिसी हुई मिला दिया करें। इससे रंगत भी सुन्दर हो जायगी और लाभ भी बढ जायेंगे।

५३—अकसीर सलाइयां नं० २

यह सलाइयां गुणों में ऊपरोक्त सलाइयों से भी बढकर हैं। धुन्ध, जाला, फोला आदि समस्त रोगों के लिये इन सलाइयों को भी तनिक आंखों में फेरते रहना रोग को निर्मूल कर देता है।

योग—फिटकड़ी कच्ची, सोहागा, नौशादर, कलमीशोरा समभाग लेकर प्रत्येक को पृथक-पृथक सूक्षम पीसलें और किसी अच्छे खरल में मिलाकर घोटें, ऐसा करने से द्रव्य स्वयं ही गीले होकर क्वाम सा बन जायगा, फिर हाथ से सलाइयां बनालें और सूखने पर काम में लावें, अत्यन्त लाभदायक हैं।

नोट—वर्षा ऋतु में ये सलाइयां पानी होकर बह जाती हैं अतएव इन दिनों में न बनावें।

५४—करामाती सलाइयां नं० ३

फिटकड़ी १२ ग्राम, नीलाथोथा १ ग्राम और नौशादर को सूक्ष्म पीस कर रखलें और फिटकड़ी की डली को किसी बर्तन में रखकर अंगारों पर रखें। जब पानी हो जावे तो सूक्ष्म पिसा हुआ नीलाथोथा और नौसादर भी डालदें और हल हो जाने पर आग से उतारलें तथा समोष्ण दशा में ही उपरोक्त विधि से सलाइयां बनालें।

लाभ—इसको प्रतिदिन आंखों में फिराना नेत्राभिष्यन्द, कुकरे, लाली, सफेदी, धुन्ध आदि रोगों को दूर करता है।

नासिका रोग

नासिका के रोगों में नक्सीर के लिये फिटकड़ी अत्यन्त लाभदायक वस्तु है, अतएव इस सम्बन्ध में कुछ अनुभूतानुभूत योग अंकित करते हैं।

नक्सीर फूटना

यह रोग रक्ताधिकता से उत्पन्न होता है। नासिका की रगें रक्त से भर कर फट जाती हैं और शोणित नासिका द्वार से बहने लगता है। इसी को नक्सीर कहते हैं।

(५५) प्रथम योग–फिटकड़ी सूक्ष्म पीसकर रखें और बारम्बार नस्य की भांति सुघायें, नक्सीर बन्द हो जावेगी, क्योंकि अकेली फिटकड़ी ही नक्सीर बन्द करने में अक्सीर का काम देती है। यदि किसी समय अकेली फिटकड़ी से लाभ न हो तो निम्नलिखित योगों में से जो चाहें बनालें, अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

(५६) द्वितीय योग-फिटकड़ी भुनी, जंगली कंडों की भस्म, कागज की भस्म तीनों को समभाग लेकर पीस रखें और आवश्यकता के समय नस्य दें। इससे नक्सीर बन्द हो जाती है।

(५७) तृतीय योग—फिटकड़ी भुनी २ ग्राम, अफीम १ ग्राम सूक्ष्म पीसकर रखदें, और आवश्यकता के समय थोड़ी सी दवा लेकर नलकी द्वारा नाक में फूंकें। तत्काल नक्सीर बन्द हो जायेगी।

(५८) चतुर्थ योग—भुनी फिटकड़ी को कासनी के अर्क में घोललें और किसी शीशी में सुरक्षित रखें। इस अर्क को पिचकारी से अथवा वैसे ही नाक में डालें। इससे भी नकसीर बन्द हो जाती है।

अपथ्य—धूप और अग्नि ताप के निकट न बैठें। मांस, प्याज, लहसुन, अधिक मिरचें, गुड़, शक्कर आदि से परहेज रखें।

पथ्य—शीतल प्रभाव वाले शाक, मूंग की खिचड़ी, दलिया, खीर और शीतल पदार्थ।

५९—नाक से दुर्गन्ध आना

यदि नाक से दुर्गन्ध आती हो तो फिटकड़ी ३ ग्रेन १ औंस पानी में घोलकर इस साल्युशन को पिचकारी से या वैसे ही नाक में डाला करें। इससे लाभ हो जायगा।

कर्ण रोग

कान भी उत्तमांगों के निकट होने से इसकी पीड़ा भी बडी कष्टदायनी होती है। कान में मैल एकत्र हो जाने से या पानी आदि पड़ जाने से पीड़ा हुआ करती है।

६०—कर्ण पीड़ा के लिए

इस योग से कान की प्राय: सभी पीड़ाओं को आराम हो जाता है। फिटकडी भुनी सूक्ष्म पीसकर कान में डालें और ऊपर से कुछ बून्द नीम्बू के रस की डालदें या प्याज का रस अथवा गधे की लीद का पानी डालदें। तत्क्षण पीडा शान्त हो जावेगी।

कान का कुर्रहा

जब कान के शोथ या फुन्सी में पीव बनकर फूट जाती है तब यूनानी में उसे कुर्रहा कहते हैं। यदि इसका शीघ्र ही उपाय न किया जावे तो भय है कि कहीं दिमाग को नुकसान न पहुंचा दे। यदि यह कुर्रहा दिमाग में प्रविष्ठ हो जाय तो सरसाम हो जाता है। कान का क्षत बडी कठिनता से जाया करता है। हमने अनेक रोगियों को वर्षों हस्पतालों में इलाज कराते देखा है फिर भी फायदा नहीं हुआ। निम्नलिखित चुटकले से आराम हो जाता है।

६१—अक्सीर कुर्रहा कान

फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर विशुद्ध शहद में मिलायें और फिर मलमल के कपड़े की बत्ती सी बनाकर इस दवा में लथपथ करके कान में रखें। दिन में दो तीन बार बदल दिया करें। इस साधारण सी दवा से नया जख्म तो केवल गिनती के दिनों में ही दूर हो जाता है।

६२—कान का नासूर

जब कुर्रहा पुराना हो जाता है तो फिर उसे नासूर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसके लिये भी उपरोक्त प्रयोग अक्सीर है, किन्तु नासूर के लिये अधिक दिन इस्तेमाल करायें। अवश्य लाभ होगा।

नोट—यह दवा न केवल कान के लिए बल्कि हर जगह के नासूर के लिये अत्यधिक लाभदायक है।

२—यदि क्षत हो तो फिर मोटी बत्ती बनाना चाहिए।

दन्त रोग

दन्त ईश्वर प्रदत्त अपूर्व भेंट है। इनकी कदर करनी चाहिए। अत: हमारे प्राचीन ऋषियों ने सर्वत्र दातुन करते रहने का आदेश दिया है। दातुन से दांतों की जड़ें मजबूत होती हैं और दांतों का मैल साफ़ हो जाता है। ईश्वर ने जहां फिटकड़ी को अन्य रोगों के लिये लाभकारी बनाया है, वहां दन्त रोगों के लिए भी गुणकारी बनाया है। इससे दांतों के अनेक रोगों को दूर करने वाले मंजन बनते हैं।

दन्त पीड़ा

कारण—दांतों पर मैल जमना, खट्टी चीजों का अधिक सेवन और आमाशय दोष आदि। दन्त पीड़ा के लिए निम्नलिखित योग बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुये हैं।

(६३) प्रथम योग—६ ग्राम फिटकड़ी को गरम तवे पर रखें, जब पानी हो चले तब २ ग्रेन अफीम डालदें। जब पक जाये तब शीतल करके सूक्ष्म पीसलें और इस दवा को मजन की भाति इस्तेमाल करें।

(६४) द्वितीय योग—यह दाढ़ और दन्त पीड़ा के लिये तत्कालीन प्रभाव दिखाने वाला योग है, बस दवाई मलने की देर है, पीड़ा शांत होने में देर नहीं लगती।

फिटकड़ी भुनी, रीठे की गुठली की राख समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और पीड़ा स्थान पर मलदें। यदि तमाम दांतों में भी पीडा होगी तो भी आराम हो जायगा।

(६५) तृतीय योग—यह भी ऊपरोक्त योग से किसी प्रकार कम नहीं दाढ़ की पीडा के लिए तो अत्यन्त लाभदायक है। फिटकड़ी भुनी तथा निम्ब क्षार समभाग लेकर अत्यन्त सूक्ष्म पीसें और दांतों पर मलें, अनुभूत है।

(६६) चतुर्थ योग—यदि दांतों में दरद हो तो बबूल का ताजा छिलका लेकर उसमें फिटकडी की डली रखकर चबायें। कुछेक बार के चबाने से आराम हो जाता है।

नोट—यदि इसको अन्दर निगल जावें तो खांसी के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

दांतों का हिलना

यह रोग यदि बालकों या वृद्धों को हो जावे तो चिकित्सा की तनिक भी आवश्यकता नहीं क्योंकि बच्चों को तो स्वयं ही आराम हो जाता है और वृद्धों को होता ही नहीं। हां यदि युवक इस रोग में ग्रसित हो जाय तो निम्न-लिखित योग से काम लें।

(६७) प्रथम मंजन-इससे हिलते हुए दांत बिल्कुल ठीक हो जाते हैं तथा दन्त पीडा के लिये भी लाभदायक है। फिटकड़ी भुनी हुई १२ ग्राम, नीलाथोथा भुना हुआ ६ ग्रेन दोनों को सूक्ष्म पीसकर रखें और काम में लायें।

(६८) द्वितीय मंजन—फिटकड़ी भुनी हुई १२ ग्राम, सुपारी जलाई हुई १२ ग्राम दोनों को सूक्ष्म पीसकर मजन बनालें। इससे भी हिलते दांत अपने स्थान पर जम जाते हैं।

(६९) तृतीय अमिश्रत मंजन--अकेली फिटकड़ी को सूक्ष्म करके इस्तेमाल करना भी अत्यन्त लाभदायक है।

दांतों से रक्त आना

वास्तव में यह रक्त मसूढ़ो से आया करता है किन्तु दांत भी मसूढ़ों में ही लगे हुए होते हैं इसीलिए दांतों से खून आना कह देते हैं।

(७०) प्रथम योग--जामुन की लकड़ी का कोयला १२ ग्राम, फिटकड़ी भुनी हुई १५ ग्राम दोनों को सूक्ष्म पीसकर मलने से दांतों से रक्त आना बन्द हो जाता है।

(७१) द्वितीय योग – फिटकड़ी भुनी हुई १२ ग्राम, सेलखड़ी १२ ग्राम और गेरू १२ ग्राम तीनों को सूक्ष्म पीसकर दांतों पर मलते रहें, रक्त का आना बन्द हो जावेगा।

(७२) तृतीय योग—फिटकड़ी ६ ग्राम को सूक्ष्म करके २५० ग्राम पानी में हल करलें और इससे गण्डूष कराया करें। इससे भी रक्त आना बन्द हो जाता है।

(७३) चतुर्थ योग--अकेली फिटकड़ी की खील को डिबिया में डाल रखें और दांतों पर मला करें।

७४–दाँतों का भुरना

कई आदमियों के दांत भुरने आरम्भ हो जाते हैं। इसके लिये फिटकड़ी

को सूक्ष्म पीसकर शहद में मिलालें और दांतों पर मला करें।

(७५) द्वितीय योग—फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर डिबिया में रखें और प्रातःकाल कीकर की दातुन को चबाकर और उस पर पिसी हुई फिटकड़ी लगाकर दांतों पर फेरें। इससे भी दांतों का भुरना बन्द हो जाता है।

मंजनों के उत्तमोत्तम योग

(जो लगभग समस्त रोगों के लिए लाभदायक हैं)

मानव स्वास्थ्य को स्थिर रखने के लिये मंजन और अन्जन का उपयोग करना अत्यावश्यक है। इस बात को दृष्टि में रखते हुए एक कवि ने क्या ही अच्छा कहा है :—

नाक में अंगुली कान में तिनका मत कर मत कर।
आंख में अंजन दांत में मजन नित कर नित कर ॥

अतएव हम यहां ऐसे मंजनों के प्रयोग लिखते हैं जो फिटकड़ी से तैयार होते हैं।

७६—सुन्दर मंजन

यह वही मंजन है जो टूथ पौडर (Tooth Powder) के नाम से अत्यधिक बिक रहा है। यह मंजन दन्त पीड़ा और मुख की दुर्गन्धि को दूर करता है तथा दांतों का मैल साफ करके दांतों को सफेद बनाता है।

अंग्रेजी चाक, फिटकड़ी भुनी १२-१२ ग्राम, कपूर ३ ग्राम सूक्ष्म पीसकर शीशी में डाल रखें। अत्यन्त ही सुन्दर और सुगन्धित मंजन है।

(७७) दूसरा मंजन—फिटकड़ी १२ ग्राम, कीकर का कोयला १२ ग्राम सूक्ष्म पीसकर कपडछान करके रखें और आवश्यकता के समय दांतों पर मला करें, दांतों के समस्त रोगों के लिए लाभदायक है।

(७८) तीसरा मंजन—जो कि दांतों को एक ही मिनट में सफेद कर देता है।

फिटंकड़ी भुनी हुई १२ ग्राम, मकई का भुट्टा (दाने निकाला हुआ जलाकर राख करलें और) १२ ग्राम मिलादें। इसके मलने से तत्काल ही दांत हिम की भांति शुभ्र हो जाते हैं।

(७९) चतुर्थ मंजन—इस मंजन से भी दांत मुक्ता के समान स्वच्छ हो जाते हैं और दूसरे रोगों के लिये भी लाभदायक है।

फिटकड़ी भुनी, शुक्ति भस्म दोनों को मिलाकर गोरख पान के रस में

सारा दिन खरल करें। जब रस बिल्कुल सूख जाये तो शीशी में रखें और दांतों पर मला करें।

नोट—गोरखपान बूटी के पत्ते छोटे और फूल सफेद रंग के बाजरे की खील जैसे होते हैं। यह बूटी सर्वत्र मिलती है, और अनेक रोगों के लिए लाभदायक है। विशेषकर यकृत के रोगों के लिये तो अमृत तुल्य है। बंग की डली की डली इसमें भस्म हो जाती है।

७९—दन्त सफा

आपने छोटी २ रंगदार टिकियां दन्त सफा के नाम से बाजारों में बिकती हुई देखी होंगी, जिनको दांतों पर घिसने से न केवल दांत ही सफेद हो जाते हैं बल्कि दांतों की पीड़ा को भी आराम हो जाता है। यदि स्वयं बनाना चाहो तो इस प्रकार बनालो।

फिटकड़ी की डली को कडछी में डालकर पिघलाओ और उसमें जरा सा नौसादर पिसा हुआ डालदो और साथ ही सूक्ष्म पिसी हुई थोड़ी सी हल्दी भी। फिर आग से उतार कर सांचों में टिकिया बनालो। बस दन्त सफा तैयार है।

कण्ठ रोग

कंठ रोहिणी (डिप्थीरिया)

यह बड़ा ही घातक रोग है, क्योकि इससे रोगी की अचानक मृत्यु हो जाने का भय है। इस रोग का कारण नजला या जुकाम का विगाड या किसी दोष की अधिकता हुआ करती है।

चिन्ह—रोगी के कंठ में बोझ और खराश होकर बार २ खांसी उठती है और गले में कुछ अटका हुआ मालूम होता है, इसलिए उसको अन्दर निगलने में कष्ट का अनुभव होता है। देश के दुर्भाग्य से कभी २ यह रोग संक्रामक रोग की भांति फैलता है। निम्नलिखित योग से खुनाक का मूर्छित रोगी भी तत्काल जाग उठता है। जादू असर प्रयोग है।

८१—अकसीर खुनाक (कंठ रोहिणी)

रीठे का छिलका १२ ग्राम, फिटकड़ी १ ग्राम दोनों का नियमानुसार क्वाथ बनाकर रोगी के कण्ठ में डालदें। तत्काल होश आ जायगा। कई बार गण्डूष भी करायें। अकेले रीठे के गंडूष कराना भी लाभदायक है किन्तु फिटकड़ी मिलाने से गुण बढ जाते हैं।

८२—संक्रामक कंठ रोहिणी

संक्रामक खुनाक में जब कण्ड के अन्दर एक फासद झिल्ली पैदा हो जाया करती है, तो उसको जज्ब करने के लिए उस भिल्ली पर फूल की हुई फिटकड़ी का चूर्ण छिड़कने से लाभ होता है। फूल करने की विधि यह है कि फिटकड़ी को तामचीनी के प्याले में रखकर कोयलों की आग पर रखें। जब पककर खील बन जावे तब सूक्ष्म पीसलें, बस ! दवा तैयार है।

कवा गिरना

यह रोग प्रायः बालकों को हुआ करता है, या कफ प्रकृति वाले बड़े आदमी भी इस रोग में ग्रसित हो जाया करते हैं।

कारण—कण्ठ पीड़ा या कफ बढ़ जाने से कण्ठ की भीतरी झिल्ली ढ़ीली होकर कवा गिर पड़ता है।

चिन्ह—वारम्वार खुश्क खांसी उठती है। चित्त लेटने से खांसी का वेग बढ जाता है। कभी जी मिचलाकर वमन हो जाती है। बालकों के लिए इस रोग के योग बाल-प्रकरण में भी पढें, यहां वही योग अंकित किये जाते हैं जो बड़े आदमियों के लिए भी लाभदायक हैं।

(८३) प्रथम योग—कीकर की कुचली हुई छाल ६०० ग्राम पानी में दस मिनट जोश देकर छानलें और इसमें फिटकड़ी का चूरण ८ ग्राम मिलाकर थोड़ा सा शहद सम्मिलित करके गण्डूष करायें। आराम हो जायगा।

(८४) द्वियीय योग—फिटकड़ी सूक्ष्म पिसी हुई ३० ग्राम, वर्षा का स्वच्छ जल १२ ग्राम, ग्लेसरीन १८० ग्राम। प्रथम फिटकड़ी और ग्लेसरीन को मिलाकर खरल करें ताकि फिटकड़ी अच्छी तरह हल हो जावे। यदि शीतकाल हो तो ग्लेसरीन को साधारण गरम करलें फिर तनिक देर पड़ी रहने दें और निथारकर पानी मिलाकर शीशी में रखें और आवश्यकता के समय रुई के फाये से रोगी के कण्ठ में लगाया करें।

(८५) सरल योग—फिटकड़ी ३ ग्राम लेकर १८० ग्राम पानी में हल करके उससे गण्डूष कराना भी लाभदायक है।

कण्ठमाला

यह अत्यन्त कष्ट देने वाला रोग है। इसमें ग्रीवा के चारों ओर गिल्टियां सी हो जाती हैं और कुछ दिनों के बाद फूट निकलती हैं। अर्वाचीन डाक्टरों का कथन है कि यह बड़ा भयंकर रोग है। इसके कीटाणु और सिल के कीटाणु एक ही हैं। कण्ठमाला के अनेक रोगी सिल रोग से ही मरते हैं। अतएव इसकी चिकित्सा में आलस्य कदापि न करें। ईश्वर की कृपा से हमारे पास इस दुष्ट रोग को दूर करने कुछेक योग हैं जो इस पुस्तक से सम्बन्ध नहीं रखते अतः उनको हमने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनुभूत योग चिन्तामणी" में छाप दिये हैं। दो–तीन चुटकले जो इस पुस्तक से सम्बन्ध रखते हैं वह नीचे लिखे जाते हैं।

८६–कण्ठमाला का लेप

फिटकड़ी ३ ग्राम, अंजीर की लकड़ी की भस्म ६ ग्राम, पानी ३ ग्राम में दोनों को घोटकर कंठमाला पर लेप करदें। इससे अवश्य आराम हो जावेगा।

८७–सरल चुटकला

फिटकड़ी को कोरे कूजे में खील बनाकर सूक्ष्म पीसलें और १-१ ग्राम प्रातः सायं पानी के साथ खिलाने से प्रायः लाभ हो जाता है।

८८–एक और चुटकला

यदि कंठमाला फूट कर क्षत हो गये हों तो फिटकड़ी को पानी में घोलकर इस पानी से जख्मों को दिन में दो बार धोया करें। यद्यपि कुछ समय तो लगेगा कन्तु आराम अवश्य हो जावेगा।

छाती और फेफड़ों के रोग

फफडा, हृदय जैसे उत्तमांग को हवा देता है, मानो उसका पंखा है और इसके द्वारा हमें श्वांस आता जाता है। यदि हमें ५-१० मिनट तक श्वांस न आये तो हमारा जीवित रहना असम्भव हो जाता है. अतएव इसे रुग्ण न रहने देना चाहिए।

कास

खांसी का कारण दिमागी नजला होता है, जो कि फेफड़े पर गिरता है। फेफड़ा इस नजले को अलग करना चाहता है, इसलिये उसको उछालता है। बस ! यही खांसी कहलाती है। ऐसा यूनानी मत है।

खांसी के लिये फिटकड़ी सर्वोत्तम और सर्वमान्य औषधि है । चुनांचे नीचे कुछ योग लिखे जाते हैं।

(८९) कासारि अर्क---फिटकड़ी २ ग्राम, सत मुलठ्ठी २ ग्राम, सुहागा भुना १ ग्राम। समस्त औषधियों को खरल में सूक्ष्म पीसकर २०० ग्राम पानी में हल करलें और शीशी में सुरक्षित रखें। १५-१५ ग्राम दिन में ३-४ बार पिलावें। खांसी, दमा और आवाज को साफ करने के लिये अकसीर है।

(९०) कासारि चूरण---फिटकड़ी ३ ग्राम, सुहागा भुना ३ ग्राम, सत मुलठ्ठी ३ ग्राम, नोशादर १॥ ग्राम, सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा ४ ग्रेन दिन में २ से ३ बार तक अर्क गाजवां या केवल पानी से दिया करें। खांसी के लिये लाभदायक है।

९१–मीठी पुड़िया

फिटकड़ी भुनी हुई १२ ग्राम, खांड देशी १२० ग्राम सूक्ष्म पीसकर मिलालें और १४ पुड़िया बनावें। तर खांसी वाले को गरम पानी के साथ और खुश्क खांसी वाले को गरम दूध के साथ दें। दो सप्ताह के सेवन से पुरानी से पुरानी खांसी दूर हो जाती है।

९२–फिटकड़ी का तेल

यह फिटकड़ी का तेल है जो खांसी और दमा के लिए अत्युत्तम है।

इसके बनाने की विधि श्वांस रोग प्रकरण में पढ़ें, बनाने में अत्यन्त सरल है, तथा एक और प्रयोग है जो भस्मों के प्रकरण में संखिया भस्म है, वह भी लाभदायक है ।

९३–फिटकड़ी वटिका

फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, पान या लेहसुवे के पत्ते नग ७ दोनों को बारीक पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें । मात्रा १ गोली से २ गोली तक पानी के साथ ।

लाभदायक अमिश्रित योग

ईश्वर न करे यदि किसी समय ऐसा अवसर आ पड़े, जब कि आपको सिवाय फिटकड़ी के और कोई वस्तु प्राप्त न हो सकती हो तो निम्नलिखित प्रयोगों से लाभ उठावें ।

(९४) प्रथम योग---फिटकड़ी १ ग्राम, ६० ग्राम पानी में हल करें और दिन में चार वार १५-१५ ग्राम पिलायें ।

(९५) द्वितीय योग—फिटकड़ी भुनी हुई ४ ग्रेन, बताशे में रखकर खिलायें और ऊपर से पानी पिलादें ।

(९६) तृतीय योग---फिटकड़ी १ ग्राम, विशुद्ध शहद १२ ग्राम में मिलाकर ३ ग्राम प्रात:, ३ ग्राम सायं चटायें ।

पथ्य---खट्टी और चिकनी चीजों से परहेज रखें, हां यदि खांसी खुश्क हो तो घी को आग पर खूब गरम करके इस्तेमाल कर सकते हैं ।

काली खांसी

चिन्ह---रोगी का, खांसते खांसते चेहरा लाल पड़ जाता है और रोगी जब सांस भीतर को खींचता है तो हुप की सी आवाज निकलती है । इसी लिए अंग्रेजी में इसे 'हुपिंग कफ' कहते हैं । इससे प्राय: वमन भी हो जाया करती है ।

बहुधा यह रोग एक बार होकर फिर नहीं होता । चूंकि इसमें प्राय: बालक ही रोग ग्रसित होते हैं, इसलिये यहां केवल एक प्रयोग लिखा जाता है । शेष बाल रोग चिकित्सा के प्रकरण में देखें ।

९७–काली खांसी का परीक्षित योग

फिटकड़ी १२ ग्राम को अजवायन के क्वाथ में सारे दिन खरल करके एक मिट्टी के कूजे में डालकर उसके मुख का सम्पुट करदें और सूख जाने पर

तीन किलो उपलों में आंच द, तथा शीतल हो जाने पर सूक्ष्म पीसकर रखें। यदि कोई युवा पुरुष इस रोग में ग्रसित हो तो इसमें से ८ ग्रेन दवा खिलाते रहें। अवश्य आराम होगा। दवा को बताशा, खांड, गाय का मक्खन आदि में रखकर दिया जा सकता है। यदि यह दवा दोनों समय दी जावे तब भी कोई हानि नहीं।

हर्ष समाचार—इस रोग का एक और भी अकसीर प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित किया गया है जिसको हम अब तक अनन्त रोगियों पर परीक्षा कर चुके हैं। ईश्वर की कृपा से कभी निष्फल नहीं गया। उक्त पुस्तक मंगा कर अवश्य देखलें।

पथ्य---चिकनी और खट्टी तथा शीतल वस्तुओं से परहेज रखें।

भोजन----खिचड़ी, साबूदाना, गेहूं की रोटी खुश्क तथा बूरा आदि।

श्वांस रोग

इस रोग में श्वांस बहुत ही तंगी से आता है। यह खुश्क और तर दो प्रकार का होता है। प्रायः ही लोग कहा करते हैं कि दमा दम के साथ जाता है किन्तु यह उनकी भूल मालूम होती है। आप निम्नलिखित प्रयोगों में से जो चाहें अनुभव करके देखें। इनसे प्रायः आराम हो जाता है वरना चिरकाल के लिये दोरा तो अवश्य रुक जावेगा।

६८—प्रथम योग

इससे चिरकाल तक के लिये दोरा रुक जाता है और अनेक भाग्यशाली लोगों का रोग भी निर्मूल हो जाता है।

फिटकड़ी इच्छानुसार लेकर किसी बर्तन में डाल और ऊपर आक का दूध इतना डालें कि फिटकड़ी खूब तर हो जाये। अब इस बर्तन को किसी सुरक्षित स्थान पर रखदें। जब दूध सूख जावे तो फिर डालदें। इसी प्रकार तीन बार खुश्क और तर करें। फिर किसी मिट्टी के सराव में डालकर मुखको दूसरे सराव से सम्पुट करके सूखने पर ६ किलो उपलों की आंच देलें। यदि सफेद हो तो तैयार समझें वर्ना दुबारा आंच देलें और फिर सूक्ष्म पीसकर शीशी में डाल रखें। मात्राः---चौथाई से आधा ग्राम तक। दमा तर हो अर्थात कफ निकलता हो तो बूरा में मिलाकर, वरना मक्खन में देते रहें। १५ दिन सेवन करना काफी है। यह दवा खांसी के लिये भी लाभदायक है।

(९९) द्वितीय योग—डंडा थोहर का ताजा टुकड़ा लेकर इसमें छिद्र करके १२ ग्राम फिटकड़ी डालदें और फिर इसको मिट्टी से लेप करके ८ किलो उपलों की आंच दे लें। शीतल होने पर सूक्ष्म पीसलें और इसमें से ४ ग्रेन पान के पत्ते में रखकर खाते रहें।

(१००) तृतीय योग—यह फिटकड़ी के तेल का प्रयोग है जो कि श्वांस और कास के लिये अत्युत्तम है। फिटकड़ी सफ़ेद, गाय का मक्खन प्रत्येक ५०-५० ग्राम दोनों को खूब बारीक खरल करें और फिर आक के पत्तों में लपेट दें और किसी पात्र में छिद्र करके इसमें पत्ते रखकर इसके ऊपर बर्तन ढककर मिट्टी से मुख बन्द करके पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाल लें और सुरक्षित रखें।

मात्रा—एक या दो बूंद बताशे में रखकर खिलाया करें।

१०१–दौरा रोक

जिस समय रोगी को इस रोग का दौरा पड़ता है तो उसकी दशा का चित्र खैंचना हमारी लेखनी की शक्ति से बाहिर है। सांस की तंगी के कारण से रोगी का नाक में दम आ जाता है। बेचारा दम लेने को कभी बैठता है कभी लेटता है, कभी खड़ा होकर छाती आगे को झुकाता है ताकि सांस सरलता पूर्वक आ जावे, सारांश अपनी जान को कष्ट से छुड़ाने के लिए भांति भांति के उपाय करता है किन्तु कोई कारगर नहीं होता। हमने दौरा रोकने के कुछेक उपाय निकाले हैं जिनमें से एक यह भी है, कि दौरा के समय फिटकड़ी सूक्ष्म पीसकर ६ ग्राम की मात्रा में खांड के मध्य में रखकर खिलादें और ऊपर से दो तीन घूंट गरम पानी पिलादें। किसी को वमन होकर और किसी को वैसे ही आराम हो जाता है।

पथ्य—अधिक सोने और खट्टी तथा शीतल चीजों के सेवन तथा तेल, लहसुन से परहेज रखें।

भोजन—मूंग की दाल, चपाती, लोकी का शाक।

खून थूकना

प्राय. वैद्य मुंह से खून आता देखकर व्यर्थ ही क्षय के रोग का निदान कर देते हैं हालांकि जब तक फेफड़े से खून न आवे तब तक क्षय रोग नहीं हो सकता। मुंह से खून आने के लिए निम्नलिखित प्रयोग अति उत्तम है।

(१०२) प्रथम योग—फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, कीकर का गोंद १० ग्राम, गेरू १० ग्राम। तीनों सूक्ष्म पीसकर पुनः घोट लें और सबकी

२१ पुड़ियां बनालें । फिर एक पुड़िया प्रातःकाल, लुग्राब बीहदाना या ईसबगोल की लार के साथ दें ।

(१०३) द्वितीय योग— फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, कहरवा शमई ३ ग्राम (कहरबा सुनहरी रंग का लें) दोनों को बारीक पीसकर समभाग तीन पुड़ियां बनालें और प्रतिदिन एक पुड़िया दूध की लस्सी के साथ दिया करें। तीन दिन में आराम हो जायगा ।

(१०४) तृतीय योग—फिटकड़ी ८ ग्राम का चूरण १२० ग्राम दूध में मिलाकर दस मिनिट तक पकावें और छानलें, फिर इसकी ४० से ५० ग्राम की मात्रा दिन में तीन बार सेवन करने से हर प्रकार का रक्त बन्द हो जाता है ।

(१०५) फिटकड़ी भुनी एक ग्राम बकरी के दूध के साथ सेवन करने से मुख द्वारा रक्त आना बन्द हो जाता है ।

अपथ्य--तमाम गरम और खट्टी चीजों से और परिश्रम से परहेज रखें ।

पथ्य--यवागु विशेषकर लाभदायक होता है या साबूदाना और गेहूँ का दलिया ।

१०६–उरःक्षत (सिल)

यह रोग फेफड़े में क्षत होने से उत्पन्न होता है । उरःक्षत के रोगी को क्षय रोग होना अनिवार्य है और क्षय के रोगी को उरःक्षत का रोग होना आवश्यक नहीं । खांसी में जो बलगम निकलती है उसमें प्रायः पीप ही निकला करती है । परीक्षा का सरल उपाय यह है कि यदि बलगम को पानी में डाल दिया जावे तो पैंदे में बैठ जायगी और अग्नि पर डालने से दुर्गन्ध आयेगी ।

१०७–उरःक्षत का सन्यासी योग

पाठक वृन्द ! निम्नलिखित योग हमें एक सन्यासी द्वारा प्राप्त हुआ है । यह एक रहस्य था जिसे सर्वसाधारण के लोभार्थ प्रकट कर रहे हैं प्रत्यक्ष में यह एक साधारण योग प्रतीत होता है किन्तु वास्तव में अक्सीर है ।

नोट—फिटकड़ी को किसी मिट्टी के कूजे में बन्द करके फूंकलें और फिर इसे सूक्ष्म पीसकर रखें और निम्नलिखित विधि से सेवन करायें ।

सेवन बिधि—एक किलो गाय का दूध बिना पानी मिलाये गरम करके उसका दही जमा दें और फिर उसे बिना पानी मिलाये ही बिलोकर

उसका मक्खन निकालें। फिर इस मक्खन के सात भाग करलें और प्रत्येक भाग मक्खन में दो चावल भर उपरोक्त फिटकड़ी मिलाकर खिलाते जावें, सातों भाग मक्खन उसी समय खिलादें तथा ऊपर से सारी छाछ पिलादें। इसी विधि से पन्द्रह दिवस पर्यन्त खिलाते रहें। अवश्य आराम हो जायेगा।

अपथ्य—मसालेदार चीजों, गुड़, खटाई, तेल और मैला कुचैला कपड़ा पहनने से परहेज करें।

पथ्य—मूंग की दाल, गेहूं की रोटी, लौकी का शाक।

(१०८) अन्य योग—गुलकन्द २५० ग्राम, फिटकड़ी भुनी ८ ग्रेन मिलाकर एक ही दिन में खिलादें और प्रतिदिन उतना ही खिलाते रहें। अवश्य आराम होगा। पथ्य और अपथ्य नं० १०७ में लिखे अनुसार।

१०९—न्युमोनिया

राजस्थान के ग्रामीण लोग इस रोग में हमेशा फिटकड़ी को ही सेवन किया करते हैं और ग्रामीण जनता का इसी दवा पर पूर्ण विश्वास जमा हुआ है। वह इसके अतिरिक्त कुछ नहीं देते, मानों उनके निकट यही एक अगद है।

११०—आश्चर्यजनक योग

फिटकड़ी १२० ग्राम, गाय के वछड़े का मूत्र (जो अभी दूध पीता हो) आधा किलो। दोनों को एक बोतल में मिलायें। मिलाते ही जोश आयेगा। जब हल हो जावे तब बोतल को बन्द करदें।

मात्रा—१५ ग्राम इसके सेवन से एक खूनी दस्त होकर आराम हो जायगा।

(१११) द्वितीय योग—फिटकड़ी २ ग्राम, सुहागा भुना २ ग्राम, मुलठ्ठी का सत दो ग्राम, नौशादर १ ग्राम। सब औषधियों को पीसकर रखें। मात्रा—४ ग्रेन दिन में दो या तीन बार १२० मि० ली० अर्क गावजबां के साथ सेवन करायें। यह दवा निमोनिया, खांसी व दमा के लिये भी लाभदायक है।

(११२) तृतीय योग—फिटकड़ी १० ग्राम, मेथी दाना एक ग्राम बारीक पीसकर मिलालें और शहद के साथ पाच ग्राम दवाई खिलादें। दो दो घण्टा के वाद फिर दें।

(११३) चतुर्थयोग—कच्ची फिटकड़ी सूक्ष्म पीसकर २ ग्राम की मात्रा खांड में लपेट कर गरम पानी से फंका दें। यदि आराम हो जाय तो ठीक वरना फिर एक घण्टा बाद इसकी एक मात्रा और दे दें।

११४—टकोर का योग

जिससे मरणासन्न रोगी को भी आराम हो जाता है

निम्नलिखित टकोर तत्कालीन प्रभाव दिखाती है। यही वह योग है जिससे हजारों रोगियों की जाने बची हैं, सारांश लासानी योग है।

फिटकड़ी ५० ग्राम, हल्दी ५० ग्राम, भटोर (भट्टी के अन्दर की जली हुई मिट्टी) आध किलो।

विधि—प्रथम हल्दी को बारीक पीसकर कपड़छान करलें और फिर फिटकड़ी तथा भटोर को भी बारीक पीसकर तीनों चीजों को मिलालें। मिलाते समय ऊपर से थोड़ा २ सरसों का तेल डालकर मिलाते जायें। यहां तक कि सारी दवा तर हो जाय, किन्तु एसी तर भी न हो कि तेल की बूंदे टपकने लगें। फिर इस दवा की दो कपड़ों में पोटलियां बांध लें और निम्नलिखित विधि से टकोर करें।

बिधि—एक लोहे के तवे को सुलगते हुए कौयलों की अंगीठी पर रखकर गरम करें और उसके ऊपर आक के पत्ते एक या दो फैलाकर रखदें और इन पत्तों पर पोटली रखदें, जब गरम हो जावे तो टकोर करना आरम्भ करें और इन पत्तों पर पोटली रखदें। इसी प्रकार बारी-बारी से निरन्तर टकोर करते रहें और आक के पत्ते जब सूखने लगें तो तत्काल नये पलट दें। इसी प्रकार न्यूनातिन्यून चार घण्टे टकोर करें। लगभग १००—१५० पत्ते खर्च होंगे। टकोर करते २ ही रोगी को चैन हो जायगा। यह बहुत ही लाभदायक और प्रभावक योग है। इसको अवश्य आजमा कर जनता को लाभ पहुंचायें।

अपथ्य—रोगी को पानी बिलकुल न दें बल्कि सोंफ का समोष्ण क्वाथ देते रहें। अफीम और दूसरी कब्ज वाली चीजें तथा आलू, लहसुन आदि से परहेज करायें।

पथ्य भोजन—मूंग की दाल का पानी पिलायें या साबूदाना थोड़ा मीठा डालकर।

११५—छाती से खून आना

फुलाई हुई फिटकड़ी १ ग्राम बूरा ३ ग्राम मिलाकर उस की ४ पुड़ियां १-१ ग्राम की बनालें। दो दो घंटे के अन्तर से एक-एक पुड़िया खिलाने से खून आना बन्द हो जायगा।

यकृत और प्लीहा के रोग

यकृत सम्बन्धी रोगों में फिटकड़ी बहुत ही लाभदायक वस्तु है । अतः हम यहां उत्तमोत्तम योग अंकित कर रहे हैं ।

पांडु रोग

कारण—उष्ण वस्तुओं के अधिक सेवन से यकृत में पित्त उत्पन्न होकर रक्त की रंगत को पीतवर्ण बना देता है । यह पीतता प्रथम नेत्रों में फिर सारे शरीर पर प्रकट हो जाती है ।

(११६) प्रथम योग—फिटकड़ी कच्ची १५ ग्राम को सूक्ष्म पीसकर समभाग २१ पुड़िया बनालें और प्रातःकाल एक पुड़िया गाय के मक्खन में मिलाकर खिलादें । इससे पुराने से पुराना पांडु रोग भी दूर हो जावेगा । अनेक बार की अनुभूत है ।

(११७) द्वितीय योग—उत्तम प्रकार की फिटकड़ी को भूनलें और उसमें से एक रत्ती दवा खिलाकर ऊपर से दही का प्याला पिला दिया करें और दूसरे दिन दो रत्ती, तीसरे दिन तीन रत्ती फिर चार दिन तक ३-३ रत्ती ही खिलाते रहें और दही का प्याला पिलाते रहें । इससे कृष्ण और पीत दोनों प्रकार के पांडु-यदि एक मास से अधिक के हों तो एक सप्ताह में ही दूर हो जाते हैं ।

(११८) तृतीय योग—कासनी के बीज बाजार से लाकर घर पर ही जमीन में वो दें । दो-तीन दिन में ऊग आयेंगे । जब साग हो जाय तब इस हरी कासनी को कूटकर ५० ग्राम रस निकालें और उसमें फिटकड़ी की डली गरम करके दो-तीन बार डालें । वह पानी फट जायगा । अब उसमें किंचित सिरका सिकंजबीन मिलाकर या वैसे ही पिलादें और इसी प्रकार एक सप्ताह पिलाते रहें । अवश्य ही आराम हो जावेगा ।

(११९) चतुर्थ योग—फिटकड़ी भुनी २५ ग्राम, गिलेअरमनी २५ ग्राम, कूजा मिश्री ६० ग्राम, तीनों को बारीक पीसकर चूरण बनालें । मात्रा तीन ग्राम को शर्बत बनफशा से दिया करें । चिकनी और मसालेदार चीजें

तथा आलू, अर्वी, भिंडी आदि से परहेज करें। खाने को चावल, मूंग की खिचड़ी साबूदाना आदि।

१२०—यकृत की निर्बलता

कारण--यकृत की निर्बलता, पाचन क्रिया आदि के खराब हो जाने से यह रोग उत्पन्न हुआ करता है। इसका विषद् वर्णन निदान ग्रन्थों में पढें। यहां केवल चिन्ह और योग लिखे जायेंगे।

चिन्ह—मुख की रंगत फीकी पड़ जाती है, पाचन शक्ति बिगड़ कर भूख बन्द हो जाती है और अन्त को मुख व यकृत के स्थान पर शोथ हो जाता है। ऐसे रोगी को निम्नलिखित योग बहुत गुणकारी हैं।

योग---एक इन्द्रायण फल लेकर संध्या समय ऊपर से गोल टुकड़ा काटलें और उसके अन्दर का तमाम गूदा निकालकर उसमें दो रत्ती फिटकड़ी डालकर उसके ऊपर बकरी का दूध दूहें। जब भर जावे तो कटा हुआ टुकड़ा उस पर रखकर बन्द करदें और रात भर पड़ा रहने दें। प्रातःकाल कुछ चीनी मिलाकर रोगी को पिलादें। इससे उसे कई दस्त होंगे, जिनमें दूषित मल निकलेगा। इसी प्रकार कई दिन तक पिलाते रहने से रोगी स्वस्थ हो जायगा। इस विरेचन में यह विशेषता है कि इससे निर्बलता बिलकुल नहीं होती बल्कि प्रतिदिन रोगी सबल होता चला जाता है।

नोट---जब तक रोगी के पांव और चेहरे पर शोथ (वर्म) न आ जाये, तब तक यह दवा लाभदायक नहीं होती, बल्कि उसी समय लाभदायक सिद्ध होती है जब कि वरम आ चुका हो।

पथ्य--यथा सम्भव भूखा रखें। वायुकारक और चिकनी चीजों से परहेज रखें।

भोजन---पोदीना की चटनी और फुल्का।

प्लीहा रोग

प्लीहा आमाशय की दासी है। इसके बिगड़ जाने से और बहुत रोग उत्पन्न होते हैं। प्लीहा शोथ तिल्ली के बढ जाने को कहते हैं।

चिन्ह---बांई ओर की पसलियों के नीचे टटोलने से एक टुकड़ा सा प्रतीत होता है। इसके शोथ से शरीर दुर्बल और कृश हो जाता है। जब यह रोग पुराना हो जाता है तो कठिनता से जाता है।

कारण--मलेरिया ज्वर के बाद या मलेरिया ज्वर में शीतल जल

पीने से प्लीहा बढ़ जाती है। तनिक चलने या साधारण परिश्रम करने से दम फूल जाना ही इसका चिन्ह है।

१२१–प्लीहाकट मिश्रण

फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, नौसादर १० ग्राम, दोनों को खरल करलें, फिर तेजाव गंधक १० ग्राम, विशुद्ध सिरका जामुन ४०० ग्राम। सबको एक शीशी में मिलाकर रख छोड़ें और प्रतिदिन दो बून्द बताशे में या मिश्री पर डालकर प्रातः सायं खिलाया करें।

१२२–फिटकड़ी का तेल

सफेद फिटकड़ी को दरदरा कूटकर एक आतशी शीशी में स्त्री के सिर के बाल खूब साफ किये हुए-ऊपर नीचे रखकर (फिटकडी वालों के मध्य में रखें) पाताल यन्त्र से तेल निकाल लें और इस तेल की ५ बूंद बताशे में रख कर खिलाते रहें। यह तेल प्लीहा के लिये अत्युत्तम है।

यह तेल नामर्दी के लिए तिला के रूप में भी व्यवहृत होता है। जिसके गुण हम आगे चलकर यथा स्थान लिखेंगे। किन्तु इसके बनाने में अभ्यास की आवश्यकता होती है, अतएव हम नीचे एक और योग लिख देते हैं जो बनाने में अत्यन्त सरल है।

१२३–प्लीहार्क

फिटकड़ी सफेद, कलमी शोरा, सुहागा, नौशादर प्रत्येक १५-१५ ग्राम सबको पृथक २ पीसकर रखे। फिर घृतकुमारी का एक मोटा सा पत्ता लेकर उसे मध्य में से किनारों की ओर से लम्बा चीर लें और दोनों टुकड़ों पर पीसी हुई दवा छिड़क कर दोनों टुकड़ों को परस्पर मिलाकर धागे से बांध दें तथा धूप में लटका कर नीचे चीनी का प्याला रखदें। अर्क टपक टपक कर प्याले में एकत्र हो जायगा, जो कि प्लीहा और उदरशूल के लिये अकसीर है। मात्रा तीन बूंद बताशे में डालकर निगलवा दिया करें।

अपथ्य--चिकनी वस्तुओं और आलू, दाल, मांस तथा बैंगन के शाक आदि से परहेज करें।

पथ्य भोजन--पौदीना की चटनी, मूली का अचार, ऊंटनी का दूध, मूंग की दाल आदि।

आमाशय के रोग

मानव शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आमाशय को स्वस्थ रखना आवश्यक है। मनुष्य की शक्ति, बल और पौरुष भोजन पर ही निर्भर है, यह भोजन को पचाता है। आमाशय के कुछेक रोगों में फिटकड़ी लाभदायक पड़ती है। अकसीर आमाशय, स्वादिष्ट चूरण आदि के योग देखने हों तो हमारी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणी" में देखें। हां ! फिटकड़ी से तैयार होने वाले योग यहां लिखे जाते हैं।

१२४–उदर शूल

पेट का दर्द हमेशा आमाशय की विकृति से हुआ करता है, इसके लिये निम्नलिखित टोटका अति लाभदायक है। कच्ची फिटकड़ी १ ग्राम की मात्रा में खिलाकर ऊपर से दही पिलादें। इससे प्राय: हर प्रकार के उदर शूल मिट जाते हैं।

१२५–कथा

मेरे एक मित्र ने बतलाया कि एक दिन मेरे बाबा के पेट में कठिन पीड़ा हो रही थी। उन्होंने मुझसे कहा कि अमुक स्थान पर नीबू के सत की डली पड़ी है, उसे शर्बत के गिलास में मिलाकर मुझे पिलादो। मैंने तत्क्षण ही शर्बत का गिलास तैयार किया और उन्होंने पी लिया। पीते ही उसी क्षण पीड़ा शान्त हो गई, परन्तु वह कहने लगे कि यह नीम्बू का सत तो नहीं था इसका स्वाद तो और ही प्रकार का था। मैंने वही डली बाबा को दिखलाई जो ध्यान पूर्वक देखने से प्रतीत हुआ कि वास्तव में वह फिटकड़ी की डली थी।

१२६–वमन व उबकाई

जी मिचला कर वमन द्वारा आमाशय के मार्ग से गिजा का निकल जाना वमन कहलाता है और उबकाई उसे कहते हैं कि जिसमें वमन के से लक्षण तो मिलते हों किन्तु भीतर से कुछ न निकले।

योग—फिटकड़ी भुनी १ ग्राम को सिरका की शिकंजबीन २५ ग्राम

में मिलाकर चटायें। यदि शिकंज़बीन न मिल सके तो सिरका में खांड मिलाकर काम में लायें। यह दवा वमन और उबकाई दोनों के लिये लाभदायक है।

१२७–अन्य योग

फिटकड़ी भुनी १ रत्ती बताशे में डालकर खिलायें वमन बन्द हो जायगी।

नोट—जिस रोगी को वमन आ रही हो, उसके बाजू कस कर बांधना भी वमन का विना दवा का इलाज है और यह भी याद रखें कि वमन के रोगी को जल पिलाना हो तो घूंट घूंट करके पिलायें एक दम नहीं। घूंट घूंट पानी पिलाने से भी वमन का आना रूक जाता है।

विशूचिका

यह संक्रामक रोग है, जिससे रोगी को वमन और अतिसार होकर रोगी दुर्बल होता हुआ सुरपुर को सिधार जाता है।

चिन्ह—तृषा अधिक लगती है, अतिसार और वमन अत्यधिक होते हैं। यह बड़ा ही घातक रोग है जिससे लाखों प्राणी प्रति वर्ष भारतवर्ष में ही काल के ग्रास बनते हैं।

चिकित्सा—ऐसे योग बहुत ही कम मिलते हैं जो विशूचिका के लिये उच्चकोटि के लाभदायक हों। हमने उत्तमोत्तम योग जो इस रोग के लिये अत्यधिक लाभदायक है "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित कर दिये हैं, हां! कुछेक चुटकले यहां लिख रहे हैं। इनको भी साधारण न समझें बल्कि बहुत ही गुणकारी सिद्ध होते हैं।

१२८–विशूचिकारी वटी नं० १

फिटकड़ी भुनी १ ग्राम, आक के लोंग २ ग्राम, हल्दी २ ग्राम, लाल मिरचों के बीज १ ग्राम। सबको सूक्ष्म पीसकर रत्ती-रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—१–१ गोली घण्टा-घण्टा भर के अन्तर से पीपल के पत्तों को घोट छान कर उस जल के साथ दें। इससे शीघ्र ही वमन तथा अतिसार बन्द होकर आराम हो जाता है।

१२९–विशूचिकारि वटी नं० २

यह गोलियां नं० १ से कम लाभदायक हैं किन्तु फिर भी अच्छी हैं। फिटकड़ी ३ ग्राम, गुलकन्द १२ ग्राम खूब सूक्ष्म पीसकर रत्ती-रत्ती की गोलितां बनालें।

मात्रा—२ गोली १--१ घण्टा के अन्तर से देते रहें।

१३०—विशूचिकार्क

एक वर्ष हमारे प्रान्त में विशूचिका का जोर हुआ तो निम्नलिखित अर्क से बहुत ही लाभ पहुंचा, यहां तक कि रोगी स्वयं अर्क मांगकर पी लेता था। जिस समय रोगी को कोई दवा हजम न हो सकती हो और प्यास अत्यधिक हो तो ऐसे समय में इस अर्क के पेट में जाते ही रोगी को चैन और आराम पहुंचाता है।

योग--विशुद्ध जल १ बोतल में फिटकड़ी ३ ग्राम सूक्ष्म पीसकर मिलादें यही विशूचिकार्क है। इसे रोगी को घूंट २ करके पिलाते रहें।

आंतों के रोग

ईश्वर ने ग्रान्तड़ियों को ग्रामाशय का कूडा कर्कट साफ करने के लिये बनाया है। ग्रत: जो दवा ग्रामाशय के लिए लाभदायक हैं वह ग्रन्तड़ियों के लिये भी। जो ग्रामाशय के लिए हानिकारक होती है, वह ग्रन्तडियों के लिए भी हानिकारक है।

प्रवाहिका

यदि पीड़ा उठकर मल त्याग करने की इच्छा बारम्बार हो ग्रौर टट्टी खुलकर न लगे तो यह पेचिश कहलाती है। इसमें रक्त ग्रौर ग्रांव दोनों मिश्रित होकर भी ग्राते हैं। यह दो प्रकार की होती है। सादक ग्रौर काजब। इसकी परीक्षा विधि यह है कि रोगी को सरयाली बूटी के बीज या इस्बगोल पानी से फंका दें। यदि यह बीज मल के साथ निकल ग्रावें तो सादिक है वरना काजब समझें। काजब के लिए कस्ट्रायल ६० ग्राम दूध में मिलाकर पिलायें। ४--५ दस्त होकर सुद्दे निकल जाते हैं ग्रौर ग्राराम हो जाता है। यदि सादक हो तो निम्नलिखित प्रयोग बरतें। सादक ग्रौर काजब यूनानी शब्द हैं।

१३१–ग्रकसीर पेचिश

इस योग की विशेषता इसके प्रक्षेप ग्रौर विधि से ही प्रगट है। इससे दस्त, पेचिश ग्रौर गर्भवती स्त्रियों की पेचिश भी शीघ्र दूर हो जाती है।

योग--फिटकड़ी १०० ग्राम, ग्रफीम विशुद्ध १० ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर मिलालें ग्रौर फिर दो सिकोरों में बन्द करके उनके मुंह को कपरोटी करके सूखने पर पांच सेर उपलों की ग्रांच दें। सफैद रंग का पौडर प्राप्त होगा।

मात्रा---१ रत्ती, गुलकन्द में मिलाकर खिलादें या जल के साथ दें।

(१३२) द्वितीय योग—यह प्रयोग दीवान बोघाराम जी द्वारा प्राप्त है। फिंटकड़ी सफैद कच्ची ४ ग्राम, सेलखड़ी भस्म १ ग्राम, दूध २५० ग्राम में डालकर तत्क्षण पी जाय वरना विलम्ब होने से दूध फट जायगा। उत्तम तो

यह है कि पुड़िया मुंह में डालकर ऊपर से दूध पी लिया जाय। दवा अन्दर पहुंचते ही जादू का सा प्रभाव दिखायेगी। कदाचित ही द्वितीय मात्रा देने की आवश्यकता होती है। भोजन में केवल दूध ही दें। बाकी सब चीजो से परहेज रखें।

(१३३) तृतीय योग—फिटकड़ी भुनी १ ग्राम, २ नग निर्बीज मुनक्का में रखकर प्रातः सायं खिलायें कुछेक मात्राओं से ही ६—६ मास की पुरानी प्रवाहिका मिट जाती है।

(१३४) चतुर्थ योग—फिटकड़ी भुनी १ भाग, गेरु ४ भाग सूक्ष्म पीसकर रखें और उसमें से ४ ग्राम प्रातःसायं दूध की लस्सी के साथ दें।

(१३५) पांचवा योग—फिटकड़ी भुनी और मांई समभाग लेकर सूक्ष्म पीसकर रखें। मात्रा १ ग्राम छाछ या पानी से दिवस में तीन बार दें। यह दस्तों के लिए भी लाभदायक है।

अतिसार

जो मल पतला होकर बार बार निकलता है, उसे अतिसार या दस्त कहते हैं। यद्यपि अतिसार के अनेक भेद हैं-तथापि निम्नलिखित योग सब प्रकार के अतिसारों में लाभदायक हैं।

(१३६) प्रथम योग—फिटकड़ी ५ ग्राम, पीपल की छाल का कोयला ५ ग्राम दोनों को सूक्ष्म पीसकर समभाग ६ पुड़िया बना कर रखें। मात्रा एक पुड़िया पानी के साथ दें। रोगी की आयु और बलाबल देखकर मात्रा न्यूनाधिक भी दी जा सकती है। प्रातः सायं दोनों समय देना उचित है। प्रायः एक ही दिन से लाभ प्रतीत हो जाता है।

(१३७) द्वितीय योग—जो पुराने दस्तों को बन्द करने के लिए विशेष लाभदायक है। फिटकड़ी १० ग्रेन, बच का क्वाथ ४५० ग्राम, अफीम १ ग्रेन। सबको मिलाकर रोगी को पिलादें। यह एक मात्रा है, ऐसी मात्रायें दिन में ३ या ४ बार पिलाना चाहिए। इससे पुराने दस्त और रक्त का आना बिलकुल बन्द हो जायगा।

बच का क्वाथ बनाने की विधि

३०० ग्राम पानी को इतना गरम करें कि खोलने लगे फिर खोलते हुए पानी को आग पर से उतार कर उसमें ३० ग्राम बच का चूरण डालकर भिगोदें और छानकर उसमें से ४५ ग्राम प्रतिवार लिया करें।

नोट—फिटकरी भुनी १-१ ग्राम की मात्रायें दिन में तीन बार खिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

२—योग नं० १३१ और १३२ भी दस्तों को बन्द करने के लिए लाभदायक हैं।

संग्रहणी

संग्रहणी उस रोग का नाम है जिसमें रोगी को ४-५ दस्त प्रतिदिन आ जाते हैं और फिर एक दो दिन कब्ज हो जाती है। यह रोग बडी कठिनता से जाता है। निम्नलिखित योग संग्रहणी के लिए अत्यन्त लाभदायक हैं।

१३८—प्रयोग

योग—फिटकड़ी भुनी ५ ग्राम, शुद्ध रसौंत ३० ग्राम दोनों को पानी का छींटा देकर घोट लें और समभाग १४ गोलियां बनालें।

मात्रा—१ गोली प्रातःकाल मक्खन में मिलाकर खिलायें और ऊपर से अधबिलोये दही की लस्सी पिलादें। आराम हो जायगा। इससे प्रवाहिका को भी आराम हो जाता है। आंतों के रोगी को निम्नलिखित भोजन के सिवाय और कुछ न दिया जाय तो उत्तम है।

भोजन—चावल, गाय के दही के साथ या साबूदाना भी दिया जा सकता है।

नाभि (नाफ) टलना

यह रोग आजकल प्रायः युवकों में अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है। जिससे भूख बन्द हो जाती। कई बार तो मरोड़ और पेचिश भी होने लगती है। आंव और खून मिले हुए दस्त होते हैं। पिंडलियों में ऐसा प्रतीत होता है मानो मांस को काटकर निकाला जा रहा है। काम काज करने को जी बिल्कुल नहीं चाहता, सारांश बड़ा कष्टदायक रोग है।

कारण—अपनी शक्ति से अधिक काम करना, जोर लगाना आदि। मेरे विचार में बहुमैथुन से भी यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा

प्रायः ही लोग पेट को मलवाना इसकी चिकित्सा के लिये पर्याप्त समझते हैं, किन्तु मेरे विचार में पेट को मलवाने से कई बार दुष्परिणाम भी निकल आते हैं। अतएव यथा सम्भव इससे बचना चाहिए और दूसरे पेट को

मलवाने से सदैव के लिये आदत पड़ जाती है और फिर यह रोग बार बार होने लग जाता है। यहां मैं एक ऐसी विधि निवेदन करता हूँ जिससे बिना दवा भी लाभ हो जाता है। इसके बाद एक योग भी लिखूंगा।

विधि

प्रात:काल हाथ मुंह धोकर बिलकुल सीधे खड़े हो जावें और आगे को बिलकुल धीरे धीरे झुकते जावें और अपने पांवों पर हाथ लगाकर फिर सीधे खड़े हो जावें फिर उसी प्रकार धीरे धीरे झुक कर हाथ लगावें। इसी प्रकार ७ बार करें। फिर गरम गरम दूध में थोड़ा सा घी मिलाकर खड़े खड़े पी जावें। इसी प्रकार कई दिन क्रिया करने से नाभि (नाफ) असली जगह पर आ जायगी।

१३९–प्रयोग

फिटकड़ी सफेद १० ग्राम, माजू हरा या खुश्क १० ग्राम दोनों को बारीक पीसकर गाढा सा लेप बनालें और नाफ की जगह पर लगाकर ऊपर खद्दर का कपड़ा भिगोकर रखदें। नाफ (नाभि) अपनी जगह पर आ जायगी।

वृक्क रोग

वृक्क शूल—में फिटकड़ी अत्यन्त लाभदायक है। यह रोग बड़ा कष्टदायक है। रोगी को बड़ी तकलीफ होती है।

चिन्ह--वृक्क स्थान से पीड़ा उठकर टीसें पीठ की ओर तथा अण्डकोषों में निकला करती हैं। मूत्र रुक रुक कर आना और कब्ज भी इसका चिन्ह है।

१४०—अकसीर वृक्क शूल

फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, कलमी शोरा ७ ग्राम, सूक्ष्म पीस करके समभाग ७ पुड़िया बनालें और एक पुड़िया गाय के ताजा दूध से प्रातः सायं दिया करें।

पथ्य—बादी और गरिष्ठ बस्तुओं से, चावल और उड़द की दाल से तथा शीतल जल से परहेज रखें।

भोजन—मूंग या अरहर की दाल मसालेदार, गेहूं का फुल्का आदि।

१४१—गुर्दे की पथरी

फिटकड़ी भुनी दो दो ग्राम प्रातः सायं खिलाना भी गुर्दा और मसाना की पथरी को तोड़ता है। यदि कष्ट अधिक हो तो दिन में तीन बार भी दें सकते हैं।

१४२—मधुमेह

यह वही रोग है, जिसमें रोगी को वार बार पेशाब आता है और तृषा भी अत्यधिक लगती है, यह बड़ा भयावह रोग है। इससे कोई भाग्यशाली ही जीवित बचता है। नाग भस्म इस रोग के लिए अति लाभदायक है, जिससे बार बार मूत्र का आना दूर हो जाता है। नाग भस्म बनाने की विधि और योग भी भस्मों के प्रकरण में वर्णन किया जायगा, वहां देखलें।

१४३—खून का पेशाब

यदि किसी के मूत्र में खून आने लगे तो उसके लिये निम्नलिखित चुटकला बहुत ही लाभदायक है। फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम सूक्ष्म पीसकर तीन पुड़िया बनालें और एक पुड़िया प्रातः एक सायं दूध की लस्सी के साथ दें। रक्त का आना बन्द हो जायगा।

मूत्र कृच्छ

मूत्रकृच्छ, मूत्र के जलकर आने को और, मूत्र के साथ रक्त या पीप आने को सूजाक कहते हैं। इसके कई कारण हैं—

कारण—सबसे बड़ा कारण तो सूजाक रोग से ग्रसित रोगिणी के साथ संभोग करना है। तथापि गरम वस्तुओं का अधिक सेवन, बाजारी व्यभिचारिणी स्त्रियों के साथ मैथुन करने से भी यह रोग हो जाता है।

चिन्ह—चिन्ह तो इसके कारणों में ही लिखे जा चुके हैं, अलबत्ता इतना और अधिक याद रखें कि जब पीप अधिक निकलती हो तो पिचकारी न करें। जब किसी खाने की दवा से पीप बन्द हो जाय तो फिर पिचकारी करने में कोई हानि नहीं।

युनानी हकीमों के निकट फिटकड़ी सूजाक के लिये अति लाभदायक वस्तु है, अतः यहां नीचे सूजाक के बहुत से अनुभूत योग अंकित करते हैं, ईश्वर न करे यदि एक दवा से लाभ न हो तो दूसरी बनाकर लाभ उठायें। अवश्य आराम हो जायगा।

फिटकड़ी और सुजाक का रोग—सुजाक के ऊपर फिटकड़ी एक बहुत उत्तम वस्तु है। मारिस हैनरी कालिस नामक डाक्टर का कथन है कि—

Alum is one of the most reliable medicines for the cure of gonorrhoea. The use of solutions of silver nitrate etc. are emminently dangerous but the frequent and repeated applications of the weak solution of alum produces good beneficial effects.

अर्थात् सुजाक की बीमारी को अच्छी करने के लिए फिटकड़ी एक बहुत विश्वसनीय और संकोचक औषधि है। Nitrate of Silver का सोल्यूशन संदिग्ध भयंकर परिणामों वाला है। इसलिय सुजाक की चिकित्सा में नाईट्रेट औफ सिल्वर का प्रयोग बुद्धिमानी पूर्ण नहीं कहा जा सकता। लेकिन फिटकड़ी के कमजोर सोल्यूशन का बार-बार उपयोग उसमें बार-बार अच्छा लाभ पहुंचाता है।

अगर सुजाक का रोग नया हो और उसमें अधिक परिमाण में गाढ़ा और चिकना पीब आता हो, मूत्र नली में असह्य जलन और सूजन हो तो फिटकड़ी का नरम रुप में बनाया हुआ सोल्यूशन दिन में दो तीन वार उपयोग में लेना चाहिये। अगर रोग पुराना हो तो इस सोल्यूशन को कुछ तेज बनाकर हफ्ते में १ या २ वार प्रयोग में लेना चाहिये।

नये रोग के रोगी को मूत्रेन्द्रिय पर १ लोटा भर ठण्डे पानी की धार लगाना चाहिये। फिर ३० ग्राम पानी में १ गेहूँ के बरावर फिटकड़ी डाल कर उस पानी को सिरंज में भरकर उसकी मूत्रेन्द्रिय में पिचकारी मारना चाहिये। इस प्रकार पिचकारी मारने का काम पहले दिन आधे २ घंटे के अन्तर से करते रहना चाहिये, और हर वार पिचकारी लगाने से पहले १ लोटा पानी उसकी मूत्रेन्द्रिय पर डालते रहना चाहिए। रात्रि के समय में भी निद्रा के थोड़े टाइम को छोड़ कर बाकी समय में इस कार्य को चालू रखना चाहिये। इसके साथ जौखार अथवा गोखरु या ककड़ी के वीज इत्यादि कोई भी मूत्रल औषधि घोटकर दूध और पानी की लस्सी के साथ पेट में पिलाना चाहिये।

दूसरे दिन आधे घण्टे की बजाय एक-एक घण्टे पर पिचकारी लगाना चाहिये। इस प्रकार ४८ घण्टे तक इस प्रयोग को चलाने से पीब का आना, जलन और सूजन शान्त हो जाती है। फिर भी सुजाक के जहर को बिलकुल नष्ट करने के लिये एक दो सप्ताह तक इस प्रयोग को चालू रखना चाहिये। पर ४८ घण्टे का प्रयोग पूरा होने के बाद वार-वार पिचकारी देने की आवश्यकता नही रहती। उस समय २५० ग्राम पानी में ३० गेहूं के बरावर फिटकरी डाल कर तीन बार उसकी पिचकारी लेना चाहिए। ४८ घण्टे के प्रयोग से रोग की शान्ति देखकर सुजाक आराम हो गया, ऐसा समझ कर चिकित्सा बन्द कर देने से सुजाक का शेष रहा हुआ विष कुछ दिनों के पश्चात् फिर से आक्रमण कर देता है और फिर पहले की तरह जल्दी आराम नहीं होता।

मुर्जरिवात अकबरी में लिखा है कि अगर सुजाक का रोग किसी दवा से अच्छा न हो तो १ ग्राम फुलाई हुई फिटकड़ी और एक ग्राम मिश्री मिला कर सुबह पेशाब करने से पहले खाकर ऊपर से दूध की लस्सी पीना चाहिये। इस प्रकार ७ दिन तक इस औषधि को लेने से और इसके साथ फिटकड़ी के पानी की मूत्रनली में पिचकारी लेने से आराम होता है।

एक और यूनानी हकीम के मतानुसार रसोत १२ ग्राम, सफेद कत्था ६ ग्राम और अफीम ४ रत्ती इन सब को आधा किलो पानी में ६ घण्टे भिगो कर रखना चाहिये। फिर उस पानी को छान कर उसमें कपूर, रसकपूर, फुलाई फिटकड़ी और फुलाये हुये नीले थोथे का चूर्ण चार-चार रत्ती डाल कर

मिलाना चाहिये। इस पानी की पिचकारी रोगी की मूत्रेन्द्रिय में ३ वार लगाने से एक ही दिन में सूजन, जलन, पीब का आना बन्द हो जाता है। उसके पश्चात १० दिन तक प्रतिदिन एक या दो बार इस पिचकारी का उपयोग करते रहना चाहिये और साथ में बबूल की अन्तर छाल के काढ़े से तैयार किया हुआ घन क्वाथ ३ भाग, कवाव चीनी २ भाग, बंग भस्म १ भाग, फुलाई हुई फिटकड़ी एक भाग, इलायची के बीज १ भाग, और शक्कर ८ भाग इन सब औषधियो का कपड़ छान चूर्ण करके इस में से ६ ग्राम चूर्ण १२० ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करना चाहिये।

(१४४) सुजाक नाशक गोलियां—उत्तम स्याहजीरे का चूर्ण १ ग्राम, छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण १२ ग्राम, रेवन्द चीनी का चूर्ण १२ ग्राम, जोखार ६ ग्राम, कवाबचीनी का चूर्ण १२ ग्राम, फुलाई हुई फिटकड़ी १२ ग्राम, बिरोजे का सत्व १२ ग्राम, हजरतवेर १२ ग्राम और गिलोय का सत्व १२ ग्राम, इन सब चीजों को पीस कर इनमें चन्दन का १२ ग्राम उत्तम तेल डाल देना चाहिये। इन सब चीजों को पानी के साथ खरल करके तीन तीन ग्राम की गोलिया बना लेना चाहिये।

इनमे से प्रतिदिन सवेरे शाम एक एक गोली खाकर उसके ऊपर शक्कर डाला हुआ ठंडा पानी अथवा खजूर का रस पिलाने से और पथ्य में केवल जौ की रोटी, घी और शक्कर खिलाने से ७ दिन में नया सुजाक और उससे होने वाली भयंकर जलन, सूजन और पीड़ा नष्ट हो जाती है।

(१४५) प्रथम योग—फिटकड़ी अकेली ही सूजाक के लिये लाभदायक सिद्ध हुई है। निम्नलिखित कथा से आपको इसका अनुमान हो जायेगा।

हकीम नासरदीन से मैंने एक दिन यूं ही स्वाभाविक सूजाक का प्रयोग पूछ लिया, तो वह फरमाने लगे कि युवावस्था में मुझे एक बार सूजाक हो गया था। हर समय पीप बहती थी और मूत्र त्याग के समय ऐसी पीड़ा होती थी, मानो प्राण ही निकल जायेंगे। मूत्र त्याग के समय अत्यन्त भय प्रतीत होता था।

यद्यपि मैंने बहुत से इलाज भी किये किन्तु तनिक भी लाभ नहीं हुआ इसी प्रकार ६ मास व्यतीत हो गये। एक बार मुझे राजस्थान के एक ग्राम में एक रोगी की चिकित्सार्थं जाना पड़ा। वहां तालाब के पानी के अतिरिक्त और कोई पानी पीने को नहीं मिलता था। मुझे प्यास लगी हुई थी, इस कारण से मैंने जाते ही पानी के लिए हाथ बढाया तो लोग कहने लगे, हकीम साहब तनिक ठहर जाइये पानी गदला है, इसे साफ करदें। चुनांचे उन्होंने फिटकड़ी घोलकर पानी साफ कर दिया। चूंकि मुझे तृषा अत्यधिक लगी हुई

थी इस लिए अच्छी तरह पेट भर कर पानी पी लिया किन्तु जब थोड़ी देर बाद मुझे पेशाब की इच्छा हुई तो डरते डरते पेशाब करने बैठ गया, किन्तु उस समय मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब कि मुझे पेशाब करने में तनिक भी कष्ट नहीं हुआ। बहुत विचार करने पर समझ में आया कि यह फिटकड़ी की ही करामात थी। फिर वहां मैं कई दिन तक रहा और वही फिटकड़ी मिश्रित जल पीता रहा। इससे दरद, पीब आदि दूर होकर मुझे स्वास्थ्य प्राप्त हो गया। इस कथा से आपको मालूम हो गया कि अकेली फिटकड़ी ही सूजाक के लिये अद्भुत गुणकारी वस्तु है।

(१४६) द्वितीय योग— यह प्रयोग मेरे परम मित्र स्व० हकीम दिलवरहुसैन खां भट्टी द्वारा प्राप्त हुआ था।

योग— फिटकड़ी भुनी ५ ग्राम, इलायची छोटी ४ ग्राम, काठी बेरी के पत्ते ५ नग। तीनों को सूक्ष्म पीसकर गाय के मक्खन में मिलाकर चटायें, इससे मूत्रकृच्छ्र तीन दिन में तथा सूजाक १ सप्ताह में मिट जाता है।

(१४७) तृतीय योग—यह प्रयोग एक सन्यासी द्वारा प्राप्त है। सूजाक के लिए लाभदायक वस्तु है। बनाकर लाभ उठावें।

फिटकड़ी लाल १॥ ग्राम, कीकर के हरे पत्ते १२ ग्राम। दोनों को कूंडे में सूक्ष्म घोटकर ४०० ग्राम पानी मिलाकर छान लो, फिर ४८ ग्राम देशी खांड की मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पिलादो। दस दिन सेवन करने से बिलकुल आराम हो जायगा।

(१४८) चतुर्थ योग—यह अत्यन्त सरल योग है और सूजाक के लिए अतीव गुणकारी दवा है।

फिटकड़ी भुनी १४ ग्राम, मिश्री १४ ग्राम। दोनों को परस्पर सूक्ष्म पीसकर समभाग ७ पुड़ियां बनालें। फिर प्रतिदिन १ पुड़ियां ठीक उसी समय, जबकि पेशाब करने बैठें, मुंह में डाल कर ऊपर से दूध की लस्सी पीता जावें और साथ २ नीचे पेशाब करता रहे। सात दिन इस प्रकार सेवन करना रोग को निर्मूल कर देता है।

(१४९) पांचवां योग—फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, गेरु ४० ग्राम, दोनों को सूक्ष्म पीसकर मिलालें और १॥ ग्राम से ४ ग्राम तक बलाबल अनुसार दूध की लस्सी के साथ प्रातः सायं देते रहें। यह दवा नये सूजाक के लिए अतीव गुणकारी है।

(१५०) छटा योग—मिट्टी के ठेकरे में १२ ग्राम फिटकड़ी डालकर आग पर रखें जब पिघल तब जावे एक ग्राम अफीम का चूरण छिड़क कर लोहे

की सींक से हिलाते रहें, जब अच्छी तरह भुन जावे तब पीसकर रखलें और उसमें से एक ग्राम दवा गाय के दूध की लस्सी से दिया करें। इस साधारण सी दवा से ६—६ मास का पुराना सूजाक भी दूर हो जाता है।

पुराने सूजाक की दवा

(१५१) सातवां योग—गंदा बहरोजा २५ ग्राम, फिटकड़ी २५ ग्राम। फिटकड़ी को दरदरा कूटकर बहरोजा के साथ एक कूजे में डालकर ऊपर से ढांक दें और २—३ उपलों की अग्नि में रखें ताकि दोनों चीजें पिघल कर एक जान हो जावें, फिर शीतल होने पर सूक्ष्म पीस, समभाग पिसी हुई मिश्री मिलाकर रखें।

मात्रा—५ ग्राम ताजा कच्चे गौ दुग्ध के साथ प्रातः सायं खिलाते रहें। एक सप्ताह में आराम हो जायगा।

१५२—रक्त चूरण

यह हिन्दुस्तानी दवाखाना देहली तथा हमदर्द दवाखाना देहली में तैयार होकर अत्यधिक बिकता है। सूजाक को दूर करने के लिए लाभदायक है। हमने भी परीक्षा करके गुणकारी पाया है।

फिटकड़ी भुनी और गेरू समभाग लेकर दोनों को सूक्ष्म पीसलें। फिर इन दोनों के समभाग देशी खांड मिलालें और प्रतिदिन प्रातः सायं तीन ३ ग्राम दवा शर्बत बजूरी २५ ग्राम के साथ सेवन कराया करें।

१५३—दवा कड़हाई वाली

यह प्रयोग हकीम श्री अजमलखां गोलोकवासी के चिकित्सालय में बनता रहा है और अब भी यह दवा हिन्दुस्तानी दवाखाना व हमदर्द दवाखाना देहली में इसी नाम से अत्यधिक तैयार होकर बिक रही है। कथन का तात्पर्य यह है कि सुजाक नया हो, चाहे पुराना हो दोनों के लिए ही लाभदायक है।

गन्धक, शोरा कलमी प्रत्येक १०—१० ग्राम। दोनों को पीसकर लोहे की कड़हाई में डालें और एक दूसरी कड़हाई इस पर ढककर दोनों का मुख सम्पुट करके सूखने पर नीचे मन्द २ अग्नि जलावें। जब मायदा की भांति हो जावे तब नीचे उतारकर भुनी हुई फिटकड़ी १० ग्राम का चूर्ण मिलादें।

मात्रा—१॥ ग्राम शर्बत बजूरी २५ ग्राम के साथ दें।

१५४—सन्यासी अकसीर

यह फिटकड़ी का तेल है जो इस रोग के समस्त प्रयोगों का सम्राट है,

क्योंकि इसकी दो-तीन मात्राओं से ही पुराने से पुराना सुजाक भी दूर हो जाता है। रसायनिक लोग इससे कई काम निकालते हैं। हां बनाने में तनिक कठिनता होती है। यदि आप तनिक साहस और परिश्रम करके बना लेंगे तो फिर अनुभव करने पर सारा कष्ट भूलकर प्रसन्न हो जायेंगे, क्योंकि एक बार का बनाया २० रोगियो के लिये पर्याप्त होगा। योग इस प्रकार है।

प्रथम एक मिट्टी की कुलफी ढक्कन सहित किसी अच्छे कारीगर (कुम्हार) से बनवा लें। जब सूख जावे तब नीलाथोथा देशी, सुहागा, हरा कांच १०-१० ग्राम लेकर पृथक २ सूक्ष्म पीसकर मिलालें और सादा कूपजल को बून्द २ डालकर खरल करते रहें। जब खूब बारीक हो जावे तब कुलफी और ढक्कन के भीतरी भाग पर समतल लेप करदें और फिर आवे में रखकर बरतनों के साथ पकवालें। दोनों रोगनी निकलेंगे। फिर फिटकड़ी सफेद इच्छानुसार कुलफी में भरकर उसको ढक्कन से बन्द करदें और खूब कपरोटी करके रक्खें। फिर एक गढ्ढा खोदकर उसमें ४० किलो घोड़े की लीद डाल दें। फिर एक बालिश्त मिट्टी की तह बिछादें। उसके ऊपर ३५ किलो बकरी की मेंगणियों को जला दें, फिर ४० दिन बाद जब आप कुलफी को निकालेंगे तब अत्यन्त सुन्दर लाल या सफेद रंग के तैल से भरी कुलफी निकलेगी, जिसमें चिकनाहट भी होगी। यह अक्सीर है। इसको किसी मजबूत शीशी में सुरक्षित रखें और सुजाक वाले को दो बूंद बताशे में डालकर दें।

नोट—कुलफी को लीद के नीचे रखना चाहिये।

इस दवा को वर्षा ऋतु में बनाना चहिये। दूसरे इसमें रसायनिक अकसीरी गुण हैं। इसलिए तनिक भूल हो जाने से कभी कभी बना भी नहीं करता, इसलिए एक दम दो तीन जगह बनावें ताकि यदि एक जगह गलती हो जावे तो दूसरी जगह ठीक बन जावे। इसी प्रकार ५-१० कुलफियां भी एक साथ बनवा लें।

१५५—सूजाक की पिचकारी

फिटकड़ी १० ग्राम, नीलाथोथा ५ ग्राम, कत्था १० ग्राम। तीनों को एक किलो पानी में इतना उबालें कि आधा पानी जल जावे। फिर उतार कर छानलें और दिन में ३ वार पिचकारी करते रहें। सुजाक के लिए गुणकारीं है।

१५६—अन्य योग

यह पिचकारी का योग नये और पुराने दोनों प्रकार के सुजाक के लिये लाभदायक है। यह प्रयोग प्रसिद्ध प्राज्ञ-चक्षु हकीम नाबीना साहिब के चिकित्सालय का बिशेष योग है, इसलिए इसकी उत्तमता का इससे बढकर क्या प्रमाण हो सकता है।

फिटकडी १० ग्राम, नीलाथोथा ५ ग्राम दोनों को खूब भूनकर सूक्ष्म पीसलें और १ किलो पानी के साथ बोतल में डालकर घोललें। चार पहर में दवा को कई बार हिलादें। फिर प्रति दिन ५—६ बार पिचकारी दिया करें।

१५७—अमिश्रित योग

कच्ची फिटकड़ी १ ग्राम २५० ग्राम पानी में हल करके शीशी में सुरक्षित रखें और दिन में दो तीन बार पिचकारी किया करें।

नोट—पिचकारी करने की विधि यह है कि दवा को कांच की पिचकारी में भरकर, पिचकारी मूत्र नली में करनी चाहिए। पिचकारी बहुत जोर से न करें और पिचकारी करते ही गुप्तेन्द्रिय की नाली को थोड़ी देर पकड़े रखें ताकि दवा अन्दर अपना असर कर सके फिर हाथ छोड़ दें। पिचकारी की दवा का पानी बाहिर निकल पड़ेगा।

पथ्य—गरम, खट्टी वस्तुयें, मांस, चाय, मिरच, मैथुन से परहेज रखें। खाने को दूध, डबल रोटी, खीर दूध में पकाया हुआ जौ का दलिया, खिचड़ी, चावल, मूंग की दाल, साबूदाना आदि।

गुदा के रोग

गुदा के रोगों में कुछेक रोगों के लिए फिटकड़ी बहुत ही लाभदायक वस्तु है। यहां उन्हीं रोगों का वर्णन और चिकित्सा लिखी जाती है।

अर्श

अर्श (बवासीर) दो प्रकार की होती है, एक खूनी और दूसरी बादी। खूनी में रक्त निकलता है और बादी में हर समय गड़बड़ और कोष्ठबद्धता रहती है। यह बड़ा कठिन रोग है, जिसमें आजकल दुर्भाग्य से ६० प्रतिशत लोग अवश्य ग्रसित होंगे। निम्नलिखित योग इस रोग के लिए लाभदायक हैं।

कुछेक खाद्य योग

बवासीर के मस्सों को गिरा देना भी एक उत्तम चिकित्सा है, इसलिये कई हकीम मस्सों पर कुछ वाह्य दवा लगाकर मस्सों को निकाल देते हैं और वह केवल इसी दवा के प्रताप से अच्छी कमाई कर रहे हैं। किन्तु इसकी पूर्ण चिकित्सा तो तभी होती है, जबकि साथ ही कोई ऐसी दवा भी सेवन कराई जाय जो भीतरी तौर पर रोग मिटाने का गुण रखती हो। अतएव हमने अनेक ऐसे ही खाद्य योग, जो खिलाने से मस्सों को सुखा देते हैं तथा वाह्य योग जो मस्सों को जड़ से उखाड़ देने वाले तथा तेल, धूनियां आदि अपने सारे अनुभूत योग अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनुभूत योग चिन्तामणि' में स्पष्ट छाप दिये हैं। कुछेक ऐसे योग जो इस पुस्तक से सम्बन्ध रखते हैं-वह यहां अंकित किये जा रहे हैं। प्रथम कुछेक खाद्य योग और फिर मस्सों को गिरा देने वाले योगों का वर्णन करेंगे।

१५८–प्रथम योग

यह योग खूनी बवासीर के लिये लाभदायक है और खून को बहुत जल्द रोकता है। फिटकड़ी १० ग्राम, नागकेशर २५ ग्राम, खांड देशी दोनों के समभाग। तीनों दवाइयों को पीसकर मिलालें और समभाग ५ ग्राम बजन की १४ पुड़ियां बनावें। १ पुड़िया प्रातः और १ पुड़िया सायंकाल साठी चावलों के पानी से दिया करें। अति गुणकारी दवा है।

१५९–अन्य योग

फिटकरी को हुक्के में रखकर पिलाना भी खूनी बवासीर के लिये अतीव गुणकारी है।

(१६०) प्रथम योग—फिटकरी भुनी १-१ ग्राम प्रातः सायं पानी के साथ खिलाना भी खूनी बवासीर के लिये लाभदायक है। बवासीर दूर करने के लिये सोमल भस्म भी अतीव गुणकारी है। भस्मों योग के प्रकरण में देखें।

१६१–अर्श नाशक मलहम

इससे बवासीर के मस्से मुर्झाकर गिर जाते हैं। बहुत उत्तम कोटि का योग है।

योग—फिटकड़ी ६० ग्राम को एक सफैद मोटे कागज में लपेट कर जंगली उपलों की आग में रखदें, ताकि जोश खाकर खुश्क हो जावे। फिर इस फिटकड़ी को, मिट्टी के ऐसे बर्तन में-जिसमें २-३ बार दही जमाई गई हो, नीम के डण्डे के साथ पाव भर घी मिलाकर घोटें, यहां तक की सुर्ख होजावे। फिर किसी डिबिया में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय सोया के २५ ग्राम बीज पानी में पकाकर पीसलें और दो दिन तक प्रातः सायं मस्सों पर बांधें, फिर उपरोक्त मलहम रूई के फाहे पर लगाकर गुदा पर बांधें। प्रातः सायं एक सप्ताह लगाने से मस्से खुश्क हो जावेंगे।

इसी योग को कुछ दिन लगाने से मस्से खुश्क हो जावेंगे। गाय का मक्खन दुगनी मात्रा में मिलाकर मलहम बना रखें। शौचादि से निवृत होकर दोनों समय मलहम लगाया करें। मस्से झड़ जायेंगे।

(१३२) द्वितीय योग—सुखदर्शन के पत्तों को कूटकर टिकिया बनालें और फिटकड़ी भुनी २ ग्राम, भंग १ ग्राम सूक्ष्म चूर्ण बनाकर इस टिकियां पर डाल कर मस्सों पर कसकर लंगोटा बांध लें। इस प्रकार सात दिन लगाने से पूरा आराम हो जावेगा।

१६३–सरल टोटका

फिटकड़ी भुनी पानी में घोलकर दोनों समय गुदा धोने से भी मस्से कुछ दिनों में खुश्क हो जाते हैं।

१६४–अर्श पीड़ा को शान्त करने का योग

यदि अर्श की पीड़ा के कारण अत्यन्त वेदना हो रही हो तो थोड़ी सी फिटकड़ी और हरमल बूटी को घोटकर टिकियां बनावें और गुदा पर बांधें। दो तीन बार टिकियां बांधने से दरद बन्द हो जावेगा।

अपथ्य—गर्म पदार्थ यथा मांस, बैंगन, अधिक मिर्चें व खटाई और तेल की चीजें।

पथ्य—शीघ्र पाचक मूंग की दाल, खिचड़ी, फुलका, हरीरा आदि।

कांच निकालना

(१६५) प्रथम योग—चिरकाल तक पेचिश के रोग तथा कोष्ठबद्धता होने से गुदा की बल्लियां ढीली हो जाती हैं। चिन्ह यह है कि प्रारम्भ में तो मल त्याग (शौच) करते समय कांच निकला करती है किन्तु रोग जीर्ण हो जाने पर खांसने से या हंसते समय भी कांच निकलने लगती है। इसके लिये निम्नलिखित योग लाभदायक है।

फिटकड़ी और मांई को उबालकर उस पानी से गुदा को धोवें और फिटकड़ी तथा जूते की भस्म (राख) कांच पर लगाकर कांच को भीतर प्रविष्ट करावें।

(१६६) द्वितीय योग—तीन रत्ती फिटकड़ी को ३० ग्राम पानी में घोलकर उस पानी से शौच से निवृत होकर कांच और अर्श के मस्सों को धोना चाहिये।

(१६७) तृतीय योग—फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर डिबिया में बन्द रखें, और शौच के बाद इस पिसी हुई फिटकड़ी को थूक में हल करके कांच के चारों और लगाकर अन्दर करदें। प्रथम दिवस ही इससे पर्याप्त लाभ दृष्टिगोचर होगा।

(१६८) चतुर्थ योग—फिटकड़ी १५ ग्राम, दो किलो पानी में हल करके किसी खुले बर्तन या टब में डालकर रोगी को १०–१५ मिनट उसमें बिठाया करें। इससे भी कांच का निकलना कुछ दिन में बन्द हो जावेगा।

पथ्य—गर्म पदार्थों के सेवन और परिश्रम से परहेज करें।

भोजन –रोगी को दूध और चावल खाने को दें।

ज्वरों का वर्णन

ज्वर देह की उष्मा है, जो हृदय से उठकर समस्त देह में फैल जाती है। ज्वरों के अनेक भेद हैं, जिनमें से कुछेक का यहां चिकित्सा सहित वर्णन किया जाता है।

पित्त ज्वर

पित्त ज्वर दो प्रकार का होता है। एक में पित्त रगों में सड़ जाने से हर समय ज्वर रहता है। दूसरा दौरे से आया करता है। कम्प ज्वर भी अत्यन्त गरमी से हुआ करता है। ऐसा युनानी मत है।

१६९–अकसीर बारी रोक

फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, पोस्त का चूर्ण ४० ग्राम मिलाकर सूक्ष्म पीसलें। इसकी मात्रा बड़ों को १ ग्राम से दो ग्राम तक तथा बालकों को आधी रत्ती दें। इस दवा को ज्वर आंने से दो तीन घंटा पहले ताजा पानी से खिलादें और उस दिन रोगी को सारे दिन उपवास करायें। एक बार में ही लाभ हो जायेगा। यदि पुनः ज्वर आ जाय तो फिर हलका सा जुलाब देकर पेट साफ करके दवा दें। अवश्य आराम होगा।

१७०–शोरे वाला अगद

फिटकड़ी २५ ग्राम, कलमीशोरा ५० ग्राम। दोनों को घृतकुमारी के रस में ३ घंटा खरल करके शराव सम्पुट करें और ३ किलो उपलों की आग दें। शीतल होने पर निकालकर सूक्ष्म पीसकर रखें।

मात्रा--१ रत्ती ताजा पानी के साथ दें।

१७१–सर्व ज्वर मर्दन

वरकिया हरताल १० ग्राम, फिटकड़ी २० ग्राम, नीम के पत्तों का रस ५० ग्राम। सबको खरल में पीसकर नुगदा सा बनालें। उपरोक्त विधि से तीन किलो उपलों की आंच में फूंकलें। सुनहरी रंग की भस्म निकलेगी।

मात्रा—१ रत्ती शर्बत बजूरी या ताजा पानी के साथ दें।

१७२–ज्वर नाशक सन्यासी योग

यह योग हमारे एक मित्र को किसी संन्यासी से प्राप्त हुआ था। मित्र महोदय का कथन है कि गत ४४ वर्ष से मैं इसको आजमा रहा हूं। फिटकड़ी सफेद २५ ग्राम, बताशे ५० ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर तवे पर डालें और नीचे आग जलादें। जब दोनों का रंग काला होकर टिकिया सी बन जावे (बहुत जल न जावे) तब उतार कर सूक्ष्म पीसलें और शीशी में रखें।

मात्रा—४ रत्ती से एक ग्राम तक उचित अनुपान से दें। प्रत्येक प्रकार के ज्वर को लाभदायक है।

१७३–अर्क फिटकड़ी

फिटकड़ी, नौशादर, कलमीशोरा प्रत्येक दो २ ग्राम लेकर १८० ग्राम पानी में घोललें। मात्रा १५ ग्राम, दिन में तीन बार दें। ज्वर के लिए लाभदायक है। ज्वर नाशक, स्वेदक तथा मूत्र जारी करने वाला है।

१७४–कम्प ज्वर का अगद

फिटकड़ी सफेद ३० ग्राम, काली मिरच तीन ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। ज्वर आने से तीन घण्टा पहिले एक ग्राम की एक मात्रा ताजा पानी से खिलावें। यह साधारण सी दवा ९९ प्रतिशत अनुभूत है। यदि सादा जुलाब देकर आंतों को साफ कर लिया जावे और फिर यह दवा दी जाय तो शतप्रतिशत सफलता मिलती है। मानो क्वीनीन से उत्तम और सस्ती वस्तु है।

विषम ज्वर

प्राचीन हकीमों ने इस ज्वर का कारण वर्षा ऋतु के कारण जलवायु में दोष उत्पन्न होना बताया है, किन्तु आधुनिक डाक्टरी मत मलेरिया का मच्छर काटना मानते हैं। संक्रामक ज्वर के दिनों में, रात्रि में सर्दी और दिन में गरमी हुआ करती है।

चिन्ह—विषम ज्वर के लक्षण निम्नलिखित हैं। जिनसे प्रत्येक मनुष्य मालूम कर सकता है। सख्त गरमी का मालूम होना, बेचैनी, प्लीहा वृद्धि, आमाशय के आसपास पीड़ा होना, जाड़ा लग के ज्वर चढना आदि इसके प्रसिद्ध लक्षण हैं। इस ज्वर से प्रतिवर्ष यत्न करने पर भी लाखों प्राणी काल का ग्रास बनते हैं। इस ज्वर के लिए, निम्नलिखित योग अति प्रभावक है।

इनमें से कुछेक तो ऐसे हैं जो क्वीनीन से किसी प्रकार काम नहीं। बनाकर स्वदेशी वस्तुओं का सत्कार कीजिए।

१७५—मलेरिया अगद

यह वह प्रयोग है जिसके लिए हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह क्वीनीन से किसी भी अंश में कम नहीं। यदि संभव हो तो मलेरिया के दिनों में इसे बनाकर मुफ्त वितीर्ण किया करें।

फिटकड़ी भुनी, सुहागा भुना, नोशादर प्रत्येक ३—३ ग्राम, कलमीशोरा ५ ग्राम, कुटकी चूर्ण १८ ग्राम। समस्त द्रव्यों को लगातार दस घंटे घोटकर सुरक्षित रखें। बस मलेरिया का अगद तैयार है।

मात्रा—तीन रत्ती से चार रत्ती तक पानी से, दूध से या अर्क सौंफ के साथ दें। चढे ज्वर को उतारता है और उतरे ज्वर को रोकता है।

१७६—विषम ज्वर अगद नं० २

यह विषम ज्वर के अतिरिक्त बारी के ज्वर के लिए भी लाभदायक है। हमने सैंकड़ों रोगियों पर परीक्षा करके अनुभूत पाया है, यह हमारी फार्मेसी में तैयार भी मिलता है। यदि इस दवा को ज्वर आने से पहले दे दिया जावे तो ज्वर रुक जावेगा और यदि चढे ज्वर में दे दिया जाय तो पसीना आकर ज्वर उतर जायगा।

फिटकड़ी भुनी २५ ग्राम, गेरु २५ ग्राम, शक्कर कच्ची ६० ग्राम तीनों को सूक्ष्म पीसकर मिलालें।

मात्रा—एक ग्राम से दो ग्राम तप्त ज्वर होने से दो घण्टा पहिले दें। यदि चढे हुए ज्वर में देना हो तो सौंफ के क्वाथ के साथ एक घण्टा के अन्तर से दिन में ३ बार दें।

१७६—स्वदेशी फनन्टीन

यह दवा चढे हुए ज्वर में दी जाती हैं जो एंटीफेवरीन और फनस्टीन से गुणों से किसी प्रकार भी कम नहीं। दो तीन मात्रा से ही पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। स्वदेशी आविष्कार का सन्मान करो और विदेशों की ओर बहती अर्थधारा पर नियन्त्रण करो।

फिटकड़ी कच्ची २५ ग्राम, सेलखड़ी ५० ग्राम इन दोनों औषधियों को तमाम दिन गौ दुग्ध में खरल करके ६—६ ग्राम की टिकिया बनालें और कूजे

में बन्द करके ७ किलो उपलों की निर्वात स्थान में अग्नि दें। शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर शीशी में डाल रखें।

मात्रा—६ रत्ती से एक ग्राम तक प्रति २ घण्टा के बाद शर्बत उन्नाब या सादा पानी से दें।

१७८–स्वदेशी फनस्टीन नं० २

यह योग भी उपरोक्त योग से किसी प्रकार भी न्यून नहीं, बल्कि उतरे ज्वर में देने से बारी रोकने को भी लाभदायक है।

फिटकड़ी सफेद ३० ग्राम, आक का दूध ७५ ग्राम। प्रथम फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर लोहे के तवे पर डालकर नीचे अग्नि जलादें। फिटकड़ी के पिघलने पर आक का दूध उस पर डालदें और लोहे की सींख से हिलाते रहें। जब तमाम दूध जज्ब होकर फिटकड़ी फोला बन जाय तब उतारकर खरल में पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा २ ग्रेन से ४ ग्रेन तक शीतल जल से दें। फनस्टीन का काम देगी। यदि ज्वर आने से पूर्व घण्टा २ के अन्तर से दो मात्रा खिला दें तो ज्वर नहीं होगा।

१७९–सफैद गोलियां

फिटकड़ी, चूना (Lime) अनबुझ दोनों को समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और पानी के योग से चने के बराबर गोलिया बनालें।

मात्रा—१ गोली से दो गोली तक उचित अनुपान या केवल सादा पानी से दें। चढे हुए और उतरे हुए ज्वर की दोनों अवस्थाओं में लाभदायक है। परीक्षा करें और लाभ उठावें।

तेइया (तिजारी) ज्वर

यह ज्वर एक दिन छोड़कर आता है. इसमें पसीना बहुत आया करता है और प्राय: मिचलाहट और वमन की शिकायत भी रहती है। इसके लिए विशेष योग निम्नलिखित हैं।

(१८०) प्रथम योग—फिटकड़ी भुनी १ ग्राम, काली मिरच १ ग्राम दोनों को पीसकर रखें और नीबू को काट कर दोनों टूकडों पर इस दवा को छिड़क कर ज्वर आने से १ घंटा पहिले चुसायें।

(१८१) द्वितीय जादू असर योग—यह अद्वितीय योग है, इसकी तुलना का अन्य योग मिलना कठिन है। फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, धतूरा के पत्ते ३० ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर एक-एक रत्ती की गोलियां बनालें और ज्वर होने से २ घण्टा पहिले, फिर एक घण्टा बाद, तद्पश्चात ठीक ज्वर

होने के समय पर २—२ गोलियां ताजा पानी से खिलादें। उस दिन ही ज्वर न होगा। यदि किसी कारण से हो भी जाय तो फिर दूसरी बार इसी प्रकार दें।

(१८२) तृतीय योग—फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, करंजवा की गिरी १० ग्राम दोनों को तुलसी के पत्तों के रस में सूक्ष्म पीसकर दो-दो ग्रेन की गोलियां बनालें और द्वितीय योग की भांति सेवन करायें।

(१८३) चतुर्थ योग—फिटकड़ी भुनी अकेली ही दौरे से आने वाले ज्वरों के लिये अति लाभदायक है। यदि भुनी हुई फिटकड़ी की ४—४ ग्रेन की पुड़ियां बनालें और फिर नीचे लिखी हुई विधि के अनुसार सेवन करायें और रोगी को हिदायत करदें कि ४ ग्रेन दवा पानी से सेवन करने के बाद पीपल वृक्ष की दातुन करता रहे और उसका रस चूसता रहे तो उससे अवश्य ही ज्वर का दौरा रुक जाता है।

१८४—फिटकड़ी भस्म

यह भस्म क्नीनीन से गुणों से कहीं अधिक उत्तम है, एक तो सस्ती और दूसरे लाभदायक। अवश्य बनाकर लाभ उठावें।

फिटकड़ी सफेद ५० ग्राम के छोटे टुकड़े करके किसी चीनी या मृतिका पात्र में डालकर उन पर आक का दूध इतना डालें कि तर हो जायें। खुश्क होने पर फिर डालदें। इसी प्रकार ७ बार तर व खुश्क करें। फिर शराव सम्पुट करके ७ किलो उपलों की आंच दें और शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखें।

मात्रा— एक रत्ती खांड या गुलकन्द में दें। यह अकेली दवा बहुत से ज्वरों को समूल उखाड़ देती है तथा दमा के लिए भी लाभदायक है।

नोट— हमें एक ऐसा योग मिला है जो केवल ६ घण्टे में हर प्रकार के ज्वर को उतार देता है। अनुभवी का कथन है कि इस से एक बार तो तपेदिक का ज्वर भी उतर जाता है किन्तु ज्वर फिर हो जाता है। यह योग हमें बड़ी कठिनता से प्राप्त हुआ था, किन्तु इस पुस्तक से सम्बन्ध न रखने के कारण उस योग को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुभूत योग चिन्तामणी' में छाप दिया है, उसमें देखलें। इस अर्क को हमने हजारों रोगियों पर अनुभव करके ठीक पाया है।

१८५—जीर्ण ज्वर

गौदन्ती हरताल ५० ग्राम को आक के दूध में तीन बार तर व खुश्क

करके फिर एक दिन आक के दूध में खरल करके टिकिया बनाकर किसी मिट्टी के कूजे में बन्द करके ५ किलो उपलों की अग्नि दें। भस्म हो जायगी। फिर इसको सूक्ष्म पीसकर इसके समभाग फिटकड़ी या अक्सीर तपेदिक फिटकड़ी भस्म मिलाकर रखें।

मात्रा दो रत्ती गुलकन्द में मिलाकर दें। इससे जीर्ण ज्वर और कास दूर हो जाती है। यदि रोगी पित्त प्रकृति का हो तो उसको एक पुड़िया प्रातःकाल गाय के ताजा दही से खिलादें। इससे कई जीर्ण ज्वर के रोगी स्वस्थ हो चुके हैं।

क्षय–तपेदिक

यह एक उष्मा है जो उत्तमांगों में प्रायः हो जाती है। खांसी आती है और शरीर का वजन घटने लगता है। इसके तीन दर्जे हैं। प्रथम श्रेणी में चिकित्सा अति सरल, द्वितीय श्रेणी में कठिन और तृतीय श्रेणी में असाध्य होती है।

प्रथम दरजे में चित्त हर समय उदास रहता है। रोगी साधारण गर्मी अनुभव करता है। बाकी दरजों में ज्वर हर समय रहता है, भोजनोपरान्त उष्मा बढ़ जाती है। हाथों की हथेलियां और पांवों के तलवे जलते रहते हैं।

कारण—जीर्ण ज्वर की चिकित्सा में लापरवाही करना या गलत इलाज करना तथा बहुमैथुन, अत्यधिक चिन्ता व परिश्रम एवं न्युमोनिया आदि बिगड़कर तथा क्षय के कीटाणुओं से यह रोग उत्पन्न होता है।

१८६–अकसीर तपेदिक

पारा, गन्धक आमलासार, हरताल वर्किया १२–१२ ग्राम, ६ कागजी निम्बुओं के रस में खूब सूक्ष्म पीसकर चक्रिकायें बनालें और सूखने पर एक मिट्टी के कूजे में ६० ग्राम फिटकड़ी सूक्ष्म पिसी हुई की आधी तह बिछाकर ऊपर चक्रिकायें रखदें और उनके ऊपर शेष फिटकड़ी डालकर मुख बन्द करदें। जमीन में इस प्रकार गाडें की कूजे का ऊपरी (मुख का) किनारा जमीन से ४ अंगुल नीचा रहे। फिर उसके ऊपर ५ किलो उपले जलादें। प्रातःकाल सवांग शीतल होने पर बर्तन को निकाल लें और उसमें से फिटकड़ी पृथक करके चक्रिका को फेंक दें। उस फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रख। तपेदिक के रोगी को आधी रत्ती की मात्रा प्रातःकाल बताशा में रखकर खिलाते रहें। निराश से निराश अवस्था में भी लाभदायक है।

पथ्य—तपेदिक और प्रत्येक प्रकार के ज्वर में उष्ण पदार्थों, गरम वस्तुओं और ग्रिष्ठ (देर से पचने वाली) चीजों से परहेज रखें।

भोजन—शीघ्र पाचक, ठण्डी तरकारियां, कद्दू, खुरफा कम मिरच डालकर गेहूं के फुलके के साथ खायें। दूध, चावल, मूंग की खिचड़ी, जौ के सत्तू आदि २।

त्वचा रोग

उपदंश (सिफलिस)

यह एक संक्रामक रोग है, जिसमें पहले पहल गुप्तेन्द्रिय पर फुन्सी या क्षत प्रकट होता है। तनिक रोग पुराना होने पर सारी देह पर छोटे २ चक्कते निकल आते हैं, जिनकी रंगत आरम्भ में गुलाबी और कुछ दिन बाद कालिमा-युक्त हो जाती है। इस रोग के लिए एक विशेष योग भस्मों के प्रकरण में सीमल भस्म के नाम से पढें। यहां भी कुछेक योग निवेदन किये जाते हैं।

(१८७) प्रथम योग—कलमीशोरा ६० ग्राम एक लोहे के तवे पर रखकर उसे अंगारों पर रखें और उसके बाद हरमल के रस का चोया दें। तमाम शोरा तैल बन जायगा। फिर उसे तत्क्षण आग पर से उतारलें। पन्द्रह मिनट बाद पुनः अंगारों पर रखें। जब पिघलकर तैल जैसा बन जावे तब १८ ग्राम फिटकड़ी पीसकर उसमें डालदें। थोड़ी देर में दोनों पिघलकर मिल जावेंगे, तब उतारलें। जब तनिक ठंडा हो जाय तब देशी कपूर १२ ग्राम की डली पर लपेटते जावें और शीतल होने पर अंगारों पर रखदें। जब खूब जोश आ जावे तो दारचिकना बिल्लोरी बिना चमक वाला १० ग्राम की डली उस तैल के अन्दर खूब ही पकावें तथा पन्द्रह मिनट के बाद उतारलें। फिर उस दारचिकना में से थोड़ा सा लेकर आग पर डालकर देखें। यदि धुंआं दे तो समझें कि अभी कच्चा है, उसे फिर पकावें। जब धुंवा देना बन्द हो जावे तो तैयार समझें।

मात्रा—१ रत्ती मक्खन में। इससे एक सप्ताह में बिना मुंह आये आराम हो जाता है। किन्तु यह याद रखें कि कच्चा बिलकुल न रहे। शेष शोरा आदि को संभालकर रखें क्योंकि पुनः जब दवा बनाने की आवश्यकता हो तब इसी में फिर बनाई जा सकती है।

(१८८) द्वितीय योग—संखिया सफेद की १२ ग्राम की डली को पिसी हुई फिटकड़ी के मध्य में रखकर शरात्र सम्पुट करके सूखने पर ५ किलो उपलों की आंच देलें, खील हो जावेगी। फिर तमाम को सूक्ष्म पीसकर रखें।

मात्रा—१ चावल से ४ चावल तक गाय के मक्खन में दें। इससे उपदंश को शीघ्र आराम हो जाता है। एक रोगी बहुत सी चिकित्सा करने के बाद जब निराश हो चुका था, तो उसे अन्त में इसी दवा से एक सप्ताह में पूर्ण आराम हो गया।

१८९–सरल चुटकला

दो ग्राम भुनी हुई फिटकड़ी प्रात: सांय पानी के साथ खिलाना उपदंश के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

(१९०) दूसरा चुटकला—उपदंश के जखमों को फिटकड़ी के पानी से धोना भी लाभदायक है।

अपथ्य—खटाई, गुड़, तेल, अचार, गरम चीजों से यथा लहसुन, प्याज, मसूर आदि।

पथ्य भोजन—चने की दाल, भिंडी, चूरमा आदि

कण्डु (खुजली)

कण्डु दो प्रकार की होती है। खुश्क और तर। खुश्क में खुजाने से कुछ नहीं निकलता और तर में खुजाने से रक्त या पीत जल सा निकला करता है।

कारण—खुश्क में वात रुका हुआ होता है और तर में कफ मिला होता है।

(१९१) प्रथम योग—फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, मुर्गी के एक अण्डे की सफेदी मिलाकर मालिश करें। हर प्रकार की कण्डु के लिए अतीव लाभकारी है।

(१९२) द्वितीय योग—फिटकड़ी ६ ग्राम, गुलाब का तैल ३६ ग्राम, सिरका खालिस ६० ग्राम मिलाकर शरीर पर मालिश करें। खुश्क और तर दोनों प्रकार की कण्डु के लिए लाभदायक है।

(१९३) तृतीय योग—फिटकड़ी को सरसों के तेल में पीसकर बदन पर मालिश करने से खुश्क और तर दोनों प्रकार की खुजली मिट जाती है। गरम पानी में फिटकड़ी घोलकर उससे स्नान करना भी लाभदायक है।

१९४–आईन्टमैंट आफ एलम

अर्थात् फिटकड़ी का मरहम। यह कण्डु के लिए अतीव लाभदायक मलहर है। फिटकड़ी, शोरा, जिंक सल्फेट तीनों को समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और उसमें शुद्ध वैस्लीन मिलाकर मलहर बनालें। जिस स्थान पर कण्डु

(खुजली) होती हो उस स्थान पर लगादें। तुरन्त ठंड पड़ जायगी और आराम हो जायगा।

१९५—दद्रु तथा चम्बल

फिटकड़ी गौमूत्र या सिरके में पीसकर प्रातः सायं लेपकर दिया करें। दाद, चम्बल दोनों के लिये ही लाभदायक है।

१९६—दाद का पौडर

फिटकड़ी भुनी, कच्चा सुहागा, गंधक आमलासार प्रत्येक १०-१० ग्राम मिश्री ३० ग्राम, प्रथम की तीनों चीजों को सूक्ष्म पीसकर उनमें मिश्री (पृथक पीसकर) मिलादें और दिन में तीन बार दाद पर यह पौडर ५ मिनट तक मलते रहा करें। तीन चार दिन में दाद को आरम होना आरम्भ जायगा।

१९७—अकसीर चम्बल

चने की दाल आवश्यकतानुसार लेकर रात्रि को बकरी के दूध में भिगो दें और प्रातःकाल एक ग्राम फिटकड़ी मिलाकर खूब घोटें। जब खूब सूक्ष्म हो जाय तब चम्बल पर लेप करदें। तीन चार दिन लगाने से आराम हो जायगा।

स्नायु रोग (नहरुवा)

यह रोग तालाब, जोहड और पोखर का पानी पीने से होता है। वास्तव में इसका एक वारीक कीड़ा होता है जो तालाबादि का जल पीने से जल के साथ अन्दर चला जाता है और साल डेढ साल बिना कष्ट के पड़ा रहता है और फिर जब बच्चे देता है तो दिन प्रतिदिनं बढ़कर कहीं से मुंह भी निकाल लेता है।

(१९८) प्रथम योग—प्याज नग एक फिटकड़ी १० ग्राम, भाड का धुवां १० ग्राम। तीनों को मिलाकर गरम करके नहारुआ के मुंह पर बांधें। इसी प्रकार सात दिन बांधने से पूर्ण आराम हो जायगा।

(१९९) द्वितीय योग—फिटकड़ी, सोहागा समभाग लेकर पीसलें और शहद में मिलाकर लेप किया करें। आराम हो जायगा।

२००—क्षत

फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, एक किलो गरम पानी में मिलाकर दो बार धोया करें। इससे शीघ्र ही क्षत साफ होकर अंकुर आ जाता है। जख्मों के

गन्देपन को दूर करने के लिये फिटकड़ी में अद्भुत गुण हैं। इससे गला सडा मांस दूर हो जाता है।

२०१—अकसीर जख्म

फिटकड़ी भुनी को पानी में हल करके उससे जख्मों को खूब धोयें। फिर भुनी फिटकड़ी सूक्ष्म पीसकर जखम पर छिड़क दें और ऊपर से बट वृक्ष के कोमल पत्तों को मीठे तेल में खूब घोटकर लेप करदें। इससे जख्म में पीप भी नहीं पड़ेगी और आराम भी जल्दी हो जायगा।

२०२—जादुई पाषाण

फैलने वाले और सड़े हुए जख्मों को ठीक करने के लिए यह मिश्रण अति प्रभावक है, इसीलिए इसका नाम जादुई पाषाण रखा है।

फिटकड़ी १६ भाग, हीरा कसीस २४ भाग, तूतिया १६ भाग, नौशादर १ भाग, जंगार २ भाग। सबको मिलाकर पिघलावें और फिर सांचों में डालकर वत्तियां बनालें। इसको घाव पर फेरने से क्षत के दूषित अंकुर जल जाते हैं।

२०३—क्षतहर मलहर

मीठा तेल ५० ग्राम, पानी ५० ग्राम, दोनों को मिलाकर खरल में डालकर घोटें। जब मक्खन की भांति सफेद हो जाये तब फिटकड़ी १५ ग्राम, राल ५० ग्राम, कत्था ५० ग्राम सूक्ष्म पीसकर मिलालें। मलहर तैयार है। किसी स्वच्छ वस्त्र पर लगाकर जख्म पर बांध दें।

२०४—शय्या के क्षत

जब रोगी चिरकाल तक बिस्तर पर पड़ा रहता हैं तो उसके शरीर पर प्रायः जख्म पड़ जाते हैं। उसके लिए यह मलहर उपादेय है।

फिटकड़ी भुनी दो ग्राम सूक्ष्म पीसकर अण्डे की सफेदी अच्छी तरह मिलाकर घाव पर लेप कर दिया करें।

२०५—व्रण रिपु मलहर

व्रण की असली चिकित्सा तो शल्य क्रिया ही है, किन्तु निम्नलिखित मलहर भी शीघ्र फोड़ देती है, तथा जो फोड़ा ठीक होने में न आता हो, उस पर तनिक यह मलहर लगादें, फिर देखें कि कितनी जल्दी पीप निकल कर आराम होता है।

गाय की नूनी ५० ग्राम में फिटकड़ी १० ग्राम डालकर अग्नि पर पकालें। जव फिटकड़ी जल जाये तब उसे घोटकर डिविया में रखें और फोड़े पर लेप करदें।

नोट—'अनुभूत योग चिन्तामणि' प्रथम भाग में एक ऐसा योग छापा गया है जो लगाते ही दस मिनट में व्रण (फोड़े) को फोड़ देता है। मानो दवा क्या है नश्तर का प्रतिनिधि है। पुस्तक रसायन फार्मेसी पो० बो० ११२५ देहली से ७) में मिल सकती है।

२०६—वात रोग

चिन्ह—जोड़ों में पीड़ा और कुछ काल वाद शोथ भी हो जाता है। यदि रात्रि के समय पीड़ा हो तो कफजनित वरना वात जनित समझना चाहिये।

इसकी चिकित्सा पद्धति तो यह है कि जिस दोष की अधिकता हो उसको पकाकर रेचन द्वारा निकाल दें। एक दूसरा योग निम्नलिखित है।

२०७—वातनाशक वटिका

फिटकड़ी भुनी, धतुरे के कोमल पत्ते, लाल अरण्ड के पत्ते, आक की कोपलें। सब चीजों को समभाग लेकर, सूक्ष्म पीसकर चने के बराबर गोलियां बनालें। मात्रा एक गोली गरम पानी या गरम चाय अथवा दूध के साथ। इससे गठिया, रींगनवाय (गृध्रसी) आदि रोग नाश होते हैं।

(२०८) द्वितीय योग—सोमल भस्म जो उपदंश के प्रकरण में वर्णित है—वह भी इस रोग के लिए अतीव लाभकारी है। प्रथम जुलाब देकर फिर उस दवा का सेवन करायें।

(२०९) तृतीय योग—जब शरीर की सन्धियों पर शोथ आ गया हो या चोट अथवा मोच आदि के कारण शरीर के किसी जोड पर सूजन हो तो निम्नलिखित मिश्रण बहुत फायदा करता है।

फिटकड़ी १६ ग्राम, सिरका व ताडी प्रत्येक ६०० ग्राम सब चीजों को आपस में खूब मिलालें और इस मिश्रण में कपड़ा तर करके शोथयुक्त स्थान पर रखते रहें।

पथ्य—कच्चा दूध, लस्सी, छाछ, आलू, अर्बी, भिण्डी आदि से परहेज रखें। चने की दाल, मसालेदार गोश्त का शोरवा आदि खा सकते हैं।

२१०—रींघनवाय (गृध्रसी)

बड़ा ही कष्ट देने वाला रोग है। इससे रोगी को किसी प्रकार भी

चैन नहीं पड़ता । बेचारा कभी टांग को किसी कपड़े से बांधता है और कभी रगें दबवाता है, सारांश भांति २ के उपाय करता है तथा कष्ट भोगता है ।

चिन्ह—यह पीड़ा नितम्ब के ऊपर से उठकर प्रायः पांव के टखने तक जाती है । इस रोग की चिकित्सा में भी गत वातनाशक वटिका सेवन करायें । अवश्य लाभ होगा ।

२११–चोट लगने पर प्रथम योग

फिटकड़ी एक ग्राम को सूक्ष्म पीसकर १० ग्राम घी में डालकर आग पर पकायें । जब फिटकड़ी जमने लगे तब ऊपर से घी निथार लें । इस घी में मैदा और खांड मिलाकर हलवा तैयार करें और रोगी को खिलायें और इसी हलवे में उपरोक्त फिटकड़ी लपेट कर गोली बनालें और खिलावें । तीन चार दिन खिलाना पर्याप्त है ।

(२१२) द्वितीय योग—यह अत्यन्त उत्कृष्ट योग है, जो मोमियाई से भी बढकर है । प्रथम इस योग को सेवन करायें फिर उपरोक्त हलवे वाला योग सेवन कराकर आश्चार्यजनक लाभ देखें । ऐसे रोगी जो खाट पर से उठ भी न सकते थे, दो-तीन मात्राओं से चलने फिरने लग गये । इससे उत्तम योग फिर साधारण वस्तुओं में, आज तक देखने में नहीं आया । जब चोट लगे तब इस योग को तत्काल सेवन करायें ।

(२१३) तृतीय योग—फिटकड़ी ५० ग्राम को चार पहर तक आक के दूध में सूक्ष्म पीसकर टिकिया बनालें और सराव सम्पुट करके ५ किलो उपलों की आग दे लें । फिर इस फिटकड़ी के साथ १५० ग्राम पारा मिलाकर पुनः ४ पहर आक के दूध में खरल करें और पूर्वोक्त विधि से टिकिया बनाकर अग्नि दें । तीसरी बार बिना पारा मिलाए केवल आक के दूध से पीसकर आग दें और शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर रखें ।

मात्रा—एक रत्ती बताशे में रखकर प्रायः सायं खिलाया करें । इसका सेवन एक सप्ताह पर्याप्त है । भोजन पौष्टिक खिलाना आवश्यक है ।

(२१४) चतुर्थ योग—सिंगरफ भस्म योग भी चोट लगने पर अकसीर है । इस योग को इसी पुस्तक में भस्मों के प्रकरण में देख लें ।

(२१५) पांचवां योग--फिटकड़ी कच्ची ५ ग्राम से १० ग्राम तक सूक्ष्म पीसकर रखें । फिर उबलता हुआ दूध एक मिट्टी के सकोरे में डालकर ऊपर से फिटकड़ी डालकर उस बर्तन को किसी भारी बर्तन से बीस मिनट तक ढककर रखदें । फिर निकाल कर देखें । तमाम दूध की दही जम चुकी होगी । तनिक शीतल करके पिलावें और रोगी से कहें कि यदि हो सके तो कुछ मिनट टहलें ।

पुरुषों के गुप्त रोग

वाजीकरण मन्दता

यहां इस रोग के कारणों का वर्णन नहीं कर सकते, कारण इस संक्षिप्त पुस्तक की पृष्ठ संख्या बढ जायगी। यहां केवल फिटकड़ी के गुण लिख देना अभीष्ट है इसलिये शुष्क विवाद करने में कुछ आनन्द नहीं आता। हां तो "अनुभूत योग चिन्तामणी" मूल्य ७) वाली मगाकर पढें। इसको पढ लेने के बाद साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी प्रमेह, स्वप्नदोष, वाजीकरण मंदता, दौर्बल्य और शीघ्रपतन आदि का सरलता पूर्वक इलाज कर सकता है। इस पुस्तक का विस्तार से परिचय इसी पुस्तक के अन्त में पढें।

प्रमेह

बिना इच्छा और आवश्यकता के वीर्य का निकल जाना प्रमेह कहलाता है। इसमें स्वप्नावस्था में स्वप्नदोष हो जाना भी सम्मिलित है। साधारणतया मूत्र करते समय पूर्व या मध्य में अथवा अन्त में सफेद द्रव्य के निकलने को प्रमेह या धातु गिरना कहते हैं।

आज कल हमारे ९५ प्रतिशत नवयुवक इस रोग में ग्रसित हैं किन्तु तनिक भी परवाह नहीं करते। हालांकि यह रोग भीतर ही भीतर उसके शरीर को घुन की भांति खाये जाता है। प्रत्यक्ष में तो कुछ विशेष प्रतीत नहीं होता किन्तु वास्तव में मनुष्य बिलकुल निकम्मा बन जाता है।

इस रोग को दूर करने के बहुत से अनुभूत और अद्भुत प्रयोग "अनुभूत योग चिन्तामणि" में प्रकाशित कर चुके हैं। हां! फिटकड़ी सम्बन्धी योग इस स्थान पर लिख रहे हैं। परीक्षा करके लाभ उठावें।

२१–६दूसरा चुटकला

फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, गेरु ५ ग्राम सूक्ष्म पीसकर रखें।

मात्रा—१ ग्राम दूध की लस्सी से दिया करें। कुछ दिन के सेवन से टट्टी में लाली प्रकट होगी। यह रोगी के स्वस्थ होने का चिन्ह है।

(२१७) तृतीय योग—फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, सत गिलोय १० ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर मिला रखें।

मात्रा—३ ग्राम प्रातः ३ ग्राम सायं ताजा जल के साथ। इससे गिनती के दिनों में पुराना प्रमेह भी दूर हो जाता है।

२१८—अमिश्रित योग

एक ग्राम भुनी फिटकड़ी प्रातः ताजा जल से खिलाना प्रमेह को दूर करता है।

(२१९) द्वितीय योग—चार रत्ती भुनी फिटकड़ी मक्खन में मिलाकर खिलाने से प्रमेह मिट जाता है। एक सप्ताह खिलाना काफी है।

पथ्य—धूप में चलने फिरने, मैथुन करने और गरम तथा खट्टी चीजों से परहेज करें। भोजन में मूंग की दाल, फुलका, खीर हलवा आदि खायें।

स्वप्नदोष

वैद्यों का कहना हैं कि यदि स्वस्थ युवक अकेला हो तो महीने में एक या दो बार स्वप्नदोष का हो जाना रोग नहीं है, किन्तु इससे बढ जाये तो फिर चिकित्सा की चिन्ता करनी चाहिये। यहां कुछेक आदेश लिखे जाते हैं उन पर अमल करने से बिना दवा के भी आराम हो जाता है।

कुछेक आदेश

१—रात्रि के समय पानी कदापि न पीयें।

२—सोते समय पेशाब अवश्य कर लेना चाहिये।

३—हमेशा दाहिनी करबट के बल लेटना उत्तम है।

४—शीघ्र पचने वाला भोजन करना उत्तम है।

५—विचारों को पवित्र रखें।

६—अश्लील घासलेटी साहित्य (किस्से, कहानियां, नावल) पढ़ने से परहेज करें।

७—प्रातः सायं सैर करना अति हितकर है।

२२०—स्वप्नदोषहर

फिटकड़ी १० ग्राम को लोहे के तवे पर रखकर नीचे आग जला दें। जब पिघल जावे तब उसमें ३ ग्राम अफीम पीसकर खूब मिलादें। जब भुन जावे तब उतार कर सूक्ष्म पीसलें।

मात्रा—एक रत्ती शर्बत नीलोफर के साथ दें । बनाते समय दवा जल न जाय, इसका ध्यान रखें ।

२२१—सरल योग

प्रातः सायं फिटकड़ी भुनी एक ग्राम पानी के साथ खिलाना हितकर है ।

कुछेक बाजीकरण योग

निम्नलिखित भस्में अत्यन्त बाजीकरण हैं । कुछेक मात्राओं से ही आश्चर्यंजनक ताकत पैदा हो जाती है । वह योग आगे इसी पुस्तक में भस्मों के प्रकरण में "सोमलखार भस्म" हरताल वर्किया भस्म के हैं ।

२२२—अद्वितीय तिला

प्रथम जब प्रमेह दूर हो चुके तब भीतरी तौर पर किसी भस्म को खिलाना आरम्भ करें और वाह्य तौर पर तिला का इस्तेमाल करावें ताकि रगों में रक्त का परिभ्रमण सम्यक रुपेण हो सके । तिला का नुस्खा एक तो वही है जो प्लेग रोग के वर्णन में 'फिटकड़ी का तेल' के नाम से गत पृष्ठों में छपा है । दूसरा योग नं० ९९ खांसी के वर्णन में छपा है । सेवन विधि यह है कि गुप्तांग पर पहिले भेडी के दूध की खूब मालिश करें । यहां तक कि सुर्ख हो जावे, उस समय इस तैल की कुछ बून्दें चुपड़कर ऊपर पान या अरंड का पत्ता बांध दें और पट्टी लपेटकर ऊपर धागा बांध दें । प्रातः खोल डालें । इसी प्रकार कुछ दिन में सब दोष मिट जावेंगे ।

परहेज—खटाई, शीतल वस्तुयें, मैथुन आदि परिश्रम से परहेज करें । भोजन पौष्टिक, हलवा, दूध, खीर, चूरमा आदि ।

स्त्रियों के विशेष रोग

स्त्रियां लज्जा की सजीव मूर्ति होती हैं। सच पूछो तो वह घुल-घुलकर जान दे देती हैं, किन्तु धन्य है उनके शील और मौनता पर कि अनेक रोग का कष्ट झेलने पर भी पतिदेव के सामने जिक्र तक नहीं करतीं। सम्भवतः अपने रोग का वर्णन करने में भी लज्जा बाधक होती हैं। अतएव मैं स्त्री समाज से निवेदन करूंगा कि वह रोग को अपने सम्बन्धियों से न छुपाया करें, क्योंकि कई रोग प्रत्यक्ष में साधारण प्रतीत होते हैं किन्तु वास्तव में वह स्वास्थ्य और जीवन के लिए घातक शत्रु से कम सिद्ध नहीं होते। इसी प्रकार मैं पुरुष समाज से भी कहे बिना नहीं रह सकता कि वह इस ओर से लापरवाह न रहें और स्त्रियों का इलाज कराने में गफलत न करें। अब हम स्त्रियों के कुछेक रोगों का वर्णन और संक्षिप्त चिकित्सा लिखते हैं।

२२-३मासिकधर्म की अधिकता

यह रोग बड़ा ही भयानक है। इससे समस्त देह का शोणित निकल कर रोगिणी अति निर्बल होकर इह लीला को समाप्त कर देती है।

कारण—गरम वस्तुओं के अधिक सेवन से तथा ऋतुमति से मैथुन करने से प्रायः यह रोग होता है।

चिन्ह—शरीर अत्यन्त निर्बल, चेहरा पीला, तृषा की अधिकता का होना इसमें आवश्यक है।

२२४-अकसीर रक्तशोधक

फिटकड़ी भुनी, गेरू, सेलखड़ी समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें। बस दवा तैयार है। इसमें से २ ग्राम प्रातः सायं दोपहर को खशखश की ठण्डाई के साथ दें तो और भी उत्तम है। बहुत जल्द रक्त बन्द हो जायगा।

२२५-विशेष योग

यह प्रयोग मासिक धर्म के रक्त को रोकने के लिए बहुत ही उत्तम है। देखो भस्मों के प्रकरण में योग 'नाग भस्म'।

प्रदर

इस रोग में योनि से सफेद, लाल, पीला द्रव स्राव होता रहता है। यह भी कठिन रोग है। इससे स्त्रियों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

कारण—गर्भाशय का शोथ या टल जाना, बहुमैथुन आदि इसके कारण होते हैं।

चिन्ह--चित्त उदास, कटि पीड़ा, बार बार मूत्र करने की इच्छा रहती है। योनि में कण्डु और इससे सफेंद या पीला पानी सा बहता है।

२२६–प्रदरारि प्रथम योग

२५ ग्राम फिटकड़ी को दरदरी कूटकर कडछी में डालकर अग्नि पर रखें जब पिघल जावे तब ६ ग्राम सूक्ष्म पिसा हुआ ढाक का गोंद पानी में मिलाकर छिड़कते जावें। जब सब मिलकर भुन जावे तब उतारलें और ३५ ग्राम धाय के पुष्प मिलाकर पीसकर रखलें।

प्रयोग विधि--६ ग्राम दवा थोड़े से पानी में घोलकर उसमें साफ मलमल का कपड़ा भिगोकर योनि में रखें। इस प्रकार कुछ दिन रखने से आराम हो जावेगा।

(२२७) द्वितीय योग– फिटकड़ी, अनार का छिलका दोनों समभाग लेकर कूट पीसकर चार गुणा जल में उबालें और फिर छानकर उससे योनि धोने व पिचकारी या डूस लेने की हिदायत करदें।

अमिश्रित योग

प्रदर के लिए अकेली फिटकड़ी ही बहुत लाभदायक सिद्ध होती सेवन विधि यह है।

(२२८) प्रथम योग—दो रत्ती फिटकड़ी १५ ग्राम पानी में घोलकर प्रात: सायं पिलाने से आराम हो जाता है।

(२२९) द्वितीय योग—फिटकड़ी भुनी पीसकर प्रात: सायं पानी से खिलाते रहें। सफेद प्रदर की उत्तम दवा है।

(२३०) तृतीय योग—४ ग्राम फिटकड़ी को ३० ग्राम पानी में हल करके उसमें कपड़ा तर करके योनि के अन्दर रखने से कुछ दिन में आराम हो जाता है।

अपथ्य--गुड़, शक्कर, खटाई, गरम वस्तुयें तथा कफ व वायु उत्पन्न

करने वाली चीजों एवं अचार, लालमिरच, परिश्रम, जोर लगाने या बोझ उठाने से परहेज रखें।

भोजन—चावल, मूंग की खिचड़ी, मूंग की कम मिरचों वाली दाल, फुल्का आदि।

रजा (छोड)

यह रोग गर्भ के समान ही होता है। चिन्ह भी वही होते हैं। स्तन बढ़ जाते हैं, पेट भी मोटा हो जाता है किन्तु बालक पैदा होने के बजाय कोई लोथड़ा या विचित्र शकल की चीज पैदा हो जाती है।

कारण—मासिक धर्म रुक जाने से, रज गर्भाशय में रहकर वह विभिन्न प्रकार की शकल धारण कर लेता है।

चिन्ह—अजीर्ण, पेट अफरना, पेट को बजाने से तबले की सी ध्वनि पैदा होना इस रोग के चिन्ह हैं।

२३१—छोड की बत्तियां

फिटकड़ी को ठीकरी पर रखकर आग पर रखें और जब पिघल कर जोश खाने लगे तब उसमें नर* सूक्ष्म पीसकर छिड़कें तथा खूब मिलाकर तत्काल नीचे उतार लें और तनिक जमने पर छोटी अंगुली के बराबर लम्बी बारीक बत्तियां बनालें। इनमें से एक बत्ती गर्भाशय में इस प्रकार रखे कि तीन भाग अन्दर और एक भाग बाहिर रहे। इस प्रकार तीन दिन रखें। कष्ट से, पीड़ा से न घबरायें। इससे तीसरे दिन गर्भाशय में जो कुछ भी होगा बाहिर निकल आवेगा। किन्तु पहले भलीभांति परीक्षा करलें।

पथ्य—शीतल वस्तुओं से परहेज। भोजन में चने की दाल मसालेदार दें।

२३२—योनि कण्डु

फिटकड़ी ४ ग्राम को ३० ग्राम पानी में हल करके दिन रात में कई बार धोवें और कपड़ा तर करके अन्दर रखें।

२३३—स्तम्भक व संकोचक बत्ती

इस बत्ती को पांच मिनट योनि में रखने से अत्यन्त संकुचित हो जाती है। स्तम्भक भी है। पांच मिनट से अधिक न रखें।

फिटकड़ी सफेद १० ग्राम, सुपारी, धाय पुष्प व बेर की छाल प्रत्येक

---

*नर.........इसका नाम पूरा इसलिए नहीं लिखा कि लोग अनुचित लाभ न उठा सकें। योग्य वैद्य स्वयं समझ लेंगे।

५--५ ग्राम, सबको पृथक २ सूक्ष्मातिसूक्ष्म पीसकर मिलालें और पानी से लम्बी २ बत्तियां बनालें। बत्ती २--२ ग्राम की हों। यह बत्तियां प्रदर को भी मिटाती हैं।

२३४–संकोचक पोटली

इसको चार पांच दिन निरन्तर इस्तेमाल करते रहने से स्थाई लाभ होता है।

फिटकड़ी ४ ग्राम, अफीम १ ग्राम, माजू २५ ग्राम। तीनों को पृथक २ सुरमे की न्याई सूक्ष्म पीसकर मिलाकर घोटलें और मासिक धर्म स्नान के पश्चात १२ ग्राम दवा की पोटली बनाकर योनि के अन्दर रखें। स्तम्भक व संकोचक बत्ती के समान स्थाई लाभ होता है।

२३५–योनि का ढीला हो जाना

अधिक सन्तानोत्पत्ति से या बहु मैथुन से यह रोग हुआ करता है। किसी २ का उल्टे सीधे आसनों से अंग बाहिर निकलने लगता है, उनके लिए यह सरल प्रयोग है।

फिटकड़ी को गरम पानी में घोलकर उससे टकोर करायें और प्रात: सायं १--१ ग्राम भुनी फिटकड़ी पानी के साथ सेवन कराते रहें। प्रसूता स्त्री के यह रोग हो तो उसे यह क्रिया उस समय करनी चाहिये जबकि बालक २० दिन का हो जावे।

२३६–कुच कठोर

स्तनों का ढलक जाना स्त्रियों के लिए कुरुपता का चिन्ह है। निम्न योग से लटकी हुई छातियां कुछ ही दिन में कठोर हो जाती हैं।

फिटकड़ी ३० ग्राम, कपूर ३० ग्राम, अनार का छिलका ८५ ग्राम। सबको सूक्ष्म पीसकर रखें। रात्रि को पानी में घोलकर स्तनों पर हल्का सा लेप करके कपड़ा बांधदें। चन्द दिन लगाने से छातियां असली दशा में आ जाती हैं।

बाल—रोग

नन्हे बालक घर के खिलोने होते हैं। उनकी प्यारी २ और मीठी २ बातें रोतों को क्षणमात्र में अपनी ओर आकर्षित करके हंसा देती हैं। यदि बचपन से ही इनके स्वास्थ्य और शिक्षा दीक्षा का पूरा ध्यान रखा जाय तो भविष्य में यही खिलौने महान आत्मा बनकर सारे कुटुम्ब की शोभा और गौरव बनेंगे। मेरे इस कथन को साधारण न समझें बल्कि याद रखें कि यदि बाल्यकाल में ही बच्चों का स्वास्थ्य उत्तम न रहा तो आयुपर्यन्त वे भांति २ के रोगों में ग्रसित रहेंगे तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तथा आर्थिक उन्नति को प्राप्त न हो सकेंगे। अतएव बालकों के स्वास्थ्य का आवश्यकता से अधिक ध्यान रखा करें। परमेश्वर न करे यदि इनको कभी कोई रोग हो जाय तो आलस्य न करके तत्काल चिकित्सा करायें। इसी प्रकार इनको असत्य भाषण, चोरी, गाली-गलौज और हठ आदि की बुरी आदत भी न पड़ने दें। हम यहां कुछेक बाल रोगों की चिकित्सा लिखते हैं। यदि इससे अधिक देखना दरकार हो तो 'अनुभूत योग चिन्तामणि' को पढिये जो आपको बालकों के प्रायः ही रोगों का अनुभवी चिकित्सक बना देगी।

२३७—बालक को आंखें दुखना

फिटकड़ी भुनी ३ ग्राम, गाय का मक्खन ४ बार पानी से धुला हुआ १२ ग्राम। परस्पर मिलालें और बालक की आंखों पर लेप करदें, केवल ३ दिन के इस्तेमाल से पीड़ा, लाली दूर होकर आराम हो जायगा।

यह योग केवल बालकों के लिए ही है।

२३८—अन्यत्र

यदि नेत्राभिष्यन्द का आक्रमण बालकों पर हो रहा हो तो निम्नलिखित अर्क फिटकड़ी लाभदायक सिद्ध होता है। फिटकड़ी ३ ग्रेन, पानी ३० ग्राम में घोलकर शीशी में रखें। इस अर्क से दिन में ३—४ बार आंखों को धोना चाहिये या किसी साफ कपड़े की गद्दी भिगोकर बार २ आंखों पर लगाना चाहिये। इससे बहुत जल्द ही आराम हो जायगा। यदि पपोटों पर अधिक शोथ

हो तो प्रात.काल के समय इनको गरम दूध से धोकर और पलकों को भली भांति साफ करके इस अर्क की कुछ बून्दें आंखों में डालें।

२३९–एक विशेष योग

इस योग को तनिक सावधानी से बरतने की आवश्यकता है। फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर लोहे के तवे पर डालकर अग्नि पर रखें, जब पिघलने लगे तो उसमें थोड़ा २ नीबू का रस डालते रहें, यहां तक कि वह काले रंग की कोमल लुगदी सी बन जाये। अब इसको गरम २ हालत में ही आंखों के चारों ओर लगादें, इसके दो लेप करने से ही आराम हो जाता है। चाहे आंखें कितनी ही खराब क्यों न हों। एक लेप १२ घण्टे तक रहना चाहिये। सावधानी इतनी रखना उचित है कि दवा पपोटों के अन्दर प्रवेश न होने पाये वरना घोर पीड़ा होगी।

२४०–चुटकला

यदि गर्मी के कारण आंखें दुखती हों तो भुनी फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर मलाई में मिलाकर फोये की भांति आंख पर बांधें।

२४१–बालकों के फोले की दवा

यदि बालक की आंख में फोला पड़ गया हो तो अधिक तीक्ष्ण दवा नहीं लगानी चाहिये। इसके लिये हम एक उत्तम और सरल योग निवेदन करते हैं, जो नये फोलों और विशेषकर बालकों के फोले के लिए अकसीर है तथा चोट लगने से आंख में लाली उत्पन्न हो जाती है उसके लिए भी लाभदायक है।

योग—फिटकड़ी भुनी ५ ग्राम, श्वेत रंग का बताशा ४० ग्राम। दोनों को सूक्ष्म पीसकर रखें और सलाई से दवा आंख में डाला करें, एक सप्ताह में आराम हो जायगा।

२४२–रोहों के लिए काजल

यह हम पहले बता चुके हैं कि यदि रोग बड़ी आयु वालों को हो तो कुक्करे और यदि बालकों के हो तो रोहे के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

योग—एक खद्दर के टुकड़े को गाय के घी में तर करके उसके ऊपर सूक्ष्म पिसी हुई फिटकड़ी की जरा २ सी तह दे दें और फिर उसकी बत्ती बनाकर नियमानुसार काजल बनालें तथा उस काजल में तनिक सा गोघृत और

मिलायें जिससे कि वह कोमल हो जावे। अब इसको किसी डिबिया में सुरक्षित रखें, आवश्यकता के समय पपोटों को उलट कर तनिक सा रोहों पर लगादें, अत्यन्त लाभदायक है।

२४३—अन्य योग

पपोटों को उलट कर फिटकड़ी की डली को धीरे २ रोहों पर फिराते रहें। इससे रोहे टूट जायेंगे और शोणित बह निकलेगा, फिर तत्काल शीतल जल से धो करके फाये को शीतल जल से तर करके आंख पर रखें और दो घण्टा बाद खोलें।

२४४—बालक का मुंह आना

फिटकड़ी भुनी और मेंहदी के पत्ते समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और मुख में छालों पर छिडका करें। अति लाभदायक है।

२४५—अन्य योग

फिटकड़ी सफेद सूक्ष्म पीसकर शहद में मिलायें और रुई के फाये से छालों पर लगाया करें, अत्यन्त लाभदायक और मीठा नुस्खा है।

नोट—यदि सफेद छाले अर्थात जख्म साधारण हों तो दो रत्ती फिटकड़ी में १० ग्राम शहद मिलायें। यदि जख्म ज्यादा हों तो १० ग्राम शहद में फिटकड़ी ३ रत्ती मिलायें।

कवा गिरना

इस रोग के लक्षण पहिले लिखे जा चुके हैं अतः वहां देखलें। यहां केवल उपयोगी प्रयोग ही लिखे जा रहे हैं।

(२४६) प्रथम योग—फिटकड़ी सूक्ष्म पीसकर शहद में मिलायें और अंगुली पर लगाकर गिरे कवे को उठावें, या वैसे ही लगादें। गिरा हुआ कवा असली हालत पर आ जावेगा।

(२४७) द्वितीय योग—फिटकड़ी और चूल्हे की जली हुई मिट्टी में भी यही गुण है। प्रथम योग की भांति उपयोग करें।

(२४८) तृतीय योग—माजू ताजा २ भाग, फिटकड़ी १ भाग, दोनों को सूक्ष्म पीसकर मिलालें और कपड़छान करके रखें। इसमें से दो ग्राम की मात्रा में पानी मिलाकर गूंधें। फिर तालू के आकार का लट्ठे का कपड़ा काटकर उस पर दवा लगादें। फिर बाल मूंड कर उस पर चिपका दें। किन्तु १०–१५ मिनट बालक का हाथ तालू पर न लगने दें। इसके बाद स्वयंमेव ही चिपक जायगा। कमजोर बच्चे के दो तीन दिन और बलिष्ठ

बालक के चार दिन पट्टी लगी रहने दें। पांचवे दिन सरसों के तेल या घी से चुपड़ कर थोड़ी देर बाद धीरे धीरे उतारलें। १०-२० मिनिट के बाद फिर नया फाया चिपकादें। इसी प्रकार दो तीन पट्टी लगाने से निश्चय ही आराम हो जाता है। बच्चे का सूखना और दस्त आदि को भी साथ ही आराम हो जायगा।

२४९-बालकों की काली खांसी

दुग्धाहारी बालकों को जब खांसी हो जाती है तो वह बड़ी ही खतरनाक सिद्ध होती है। बालक के नन्हे नन्हे फेफड़े कफ को पूर्ण रूप से बाहिर नहीं निकाल सकते। दूसरे बालक अबोध होता है, इस लिए कफ को फिर निगल लेता है इस कारण से बालकों की खांसी तनिक कठिनता से जाती है। निम्नलिखित योग इसके लिये अत्ति उत्तम है।

दुग्धाहारी शिशु को दवा खिलाना कठिन विषय है। निम्न विधि से बिना किसी कष्ट के आराम हो जाता है।

फिटकड़ी भुनी पानी में घोलकर बालक की माता के स्तनों पर (विटनियों पर) लगा दिया करें। फिर बालक को दूध पिलावें। इससे कठिन से कठिन खांसी मिट जाया करती है।

२५०-काली खांसी का प्रथम योग

फिटकड़ी भुनी सूक्षम पीसकर रोगी बालक को १ ग्रेन की मात्रा खांड में मिलाकर दिया करें इससे लाभ हो जायगा।

(२५१) द्वितीय योग-फिटकड़ी २० ग्राम तवे पर रखकर पिघलालें और केले की जड़ कूट कर उसका रस निकालकर उस रस का चोवा देते रहें। यहां तक कि २० ग्राम रस शोष्ण करादें। फिर सूक्ष्म पीसकर रखें।

सेवन विधि—एक वर्ष के बालक को दो चावल की मात्रा में दो वर्ष के बालक को ४ चावल अर्क अजवायन के साथ दिया करें अति लाभदायक है।

पथ्य--चिकनी, खट्टी और शीतल चीजों से परहेज रखें।

भोजन--खिचड़ी, साबूदाना, गेहूं की रोटी, सूखी खांड इस रोग के लिए हितकर है।

२५२-बालकों के उदर रोग

बालकों के बहुधा रोग उदर विकार से होते हैं, इसलिए हम यहां दो चुटकले लिखते हैं जो बालकों के हर प्रकार के उदर बिकारों के लिए अत्यन्त लाभदायक हैं। डब्बा रोग, खांसी, दस्त, अजीर्ण के लिए भी मुफीद हैं।

फिटकड़ी भुनी, सुहागा भुना तथा नौशादर, काला नमक समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण बनालें।

मात्रा—१ रत्ती पानी में हल करके बालक को घुट्टी दिया करें।

२५२–बालकों की प्रवाहिका

फिटकड़ी भुनी १ रत्ती, गुलकन्द या दही में मिलाकर दें। बालकों की पेचिश के लिए गत पृष्ठों में अंकित प्रवाहिका वाले योग भी हितकारी हैं।

२५३–डब्बा रोग

वास्तव में यह पसली की पीड़ा होती है। इसका चिन्ह यह है कि एक पसली या दोनों पसलियों में गढे पड़ें, श्वास की गति तीव्र हो, ज्वर हो, उसको डब्बा रोग समझना चाहिए। यह बड़ा ही भयानक और घातक रोग है। हमने इसके विशेषतिविशेष योग तो "अनुभूत योग चिन्तामणि" में लिख दिए हैं, किन्तु इस पुस्तक से सम्बन्धित एक योग नीचे लिखा जाता है।

फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर रखें और इसमें से एक ग्राम की मात्रा में लेकर शहद मिलाकर हर दस मिनट के बाद बालक को देते रहने से खूब खुल-कर वमन होती है और बिना किसी प्रकार की निर्बलता और हानि के बालक को आराम हो जाता है।

२५४–छाती को कफ को साफ करना

कास के कारण बालक की छाती में कफ जम रहा हो तो ऐसे अवसर पर फिटकड़ी व शहद द्वारा वमन करा देना लाभदायक है। छाती साफ होकर खांसी में कमी हो जाती है। कदाचित शहद न मिले तो शर्बत में मिलाकर दे सकते हैं।

विभिन्न योग

अब यहां विभिन्न योग लिखे जाते हैं। प्रथम कुछेक विषो (जहरों) के अगद लिखे जा रहे हैं। फिर हर प्रकार के चुटकले लिखेंगे ।

२५५–पिस्सू, मच्छरों का काटना

यदि पिस्सू या मच्छरों के काटने से बालक के शरीर पर चक्कते पड़ जायें, खुजली चलती हो तो एक किलो पानी में ३ ग्राम फिटकड़ी घोलकर उससे बालक को स्नान करादें और फिर ऊनी कपड़ा उढाकर सुलादें ।

२५६–अकसीर सर्प दंश

यहां सर्पदंश के लिए ऐसे अगद वर्णन किए जाते हैं, जो मनुष्य के हर समय काम आ सकते है, अतएव इनको कंठस्थ कर लेना उचित है ।

फिटकड़ी कच्ची सूक्ष्म पिसी हुई ६ ग्राम पानी से फंकादें और दंशित स्थान पर नश्तर लगाकर उसके ऊपर हुक्के का गुल, नीलाथोथा, नौशादर समभाग सूक्ष्म पीसकर मलदें। ईश्वर ने चाहा तो विष दूर हो जायगा ।

(२५७) द्वितीय योग—फिटकड़ी ६ ग्राम रीठे के पानी से फंका दें, अर्थात ६ ग्राम रीठे का छिलका सूक्ष्म पीसकर २०० या २५० ग्राम पानी में घोलकर फिटकड़ी के साथ पिलावें। इससे वमन होगी। इसी प्रकार फिर पिलावें, फिर वमन होगी। यही उपचार उस समय तक जारी रखें जब तक कि रोगी को नीम के पत्ते कटु प्रतीत न हों। कारण सर्पदंशित को नीम के पत्ते कटु प्रतीत नहीं होते मानों नीम के पत्ते चबाने से कटु प्रतीत होना विष दूर हो जाने का चिन्ह है। अकेला रीठा भी विष को दूर करने के लिए अकसीर है किन्तु फिटकड़ी मिला देने से सोने पर सुहागे का काम देता है।

(२५८) तृतीय योग—यदि किसी को सांप काटे तो फिटकड़ी ४२ ग्राम, ७० ग्राम पानी में हल करके और उसमें से १२५-१२५ ग्राम कई बार पिलायें और दंशित स्थान पर भिलावे का तैल मलदें। विष दूर हो जायगा।

२५९–बिच्छु दंशन पर

जब किसी व्यक्ति को विच्छु काटे तब उसके नेत्रों में फिटकड़ी (कच्ची

या भुनी जो भी मिल सके) दुगने पानी में घोल कर डालें। पानी निकल कर आराम होगा। यदि पूर्ण आराम न हो तो दो बार पुनः इसी प्रकार कुछ बून्दें नेत्रों में डालें। अवश्य आराम होगा।

२६०–अन्यच्च

यह बिच्छु, भिड़, ततैया, मधुमक्षिका के डंक पर भी गुणकारी हैं। फिटकड़ी सफेद दो ग्राम, जमालगोटा दो ग्राम, नीलाथोथा हरा २ ग्राम सूक्ष्म पीसकर मिला रखें और आवश्यकता के समय इसमें से तनिक सा लेकर मुखलार से दंशित स्थान पर भलीभांति मलदें। तत्काल ठंडक पड़ जावेगी और विष दूर हो जावेगा।

२६१–समस्त विषों का अगद

फिटकड़ी ५ ग्राम, सुहागा ५ ग्राम दोनों को गरम पानी में मिलाकर पिलायें। विष दूर होगा।

२६२–बिच्छु, भिड़, मधुमक्षिका

फिटकड़ी की डली को पानी में घिसकर दंशित स्थान पर और उसके चारों ओर लेप करदें। बहुत जल्द ठंडक पड़ जायगी। इसी प्रकार फिटकड़ी की डली को पिघलाकर उसको गरम २ ऊपर चिपकाना भी विष और पीडा दोनों को दूर करता है।

२६३–सोमलखार का अगद

फिटकड़ी ६ ग्राम कीकर के पत्तों के क्वाथ से दें।

२६४–अहिफेन अगद

फिटकड़ी कच्ची ६ ग्राम गरम पानी में घोलकर पिलादें। वमन होकर आराम हो जायगा।

२६५–अन्यच्च

फिटकड़ी कच्ची १५ ग्राम, गाय या भैंस का दूध १ किलो जिसमें १२५ ग्राम घी मिलाया हो–पिलाते रहें। इससे खुलकर वमन होगी, फिर पिलायें।

२६६–भगन्दर

फिटकड़ी भुनी, सुहागा भुना, नीला थोथा हरा समभाग लेकर सूक्ष्म पीसलें और शहद में मिलाकर लेई सी बनालें। फिर उसमें रुई या कपड़े की

बत्ती तर करके नासूर में रखें। क्षत साफ हो जाये तब बारूद २५ ग्राम निम्बोली का तैल २५ ग्राम में हल करके बत्ती द्वारा क्षत के अन्दर रखा करें। इससे कुछ ही दिन में आराम हो जायगा। पुराने से पुराने नासूर को भरने के लिए भी अकसीर है।

२६७–नासूर

फिटकड़ी को शहद में सूक्ष्म पीसकर रखें और उसमें बत्ती तर करके जख्म के अन्दर रखा करें और प्रातः सायं एक २ ग्राम भुनी फिटकड़ी जल के साथ खिलाया करें। इससे नासूर मिट जायगा।

२६८–पूरानी चोट

फिटकड़ी कच्ची और नोसादर समभाग लेकर सूक्ष्म पीसकर रखें और पीड़ा स्थान पर सींगी खिचवाकर उसके ऊपर यह दवा मलदें। दो तीन बार के मलने से पीड़ा बिलकुल दूर हो जायगी।

२६९–स्थूलता

शरीर का मोटा हो जाना भी अत्यन्त कष्टदायक रोग है। मोटापे को दूर करने के लिये निम्नलिखित योग बहुत ही लाभदायक है।

फिटकड़ी १०० ग्राम, संखिया १०० ग्राम। प्रथम फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर एक मिट्टी के कूजे में ५० ग्राम फिटकड़ी बिछाकर उस पर संखिया की डली रखें और उस डली पर शेष फिटकड़ी डालदें। फिर मुख को सम्पुट करके सुखालें। यद्‌किंचित भी छिद्र किसी स्थान पर न रहे फिर दो किलो उपलों की आंच देलें। शीतल होने पर जो कुछ भी निकले उसे सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा एक चावल से दो चावल तक पानी से खिलायें। यदि जलन प्रतीत हो तो अर्क गाजवां या अर्क वेदमुश्क पिलायें। एक सप्ताह सेवन करके सात दिन के लिए बन्द करदें। फिर सेवन करें। जब यह प्रतीत हो कि शरीर का वजन हल्का हो गया है, तब सेवन करना बन्द करदें।

२७०–प्रस्वेद की अधिकता

यदि किसी व्यक्ति को पसीना अधिक आता हो तो उसे उचित है कि पानी में फिटकड़ी घोलकर उससे स्नान किया करें। अकसीर है।

२७१–स्वित्रकुष्ठ

फिटकड़ी की डली को पानी में घिसकर प्रातः सायं दाग पर लेप किया करें और फिटकड़ी भुनी १ ग्राम प्रातःसायं पानी से खिलाया करें। इससे कुछ दिनों में दाग मिट जायगा।

२७२–अण्डकोष का ढलक जाना

फिटकड़ी भुनी एक एक ग्राम प्रातः सायं ताजे पानी से खिलायें और यदि मिल सके तो काले बिच्छु को तेल में जलाकर उस तेल को ऊपर लगायें, कुछ दिन में ही आराम हो जायगा।

२७३–बगल गन्ध

जिन लोगों के हाथ पांव या बगल में अधिक पसीना आता हो और उससे दुर्गन्ध आती हो तो पसीने वाले स्थान पर पानी लगाकर फिटकड़ी की डली को साबुन की भांति घिसें। फिर धो डालें। इससे पसीना आना बन्द हो जावेगा।

२७४–रक्त बन्द करना

यदि जख्म में से खून जारी हो रहा हो और किसी प्रकार बन्द होने में न आता हो या बवासीर के मस्सों से खून बह रहा हो तो ऐसी दशा में निम्न-लिखित योग बहते शोणित को तुरन्त रोक देता है।

माजूफल ५५ ग्राम कूटकर ६० ग्राम पानी में जोश दें। जब आधा जल शेष रहे तब उसको उतार कर कपड़े से छानलें और उस पानी में आठ ग्राम फिटकड़ी का चूर्ण घोलकर उसमें कपड़े की गद्दी तर करके जहां से रक्त बहता हो, वहां रखदें। जब खुश्क हो जावे तो और रखदें। आराम होगा।

२७५–खाद्य योग

जब अन्दर से रक्त जारी हो तो उसे बन्द करने के लिए यह मिश्रण अतीव उपयोगी है। हां यदि रोगी को तीव्र ज्वर हो रहा हो तो फिर न दें।

फिटकड़ी ४ रत्ती, अफीम आधी रत्ती दिन में दो बार दें।

महामारी–(प्लेग)

इस रोग से आबाल वृद्ध सभी परिचित हैं। कौन ऐसा घर है जिसमें इसने पंजा न मारा हो। यह बड़ा भयंकर रोग है इसके लिये फिटकड़ी बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

(२७६) प्रथम योग—यदि गिल्टी निकली हो तो फिटकड़ी भुनी दो दो ग्राम आयु और बलाबल देखकर न्यूनाधिक तीन तीन घंटा के अन्तर से गरम दूध के साथ देते रहें।

(२७७) द्वितीय योग—गिल्टी पर वाह्य रूप से अलसी का आटा और तेल की पुलटिस बनाकर टिकियां बनालें और गरम गरम पर फिटकड़ी

भुनी बुरक कर गरम गरम ही बांधदें, दिन में तीन बार ताजा पुलटिस बनाकर बांधें।

(२७८) तृतीय योग—यदि प्लेग में वमन के स्थान पर रक्त आ रहा हो तो फिटकड़ी भुनी १॥–१॥ ग्राम तीन तीन घंटे के अन्तर से पानी के साथ दें। प्लेग के रोगी के दस्तों को बन्द करने के लिए भी लाभदायक है।

२७९–आंख में चूने का छींटा पड़ने पर

यदि आंख में चूना (कलई) का छींटा पड़ जावे तो अत्यन्त कष्ट होता है। इसके लिये फिटकड़ी अगद है। फिटकड़ी को पानी में घोलकर आंखों में कुछ बूंदे डालने से आराम हो जाता है।

२८०–स्तम्भन

फिटकड़ी भुनी ४ रत्ती, बेरी के पत्तों की ठण्डाई के साथ एक घण्टा पूर्व खिलाने से अत्यन्त स्तम्भन होता है। किन्तु उस दिन नमक वाली कोई चीज न खायें। दूध पी सकते हैं।

२८१–जूयें पड़ना

फिटकड़ी को पानी में घोल करके सिर धोयें। इससे जूयें मर जाती हैं।

२८२–आग बुझाना

यदि फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर पानी में घोलकर अग्नि पर डाला जाय तो उस जल में आग बुझाने का गुण विशेष हो जाता है। मानो खतरे के समय काम आने वाली वस्तु है।

फिटकड़ी से बनने वाली

–भस्में–

फिटकड़ी में जगन्नियंता ने ऐसे गुण भर दिये हैं कि इससे धातु उपधातु सरलता पूर्वक भस्म हो जाती हैं। कुछेक प्रयोग देखिये।

२८३–ताम भस्म

फिटकड़ी सफेद ५ ग्राम, शुद्ध ताम्बे का पैसा ५ ग्राम, फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर ताम्र के आधी नीचे और आधी ऊपर देकर सराव सम्पुट करके ५ किलो उपलों की आग दे लें। इस प्रकार ४० आंच देने से बताशे की भांति फूली हुई भस्म तैयार होगी।

गुण—कुष्ट के लिए अतीव लाभकारी है, वाजीकरण, स्तम्भक, क्षुधा-वर्धक भी है।

मात्रा—१ चावल भर पान में रखकर खिलायें।

(२८४) द्वितीय विधि–शुद्ध ताम्रचूर्ण या टुकड़े ५० ग्राम लेकर उसके साथ फिटकड़ी ५० ग्राम मिलाकर स्राव सम्पुट करके ५ किलो उपलों की आग देलें। फिर निकालकर किसी मिट्टी के बर्तन में डालें और पानी डालकर रखें। फिटकड़ी घुल जायगी। अब पानी को निथार कर फेंकदें, फिर ताजा फिटकड़ी ५० ग्राम मिलाकर पूर्ववत आंच दें। तद्पश्चात पानी में डालकर पूर्ववत क्रिया करें। इसी प्रकार निर्वात स्थान में २१ आंच पूरी करदें और फिर पानी से धोकर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—दो चावल से ४ चावल तक मक्खन या मलाई में मिलाकर खिलायें।

गुण—वाजीकरण, श्वास रोग नाशक तथा कफज रोगों की निवृति में लाभदायक है। नेत्रों के लिए उत्तम सुरमा है।

नोट—जब फिटकड़ी पानी में घुल जावे तब पानी के नीचे बैठे हुए समस्त द्रव्य को ले लें।

(२८५) तृतीय योग—ताम्र चूर्ण को कुठाली में डालकर अग्नि पर लाल सुर्ख करें और फिटकड़ी सूक्ष्म पिसी हुई की चुटकी दे देकर भस्म बनालें और किसी लोहे की शलाका से चलाते रहें। जब अच्छी तरह भस्म बन जावे तब समभाग सिरस के बीज सूक्ष्म पीसकर मिलालें और फिर खूब पीसलें ताकि सुर्मे की भांति सूक्ष्म हो जावे, तब शीशी में सुरक्षित रखें। काले रंग की भस्म होगी जो नेत्र कण्डू, दृष्टिमान्द्य के लिये अत्युत्तम सुरमें का काम देगी।

२८६—नाग भस्म

यह भस्म भीतरी अंगों से आने वाले हर प्रकार के रक्त को बन्द करने के लिये अकसीर है।

१० ग्राम शुद्ध सीसा लेकर बड़ी सी लोहे की कड़छी में पिघलावें या लोहे के तवे पर गलावे, और १० ग्राम फिटकड़ी का चूर्ण लेकर चुटकी चुटकी डालते जावें और लोहे के दस्ते से घोटते जावें ताकि नाग (सीसे) की राख बन जावे। शीतल होने पर खरल करके टिकियां बनालें और दस किलो उपलों की आंच दें, भस्म तैयार है।

मात्रा—दो रत्ती बताशे में डालकर खिलायें और ऊपर वांसा पत्र और बीहदाना रात्रि भर पानी में भिगोये रखकर प्रातः छानकर पिलायें।

हर प्रकार के रक्त को बन्द करने के लिए चाहे खांसी के साथ आता हो या नक्सीर अथवा मासिक धर्म की अधिकता का हो, या बवासीर का हो, सबके लिए अकसीर है।

२८७-बंग-यशद-नाग भस्म

यह वही भस्म है, जिसका वर्णन प्रमेह के प्रकरण में किया गया है। बंग, यशद, नाग प्रत्येक ५०-५० ग्राम कढ़ाई में डालकर अग्नि पर रखें। जब पिघल जावें तब सूक्ष्म पिसी फिटकड़ी की चुटकी देते जावें और किसी लोहे की शलाका से हिलाते रहें। यहां तक कि तीनों की भस्म बन जावे। इसके बाद उसमें २० ग्राम फिटकड़ी मिलाकर सराव सम्पुट करके दो किलो उपलों की अग्नि दें ताकि भस्म सफेद रंग की बन जावे फिर चीनी के बर्तन में घोलकर रखदें और बाद में पानी निथार कर फैंक दें। इसी भांति दो तीन बार पानी से भस्म को धो डालें ताकि लवणत्व दूर हो जाय। फिर धूप में सुखाकर सूक्ष्म पीसकर कपड़े से छान लें और शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—चार चावल से दो ग्रेन तक मक्खन या मलाई में मिलाकर खिलायें। यह उच्च कोटि की त्रिधातु भस्म है।

गुण—प्रमेह, बहुमूत्र आदि रोगों की विशेष दवा है।

२८८–वर्किया हड़ताल भस्म

फिटकड़ी सफ़ैद ८५ ग्राम, गन्धक ६० ग्राम दोनों को प्याज के रस में खूब खरल करके वर्किया हड़ताल की १० ग्राम की डली उसमें लपेट कर पतले कूजे में बन्द करके कपड़ मिट्टी करदें और सवा किलो उपलों की अग्नि दें तथा शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—एक चावल से दो चावल तक बताशे में रखकर खिलायें। यह भस्म अत्यन्त वाजीकरण है तथा शीत रोगों के लिये अकसीर है। सरसाम के रोगी को इसकी नस्य देने से तुरन्त होश आ जाता है।

२८९–हड़ताल वर्किया भस्म नं० २

फिटकड़ी कच्ची ५० ग्राम सूक्ष्म पीसकर उसमें से आधी लोहे की कड़छी में बिछाकर उसके ऊपर हड़ताल वर्किया १० ग्राम की डली रख दें और शेष आधी फिटकड़ी डालकर कड़छी को दहकते हुए अंगारों पर रखदें। यदि कहीं से धुआं निकले तो उस स्थान पर फिटकड़ी की चुटकी और डालदें। जब फूलकर बैठ जावे तब उतारलें। हरताल के रंग की भस्म तैयार होगी।

मात्रा—चार चावल बताशा या मुनक्का में रखकर खिलायें। ज्वरों के अति उत्तम दवा है।

२९०–हड़ताल वर्किया भस्म नं० ३

हरताल वर्किया ३ ग्राम, फिटकड़ी ५० ग्राम पीसकर हरताल के ऊपर नीचे देकर सराव सम्पुट करके १ किलो उपलों के चूरे की अग्नि दें, भस्म तैयार है।

मात्रा—२ ग्रेन शहद मिलाकर चटाया करें। तइया, चौथीया ज्वरों की विशेष दवा है। बारी से पहले दें।

२९१–सिंगरफ भस्म

सिंगरफ रूमी १० ग्राम को पीसकर २० ग्राम फिटकड़ी के चूरण के मध्य में तवे पर रखकर नीचे नरम नरम आंच जलावें। जब एक पहलू फूल जावे तब दूसरा पहलू पलट दें। दोनों ओर पक जाने पर उतारकर सूक्ष्म पीसलें।

मात्रा—२ ग्रेन से ४ ग्रेन तक मक्खन में दिया करें। चोट लगने पर मोमयाई के समान गुण करती है।

२९२–सिंगरफ भस्म नं० ३

सिंगरफ रूमी १२ ग्राम को २५० ग्राम आक के दूध में खरल करके

टिकियां बनालें और खुश्क हो जाने पर १२ ग्राम लौंग, देवधारा में खरल करके सिंगरफ की टिकिया पर लेप करदें और फिर ७० ग्राम फिटकड़ी कूजे में उस टिकिया के ऊपर नीचे देकर मुख सम्पुट करके चार किलो उपलों की आंचदें। सफेद रंग की भस्म बन जायगी।

मात्रा—१ ग्रेन मक्खन में दिया करें। अत्यन्त बाजीकरण, नामर्द को मर्द बनाने वाली अकसीर है।

नोट—यदि भस्म लेखानुसार न बने तो फिर बनावें। इसकी क्रिया में तनिक सी भूल हो जाने से काम बिगड़ जाता है। किन्तु अभ्यास करते करते सब सरल हो जाता है। विशेषकर अग्नि का खास ख्याल रखना चाहिए। भस्म निर्वात स्थान में बनानी चाहिये।

२६३–सोमलखार (संखिया भस्म)

फिटकड़ी १०० ग्राम मकोय के हरे पत्ते १०० ग्राम दोनों को सूक्ष्म पीसकर लुगदी सी बनालें और उसमें १० ग्राम संखिया की डली रखकर सराव सम्पुट करके ५ किलो जंगली कण्डों की अग्नि दें और शीतल होने पर निकाल कर शीशी में रखें।

मात्रा—दो चावल से ४ चावल तक।

गुण—उपदंश के कारण यदि तालु में छिद्र हो गये हों तो भी इससे लाभ हो जाता है। गठिया (संधिवात) के लिए भी गुणकारी है। भस्म के ऊपर वाली फिटकड़ी को पृथक पीसकर रखें, यह खांसी, दमा को लाभकारी है।

मात्रा—८ ग्रेन पानी से दें।

(२६४) द्वितीय योग—सोमलखार १ ग्राम को सूक्ष्म पीसकर २५ ग्राम फिटकड़ी के सूक्ष्म चूर्ण के मध्य में तवे पर रखकर नीचे अग्नि जलायें। जब फिटकड़ी फूलकर बैठ जाये तो किसी चीज से दूसरी ओर पलट दें। जब दोनों तरफ से खुश्क हो जावे तब फिटकड़ी सहित सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखें।

मात्रा—२ ग्रेन, मक्खन या मलाई में दें। यह बवासीर रीही के लिये उत्तम है।

(२६५) तृतीय विधि—संखिया सफेद जो बहुत सफेद न हो १० ग्राम १०० ग्राम फिटकड़ी लाल के मध्य में रखकर एक मिट्टी के प्याले में सम्पुट करें और ४ किलो अरण्य कण्डों की अग्नि दें। खील हो जायगा। इसे भी फिटकड़ी सहित पीसकर रखें।

गुण—समस्त संक्रामक रोगों में विशेषकर प्लेग के लिये स्वास्थ्य रक्षा हेतु अत्युत्तम है। प्लेग के रोगी को एक रत्ती तीन दिन तक २५० ग्राम

मक्खन के साथ दें। अवश्य आराम होगा। यह दवा खांसी के लिए भी गुणकारी है।
मक्खन के साथ दें। अवश्य आराम होगा। यह दवा खाँसी के लिये भी गुण-कारी है।

२९६—सलाया सोमलखार

फिटकड़ी भुनी १० ग्राम, संखिया १० ग्राम दोनों को चार पहर खरल करके रखदें।

मात्रा--एक चावल मक्खन में खाने से शीघ्रपतन, स्वप्नदोष दूर होकर प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न होता है। वीर्य को पुष्ट करता है!

२९७—पारद गुटका

रसायनिक लोग पारद गुटिका को ढूंढते फिरते हैं। क्योंकि यदि किसी व्यक्ति को भस्म का दाबू आता हो, तो वह गुटिका को रजत का प्रतिनिधि सरलता से तैयार कर सकता है। लीजिए हम इसका योग भी बता देते हैं, जिससे आप पारद की गुटिका बना लिया करें, इससे आगे बढ़ना आपके साहस का काम है। हां इसका वैद्यक गुण हम वर्णन किये देते हैं। इसको दूध में पकाकर पीना बहुत बाजीकरण और पौष्टिक है और स्तम्भक भी काफी है।

शुद्ध पारद १२० ग्राम, चांदी भस्म पारानोश एक ग्राम मिलाकर नींबू के अर्क अथवा कोई खट्टी चीज मिलाकर खरल करें, पारा गाढा हो जायगा। फिर फिटकड़ी ३६०–३६० ग्राम सूक्ष्म पीसकर आधी कढाई में बिछादें और मध्य में उपरोक्त पारद रखकर शेष फिटकड़ी उसके ऊपर डालदें और उसके ऊपर मिट्टी का प्याला औंधा रखकर उस पर भारी पत्थर या लोहे का बट्टा रखदें। फिर नीचे अग्नि जलायें। जब मालूम हो कि फिटकड़ी पिघल चुकी होगी तो ऊपर से १॥ किलो पानी डालदें और नीचे आग जलाते रहें। जब पानी कम हो जाया करें और डाल दिया करें। फिर दातुन का बुरुश फिराकर देखें। यदि पारा दातुन के बुरुश से लग आवे तो पुख्ता हो गया समझें वरना फिर पकायें। इसी प्रकार समस्त पारद को दातुन के बुरुश से उठाकर धोलें और कपड़े में से छानलें। जो कच्चा होगा वह निकल जायगा और पुख्ता की गोली बनाकर तत्काल उसमें छिद्र करके धागे से पिरोलें और खुश्क होने पर दूध में उबाल कर दूध पियें। इससे बल बढ़ता है।

परिशिष्ट फिटकड़ी गुण विधान

कलाकौशल सम्बन्धी योग

फिटकड़ी के कुछेक हुनर उद्योग भी ऐसे हैं जिनसे सैंकड़ों रुपया माह-वार कमाया जा सकता है और अल्प पूंजी वाले व्यक्ति सरलपूर्वक अपना और अपने बाल बच्चों का उदर पोषण कर सकते हैं। प्रथम रंगाई के काम का वर्णन किया जाता है।

ऊनी वस्त्रों को रंग देना

ऊन के बुने वस्त्र और लोइयां रंगी हुई बड़ी सुन्दर प्रतीत होती हैं किन्तु साधारणतया रंगरेज ऊन को केवल नारंजी करना ही जानते हैं। किन्तु हरा या पीला पक्का रंग नहीं दे सकते और काले रंग को तो निश्चय ही बहुत कम लोग जानते हैं। लीजिए हम आपको हरे रंग का हुनर बता देते हैं। उस्ताद लोग इसे सरलता से बताकर नहीं देते।

२९८—हरा रंग रंगना

ऐसा गरम पानी जिसे हाथ सह सके ५०० ग्राम में फिटकड़ी पीसकर हल करदें और उसमें कपड़े को भिगोकर निचोड़ लें और फिर डलीदार हरा रंग ३५ ग्राम, पीला रंग ३ ग्राम पानी में मिलाकर जोश दें। जब खूब खौलने लगे तब कपड़ा डालदें और दस मिनिट तक पड़ा रहने दें। फिर अच्छी तरह उलट पुलट कर निकाल लें और निचोड़ दें। अत्योत्तम हरा रंग बानात जैसा निकलेगा।

२९९—लाल रंग

इसी प्रकार प्रथम ५०० ग्राम फिटकड़ी के पानी में कपड़ा भिगोकर प्याजी रंग डलीदार (जिसकी डलियां प्रत्यक्ष में हरी प्रतीत हुआ करती हैं) ४८ ग्राम के अन्दर उपरोक्त विधि से रंगें।

३००—नारंजी रंग

बादामी रंग ४८ ग्राम में उपरोक्त विधि से रंगलें। उच्चकोटी का रंग चढ़ेगा।

(३०१) द्वितीय विधि--कच्चा पीला रंग ३५ ग्राम, प्याजी रंग डलीदार १२ ग्राम को उबालकर तैयार करें और उपरोक्त विधि से रंगलें।

३०२--काला रंग

ऊन हमेशा कच्चे रंग में रंगी जाती है। पक्का रंग उस पर कुछ प्रभाव नहीं करता। इसलिए काला रंग्र रंगना सर्वं साधारण का काम नहीं। क्योंकि काला रंग कच्चा ही आता है। अतएव उस्तादों ने कई रंग मिश्रित करके उनको काला रंगने का नुस्खा निकाला है, जिससे कि अति सुन्दर रंग चढता है। हरा रंग डलीदार १५ ग्राम, बैंगनी रंग डलीदार १५ ग्राम, बादामी रंग १५ ग्राम तीनों को उपरोक्त विधि से फिटकड़ी के पानी में पका कर रंगे।

नोट--यह सब वजन १।। किलो ऊनी कपड़े के लिए है। यदि कपड़े का वजन न्यूनाधिक हो तो फिटकड़ी और रंगों के वजन में न्यूनाधिकता करें।

३०३--चमड़ा रंगना

यह भी एक अच्छा हुनर है और इससे अच्छी तरह अर्थोपार्जन किया जा सकता है। इससे इस पुस्तक का तो क्या कई पुस्तकों का मूल्य वसूल कर सकते हैं।

एक मृगान की रंगाई न्यूनातिन्यून १५) होती है। १ किलो बाजरे का आटा लेकर पानी मिलाकर पतली लेई सी पकावें। जब पक जावे तब फिटकड़ी ५०० ग्राम, नमक ५०० ग्राम खूब ही सूक्ष्म पीसकर डालें और खूब पकावें। शीतल होने पर काली मृगान (काले हिरण का चमड़ा) के भीतरी भाग (जिधर बाल नहीं होते) में लगावें और फिर इस प्रकार लपेटें कि बालों वाला भाग बाहर की ओर ही रहे। फिर इसको एक खुले बर्तन में रखकर ऊपर वजनदार पत्थर रखदें और प्रति दिन मसाला खूब मसल दिया करें। पांच छः दिन के पश्चात पत्थर या ईंट के टुकड़े से खूब मलें ताकि व्यर्थ का चर्म आदि उतर जावे। फिर उसी बर्तन में दो तीन रोज रखदें। तद्पश्चात पानी से धोकर धूप में अधसूखा सा करके उपरोक्त लेप करें और फिर धोबियों की भांति पत्थर पर फटकारें। खूब घुल जाने पर शुष्क करके देखें, यदि खूब कोमल और नरम हो जावे तो उत्तम वरना फिटकड़ी १२५ ग्राम, नमक १२५ ग्राम को पानी में मिलाकर दो तीन दिन तक भिगो रखें। मृगान मखमल की भांति नरम और मलमल की भांति सफेद हो जावेगी। यदि रंगना हो तो हल्दी और नासपाल को पानी में उबालकर रंग दें। इससे मन मोहक पीला रंग हो जावेगा।

३०४--हरा रंग देता

हरा रंग ५० ग्राम, फिटकड़ी १० ग्राम, २ किलो पानी में जोश देकर

आवश्यकतानुसार जंगार मिलाकर चमड़े को उसमें ३ दिन तक भिगो रखें। चमड़ा हरे रंग का हो जायगा।

३०५--नारंजी रंग

टेसू के फूलों को पानी में उबाल कर तथा लाल फिटकड़ी मिलाकर नारंजी रंग देलो।

सींगों को रंगना

सींगों को रंग कर उनसे अनेक वस्तुयें बनाई जाती हैं। यथा चाकूओं के दस्ते, कंघियां आदि। सारांश इनसे और भी अनेक वस्तुयें बनाई जा सकती हैं। विधि यह है--

३०६--नीला रंग देना

सींग को पहले फिटकड़ी के पानी में जोश देलो और फिर नील को पानी में घोलकर उसमें डालदो तथा तनिक सा उबालकर जब इच्छानुसार रंग चढ जावे तब उतार लो।

३०७--पीला रंग देना

पहले फिटकड़ी के पानी में सींग को जोश देलो और फिर हल्दी को पानी में मिलाकर उसमें २८ घण्टे सींग को भिगो रखें, अत्यन्त सुन्दर रंग चढेगा।

३०८--सिल्वरिंग पौडर

इससे एक मिनट में रूपहरी गिल्ट हो जाता है, यह पौडर विदेशों से आकर अत्यधिक विकता है। इसके लगाने की विधि निम्नलिखित है।

नमक, फिटकड़ी, नौशादर, कलमीशोरा, प्रत्येक ५—५ ग्राम लेकर सूक्ष्म पीसलें और इन्हें तामचीनी के प्याले में डालकर अग्नि पर रखें तथा चांदी के वर्क नग १० भी उस पर रखदें, थोड़ी देर के बाद गुलाबी रंग का पौडर बन जावेगा। ताम्बे या पीतल की वस्तु पर खटाई लगाकर इस पौडर को मलने से रूपहरी गिल्ट हो जाता है।

३०९--लोहे पर सोने का पानी

फिटकड़ी १२० ग्राम, शोरा १०० ग्राम, नमक लाहौरी १०० ग्राम तीनों चीजों को पानी में घोलदें और फिर उसमें १० ग्राम सोने के वर्क खूब

मिलाकर २४ घण्टे रख छोड़ो। तद्पश्चात् इसको अग्नि पर रखकर खुश्क करलो। चूर्ण बन जावेगा। इसमें से आवश्यकतानुसार चूर्ण लेकर इतनी रेक्टीफाइड स्प्रिट में मिलायें कि शहद की भांति गाढा मिश्रण बन जावे। इस मिश्रण को ब्रुश द्वारा लोहे की स्वच्छ चीजों पर लगाने से सुनहरी रंग हो जाता है।

३१०–गिल्ट का धब्बा मिटाना

फिटकड़ी को पानी में डालकर उबालें फिर उसमें धब्बे वाली वस्तु को डालकर कुछ देर वाद निकालकर साफ करदें।

३११–स्वर्ण का दोष दूर करना

सोना—सीसा के मिलने से फोटक और गंधक की गंध से कठोर हो जाता है। इस दोष को दूर करने के लिए उसको पिघलाकर फिटकड़ी की चुटकी देते रहें ठीक हो जायगा।

३१२–चीनी के बर्तन जोड़ने का मसाला

चपड़ा लाख ४० ग्राम, फिटकड़ी ४० ग्राम, दोनों को आग पर गरम करके एक जान करलें और टूटे हुए स्थान पर गरम गरम लगाकर जोड़दें।

३१३–फिटकड़ी का खिजाब

नीलाथोथा, कलमीशोरा प्रत्येक ५०—८० ग्राम, कूप जल और फिटकड़ी १५—१५ग्राम का तेजाब खैंचलें और इस तेजाब में से १० ग्राम लेकर उसमें एक ग्राम चांदी का चूर्ण, गुलाब जल दो ग्राम बारह दिन रखकर खूब हल करें और बालों पर लगावें। बाल काले भंवर हो जायेंगे।

३१४–खटमल भागा पौडर

फिटकड़ी को सूक्ष्म पीसकर सुन्दर पैकट बनालें और वम्बई कलकत्ता आदि वड़े नगरों में जहां खटमल अधिक होते हैं ५) रु० में २०० ग्राम तक का पैक्ट बेचा जा सकता है। इस पौडर को चूना (कली) के साथ घोलकर मकानों में सफेदी करने से वहां खटमल कदापि नहीं रह सकते।

इन्द्रजाल

३१५–गुप्त लेख

फिटकरी को सूक्ष्म पीसकर पानी में घोलें और साफ नई कलम से

कोरे कागज पर लिखें। सूखने पर बिल्कुल दिखाई न देगा। किन्तु अग्नि पर सेकने से लालिमायुक्त अक्षर प्रगट होंगे।

३१६—कपड़ा न जले

फिटकरी सफेद, मुर्गी का अण्डा और नमक सबको मिलाकर कपड़े पर लेप करदें और फिर उस पर सुलगता हुआ अंगारा रख दें। कपड़ा न जलेगा।

३१७—ज्वाला निकले पर कपड़ा न जले

यह आश्चर्यजनक खेल है। लोग इसे बीस रुपये फीस लेकर भी नहीं बताते, किन्तु हम आपको मुफ्त भेंट कर रहे हैं।

स्प्रिट आफ वायन १५ ग्राम को शीशी में बन्द रखें और उसमें एक ग्राम फिटकरी सूक्ष्म पिसी हुई मिलाकर तत्काल कार्क लगादें (मुंह खुला रहने से स्प्रिट उड़ जाती है) जब खेल दिखाना हो तब उसमें कपड़ा तर करके आग लगादें। ज्वाला निकलेगी पर कपड़ा न जलेगा। शोले बुझने पर हाथ मारकर बुझादें।

नोट--स्प्रिट अच्छी न हुई तो हाथ जल जायगा।

३१८--पक्षियों के पर रंगना

नमक के तीजाब में फिटकड़ी हल करके उससे अंडों पर जो चाहें लिखदें या फूल आदि बना दें। जब अण्डे में से बच्चा पैदा होगा तो उस पर वही चीज चित्रित होगी।

गुण विधान सीरीज

छोटे से छोटे ग्राम में भी गुण विधान सीरीज की पुस्तकों के योगों की चीजें मिल जाती हैं, जिनसे हर प्रकार के रोगों को दूर किया जा सकता है। विशेष विवरण के लिये सूची पत्र मगाकर पढ़ें।

नाम पुस्तक	मूल्य
फिटकड़ी गुण विधान	३-००
आम गुण विधान	२-००
नीम गुण विधान	२-००
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	१-००
पलांडु गुण विधान	१-००
घृत गुण विधान	१-००
इन्द्रायण गुण विधान	१-००
संतरा गुण विधान	०-५०
अर्क (मदार) गुण विधान	३-००
मधु (शहद) गुण विधान	३-५०
घृतकुमारी गुण विधान	१-५०
नींबू गुण विधान	१-००
धतूरा गुण विधान	१-००
बबूल (कीकर) गुण विधान	१-००
अरिष्ट (रीठा) गुण विधान	१-००
पीपल गुण विधान	१-००
नमक गुण विधान	०-५०

लेखक की सुप्रसिद्ध पुस्तकें

अनुभूत योग चिन्तामणी	७-००
अनुभूत योग प्रकाश	१०-००
सिद्ध रसायन	१०-००
भारतीय जड़ी बूटी	८-००
फलों के चमत्कार	६-००

रसायन फार्मेसी, ३—दरियागंज,

देहली-११०००६